ईश्वर में हमारा विश्वास

राष्ट्रीय नवीन मेल

सत्यमेव जयते

डालटनगंज (मेदिनीनगर) एवं रांची से एक साथ प्रकाशित

www.rastriyanaveenmail.com • डालटनगंज • आषाढ़ शुक्ल पक्ष 15 • विक्रम संवत 2080 • सोमवार, 03 जुलाई 2023 • वर्ष-29 • अंक-257 • पृष्ठ-12 • मूल्य ₹ 2.00

'रॉकी-
रानी की प्रेम कहानी'
में दिखेंगी...
पेज 10 पर

NEWS इन ब्रीफ

सुखदेवनगर इलाके में एक युवक की हत्या, पत्थर से कुचला

रांची। रांची के सुखदेव नगर थाना क्षेत्र में एक युवक की पत्थर से कूच-कूच कर हत्या कर दी गई है। मृतक की पहचान अब तक नहीं हो पाई है। मामले की जानकारी मिलने के बाद सुखदेव नगर पुलिस हत्याकांड की तफ्तीश में जुटी हुई है।

रांची के बिरसा मुंडा एयरपोर्ट पर होगी पेपरलेस इंट्री

रांची। देश के कई एयरपोर्ट की तर्ज पर रांची के बिरसा मुंडा एयरपोर्ट पर भी फेशियल रिकग्निशन तकनीक (एफआरटी) आधारित नयी प्रणाली लगेगी। इसमें यात्रियों की पहचान उनके चेहरे से होगी और वे डिजि-यात्रा मोबाइल ऐप के जरिये हवाई अड्डा पर पेपरलेस इंट्री कर सकेंगे। एफआरीट तकनीक से सुरक्षा जांच और अन्य चेक प्वाइंट पर यात्रियों का यात्रा संबंधी डाटा खदु-ब-खुद प्रोसेस हो जायेगा।

सांसद संजय सेठ के फेसबुक का फर्जी एकाउंट बना साइबर अपराधी कर रहे ठगी

रांची। रांची सांसद संजय सेठ के फेसबुक पर सांसद के फर्जी अकाउंट बनाकर पैसे की मांग की जा रही है। फर्जी अकाउंट बनाकर अपराधी 20 हजार की मांग कर रहा है और बता रहा है कि मेरे अकाउंट में कुछ प्रॉब्लम आ गया है, जिसकी वजह से पैसे का ट्रांजैक्शन नहीं हो पा रहा है। एक से दो दिन में आपको पैसे रिफंड कर दिया जाएगा। इस संबंध में संसद संजय सेठ ने ट्विटर और फेसबुक के जरिए लोगों से अपील की है कि यह फर्जी अकाउंट है, पैसे के लेनदेन ना करें। मामले की जानकारी प्रशासन को दे दी गई है।

कोडरमाः वज्रपात से दो बच्चों की मौत, चार गंभीर

कोडरमा। सतगावां थाना क्षेत्र के मीरगंज पंचायत के झरगांव में रविवार की दोपहर करीब तीन बजे बारिश के पूर्व हुए वज्रपात से दो बच्चों की मौत हो गयी। घटना में एक बच्चे की स्थिति गंभीर है, वहीं दूसरी जगह हुए वज्रपात में भी एक बच्चा और दो महिलाएं गम्भीर रूप से घायल हैं। मृतक की पहचान थाली थाना क्षेत्र के बुधवारा गांव निवासी फंटूश भुइयां की आठ वर्षीय पुत्री ऋतु कुमारी और मीरगंज पंचायत के झरगांव निवासी कुलेश्वर भुइयां के पांच वर्षीय पुत्र बालवीर कुमार के रूप में हुई है। गंभीर रूप से घायल बच्चे की पहचान थाली थाना क्षेत्र के बुधवारा गांव निवासी फंटूश भुइयां के चार वर्षीय पुत्र सितम कुमार के रूप में हुई है। मृतका ऋतु कुमारी और गंभीर रूप से घायल सितम कुमार सहोदर भाई-बहन है, जबकि मृतक बालवीर कुमार ममेरा फुफेरा भाई है। स्थानीय लोगों ने बताया सभी बच्चे अन्य दिनों की भांति घर के बाहर खेल रहे थे। खेलने के दौरान यह घटना घटी। बारिश के पूर्व हुई वज्रपात की चपेट में आकर एक बच्चे की मौत हो गई। वहीं दूसरे की इलाज के लिए ले जाने के क्रम में रास्ते में हो गई। परिजन वज्रपात से घायल बच्चों को प्राथमिक उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने ऋतु कुमारी और बालवीर कुमार को मृत घोषित कर दिया और गंभीर रूप से घायल सितम कुमार का प्राथमिक उपचार किया गया। घटना की सूचना पाकर बीडीओ बैद्यनाथ उरांव और सतगावां थाना प्रभारी आनंद कुमार साह सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचे और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

देवघर में विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला का उद्घाटन आज, तैयारियां पूरी

नवीन मेल संवाददाता

रांची। विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला का उद्घाटन समारोह सोमवार को देवघर में झारखंड प्रवेश द्वार दुम्मा में होगा और चार जुलाई से सावन शुरू होगा। मेले के उद्घाटन के लिए मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को आमंत्रित किया गया है। श्रावणी मेले की सारी तैयारी पूरी की जा चुकी है। पूरे देवघर को सजाया गया है। मलमास के कारण इस बार दो महीने तक के लिए व्यवस्था की गयी है। दुम्मा से खिजुरिया तक आठ किलोमीटर कांवरिया पथ पर पहली बार गंगा की मिट्टी बिछायी गयी है। कांवरिया पथ पर 10 हजार क्षमता वाले आध्यात्मिक भवन में कांवरियों को सस्ते दर पर भोजन मिलेगा। कांवरियों की कतार लगाने को लेकर रूट लाइन में वाटर प्रूफ पंडाल लगाये गये हैं।

प्रशासन ने मेले में भक्तों की सुविधा बढ़ाने व भीड़ नियंत्रण के लिए कई नयी व्यवस्थाएं की हैं, इसमें पहली बार डिजिटल मिस्ट कूलिंग सिस्टम, शीघ्रदर्शनम कतार और व्यवस्था में बदलाव शामिल हैं। अब शीघ्रदर्शनम कूपन के लिए पुरोहितों द्वारा बार-बार फॉर्म भरने की झंझट खत्म कर दी गयी है, पुरोहित का नाम, पता, संपर्क नंबर और विशेष कोड की इंट्री हुई है, जिससे तुरंत कूपन मिलेगा। हालांकि, रविवार और सोमवार को शीघ्रदर्शनम की व्यवस्था बंद रहेगी। मेले के दौरान शीघ्रदर्शनम कूपन की दर 500 रुपये प्रति कूपन रखी गयी है। दौरान अरघा से जलार्पण की व्यवस्था रहेगी। स्पर्श पूजा बंद रहेगी। साथ ही वीआइपी पूजा भी बंद रहेगी। बीमार, बुजुर्ग व भीड़ में बचने वाले भक्तों के लिए बाह्य जलार्पण की भी व्यवस्था रहेगी। श्रावणी मेला के लिए सुरक्षा-व्यवस्था कड़ी की गयी है। पूरे मेला क्षेत्र में 21 अस्थायी व 11 ट्रैफिक ओपी बनाये गये हैं। इंटीग्रेटेड मेला कंट्रोल रूम में पहली बार कॉमन एनाउंसमेंट सिस्टम लगाया गया है। एक बार सूचना प्रसारित होगी, तो वह 20 किलोमीटर के मेला क्षेत्र में सुनायी देगी। पहली बार टू वे ऑडियो कैमरा सिस्टम लगाया जा रहा है।कंट्रोल रूम में बैठे अधिकारी जब कोई कॉमन सूचना देना चाहेंगे, तो वह कंट्रोल रूम से संभव होगा। पूरे मेला क्षेत्र में कड़ी-सुरक्षा व्यवस्था रहेगी। 726 पुलिस पदाधिकारी सहित मेला में 8700 पुलिस कर्मी तैनात किये गये हैं। कतार में लगने वाले कांवरियों को अगर स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होगी, तो उनके लिए प्रशासन ने इसीजी की व्यवस्था की है। प्रशासन ने नेहरू पार्क, क्यू कॉम्प्लेक्स व बाबा मंदिर ट्रामा सेंटर में डिजिटल इसीजी मशीन रहेगी और जरूरत पड़ने पर इसीजी करायी जायेगी। इसीजी की रिपोर्ट ड्यूटी पर तैनात डॉक्टर के मोबाइल में आ जायेगी, उसके बाद डॉक्टर की सलाह पर इलाज की व्यवस्था होगी। कतार में उमस भरी गर्मी से बचाव के लिए नेहरू पार्क से लेकर मंदिर के संस्कार मंडप तक मिस्ट कूलिंग सिस्टम की व्यवस्था रहेगी। इससे पानी का फव्वारा नहीं, बल्कि फॉग निकलेगी, जो पूरे माहौल को ठंडा कर देगा। इस संबंध में संथाल परगना आयुक्त लालचन्द डाडेल ने बताया कि राजकीय श्रावणी मेला में श्रद्धालुओं को बेहतर से बेहतर सुविधा और सुरक्षा के लिए पुख्ता व्यवस्था की गई।

टेरर फंडिंग से जुड़े केस में मनी लाउंड्रिंग के पहलुओं पर जांच

पीएलएफआई सुप्रीमो दिनेश गोप से जेल में ईडी करेगी पूछताछ

रांची, मुख्य संवाददाता। पीएलएफआई सुप्रीमो दिनेश गोप से ईडी सोमवार को जेल में पूछताछ करेगी। पीएलएफआई संगठन के टेरर फंडिंग से वसूली गई राशि की मनी लाउंड्रिंग व शेल कंपनियों के जरिए निवेश की जांच को लेकर झारखंड पुलिस व एनआईए में दर्ज केस में ईडी जांच कर रही है। ईडी ने पीएमएलए केस की धाराओं के तहत अलग अलग प्राथमिकियों को संलग्न करते हुई ईसीआईआर दर्ज की है। ईडी के रांची जोनल आफिस ने पीएमएलए कोर्ट में इस ईसीआईआर दर्ज करने के बाद कोर्ट से पूछताछ की इजाजत मांगी थी। इजाजत मिलने के बाद सोमवार को इस संबंध में पूछताछ होगी।

किन किन मामलों में जांच के दायरे में है दिनेश गोप की भूमिका : नवंबर 2016 में पीएलएफआई सुप्रीमो के लेवी के पैसों को नोटबंदी के बाद बैंक में जमा कराया जा रहा था।तब पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार किया था। इस मामले में बाद में एनआईए ने बेड़ो थाने में दर्ज केस को टेकओवर किया था। जांच के दौरान यह बात सामने आयी थी कि दिनेश गोप ने अपने करीबी सुमंत कुमार के जरिए शेल कंपनियों में निवेश किया था। इन शेल कंपनियों में दिनेश गोप की दोनों पत्नियां भी निदेशक थीं। शेल कंपनियों के जरिए लेवी के पैसों के निवेश के पहलुओं पर अब ईडी जांच करेगी।

निवेश कुमार ने ठगे थे आठ करोड़ : धुर्वा निवासी निवेश कुमार नाम के जालसाज ने भी दिनेश गोप से आठ करोड़ की ठगी की थी। हथियार व कारतूस की खरीद के नाम पर निवेश कुमार ने ये पैसे दिनेश गोप से ठगे थे। दिनेश गोप की गिरफ्तारी के बाद एनआईए ने निवेश के यहां भी दबिश दी थी, लेकिन वह फरार हो गया था। इस केस को भी ईडी ने टेकओवर किया है। धुर्वा थाने में निवेश कुमार पर दर्ज केस में दिनेश गोप से ईडी पूछताछ करेगी।

गढ़वा में पीएलएफआई के दो उग्रवादी गिरफ्तार

गढ़वा। पुलिस ने भौवराहा जंगल से पीएलएफआई के दो उग्रवादियों को गिरफ्तार किया है। एक उग्रवादी फरार होने में सफल रहा। उग्रवादियों की निशानदेही पर दो देशी राइफल, कट्टा, पिठू बैग, पीएलएफआई का पर्चा और वर्दी सहित दैनिक उपयोग के समान बरामद किये गये हैं। गिरफ्तार उग्रवादियों में पलामू जिले के चैनपुर थाना क्षेत्र के करसो निवासी परदेशी यादव उर्फ प्रदीप यादव और गढ़वा जिला के डंडा थाना क्षेत्र स्थित भिखही निवासी सीताराम चौधरी शामिल हैं। फरार उग्रवादी की पहचान कमलेश यादव के रूप में की गई है, जिसकी तलाश में पुलिस छापेमारी कर रही है। बताया जाता है कि पिछले कुछ समय से लगातार सूचना मिल रही थी कि इलाके में पीएलएफआई उग्रवादी संगठन के नाम पर परदेशी यादव एवं सहयोगी द्वारा विकास कार्य को बाधा पहुंचाने एवं ठेकेदार व जनप्रतिनिधि से हथियार का भय दिखाकर लेवी मांगने की कोशिश हो रही है। गढ़वा एसपी अंजनी कुमार झा के निर्देश पर एसडीपीओ के नेतृत्व में अभियान चलाया गया। इसी क्रम में सिंजो गांव स्थित भौवराहा जंगल से उग्रवादियों को पकड़ा गया। पलामू जिले के चैनपुर थाना क्षेत्र के करसो निवासी परदेशी यादव उर्फ प्रदीप यादव और गढ़वा जिला के डंडा थाना क्षेत्र स्थित भिखही निवासी सीताराम चौधरी पूर्व में जेजेएमपी नामक उग्रवादी संगठन का सदस्य रहा है। 2018 में जमानत मिलने और गढ़वा जेल से छूटने के बाद दोनों पीएलएफआई से जुड़ गया। इसके बाद इलाके में दहशत फैलाते हुए चिनिया, रंका, रमकण्डा, चैनपुर इलाके में लेवी वसूली के लिये दहशत फैलाने का काम किया जा रहा था।

माओवादी अरविंद मुखिया को झारखंड पुलिस लेगी रिमांड पर

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। झारखंड पुलिस टॉप माओवादी अरविंद भुइयां उर्फ अरविंद मुखिया को रिमांड पर लेगी। दरअसल बिहार के सुरक्षाबलों ने कुछ दिनों पहले सीमावर्ती क्षेत्र से अरविंद भुइयां उर्फ अरविंद मुखिया को गिरफ्तार किया था। अरविंद मुखिया बिहार के गया के सलैया थाना क्षेत्र के विराज गांव का रहने वाला है। झारखंड की सरकार ने अरविंद पर 10 लाख रुपये का इनाम रखा था, जबकि बिहार की सरकार ने 50 हजार रुपये का इनाम रखा था। पलामू एसपी चंदन कुमार सिन्हा ने बताया कि जल्दी अरविंद भुइयां उर्फ अरविंद मुखिया को रिमांड पर लिया जाएगा। इसके लिए प्रक्रिया शुरू की गई है। अरविंद पर पलामू में हरिहरगंज, नौडीहा बाजार, छतरपुर, मनातू, पांकी, पिपराटांड़, पिपरा और नावाजयपुर के इलाके में एफआईआर दर्ज हैं। जबकि चतरा और लातेहार के इलाके में भी अरविंद पर एफआईआर दर्ज हैं। अरविंद मुखिया मांओवादियों का जोनल कमांडर था, उस पर माओवादियो के कौलेश्वरी जोन की जिम्मेवारी थी। कौलेश्वरी जोन में पलामू का नौडीहा बाजार, छतरपुर, मनातू जबकि मनातू का प्रतापपुर, कुन्दा और गया का इमामगंज, डुमरिया और सलैया का इलाका आता है। दरअसल, बिहार के सुरक्षाबलों को सूचना मिली थी कि अरविंद विराज के इलाके में किसी घटना को अंजाम देने के लिए आया हुआ है। इसी सूचना के आलोक में बिहार के कोबरा टीम ने छापेमारी कर अरविंद और उसके एक सहयोगी को गिरफ्तार किया था। अरविंद पर झारखंड और बिहार में 100 से अधिक हमले को अंजाम देने का आरोप है। पलामू में अरविंद के खिलाफ 40 से भी अधिक एफआईआर दर्ज हैं। सभी मामलों में पुलिस अरविंद को रिमांड पर लेगी और पूछताछ करेगी। अरविंद के पकड़े जाने के बाद से पलामू पुलिस के कई मुकदमों का अनुसंधान पूरा हो जाएगा।

पतरातू के तत्कालीन सीओ अजय तिर्की पर होगी विभागीय कार्रवाई

रांची। पतरातू के अंचल अधिकारी के पद पर रहे अजय कुमार तिर्की पर विभागीय कार्रवाई होगी। राज्य सरकार ने उन पर लगे एक दर्जन से अधिक आरोपों की जांच के लिए यह फैसला किया है। रिटायर आईएएस अधिकारी अरविन्द कुमार को जांच अधिकारी नियुक्त किया गया है। उपायुक्त रामगढ़ की अनुशंसा पर राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग ने जांच करायी थी। प्रथम दृष्टया आरोप प्रमाणित पाये जाने के बाद सरकार ने विभागीय कार्रवाई करने का आदेश दिया है। इस संबंध में कार्मिक विभाग ने आदेश जारी कर दिया है। उल्लेखनीय है कि झारखंड प्रशासनिक सेवा के अधिकारी अजय कुमार तिर्की पर पतरातू में अंचल अधिकारी के पद पर रहते हुए लगे आरोपों में ऑनलाइन दाखिल-खारिज लंबित रखने, जिला स्तरीय बैठक से अनुपस्थित रहने, अनियमित जमाबंदी को सुयोग्य श्रेणी के भूमिहीन रैयतों के साथ नियमितिकरण के लिए प्रस्ताव उपलब्ध ।

सियासत

महाराष्ट्र में बड़ा सियासी फेरबदल

शिंदे सरकार में डिप्टी सीएम बने अजीत पवार

मुंबई। महाराष्ट्र की राजनीति में रविवार को शरद पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) टूटने के साथ ही अचानक बड़ा उलटफेर हो गया। एनसीपी नेता अजीत पवार ने एक बैठक बुलाकर शिंदे सरकार में शामिल होने का फैसला लिया और अपने समर्थक विधायकों के साथ राजभवन पहुंच गए। आनन-फानन में शपथ ग्रहण आयोजित करके अजीत पवार को उपमुख्यमंत्री समेत अन्य 8 एनसीपी नेताओं को मंत्री पद की शपथ दिला दी गई।

एनसीपी नेता अजीत पवार ने दावा किया है कि पार्टी के 36 विधायकों ने शिंदे सरकार को समर्थन दिया है। राजभवन में सादे समारोह में राज्यपाल रमेश बैस ने राकांपा नेता अजीत पवार को उपमुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई। इसके अलावा वरिष्ठ राकांपा नेता छगन भुजबल, दिलीप वलसे पाटिल, हसन मुश्रीफ, धनंजय मुंडे, धर्मराव बाबा अत्राम, अदिति तटकरे, संजय बंसोड़े और अनिल पाटिल को ने मंत्री पद की शपथ ली है। शपथ ग्रहण समारोह में मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले, राकांपा के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष प्रफुल्ल पटेल उपस्थित थे।

राकांपा नेता अजीत पवार ने आज सुबह अपने शासकीय बंगले देवगिरी पर समर्थक विधायकों की बैठक बुलाई। इस बैठक में दिलीप वलसे पाटिल, हसन मुश्रीफ, छगन भुजबल, किरण लहमाटे, नीलेश लंका, धनंजय मुंडे, रामराजे निंबालकर, दौलत दरोदा, मकरंद पाटिल, एनुल बेनके, सुनील टिंगरे, अमोल मिटकारी, अदिति तटकरे, शेखर निकम, निलय नाइक,

अशोक पवार, अनिल पाटिल, सरोज अहिरे उपस्थित थे। बैठक के बाद अजीत पवार अपने समर्थक विधायकों सहित राजभवन पहुंचे और विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष पद से इस्तीफा दिया। इसके बाद अजीत पवार ने राज्यपाल को अपने 36 समर्थक विधायकों की सूची राज्यपाल को सौंपी। इसके बाद राजभवन में स्थित सादे समारोह में राज्यपाल रमेश बैस ने राकांपा के 9 विधायकों को मंत्री पद की शपथ दिलाई।

अजीत पवार ने आज पिछले साढ़े तीन साल में तीसरी बार उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली है। अजीत पवार तथा अन्य राकांपा नेताओं के शपथ ग्रहण को शरद पवार ने अमान्य किया है। एनसीपी प्रमुख पवार ने कहा कि मुझे ठीक से पता नहीं है कि अजीत पवार ने यह बैठक क्यों बुलाई थी, लेकिन उनके पास बैठक बुलाने का अधिकार है। शरद पवार ने कहा कि जो लोग गए हैं, उनमें से 80 फीसदी विधायक वापस राकांपा में लौट आएंगे। इसलिए कयास लगाया जा रहा है कि राकांपा में इन सभी विधायकों पर पार्टी के अंतर्गत कार्रवाई की जा सकती है।

महाराष्ट्र के सीएम एकनाथ शिंदे का कहना है कि अब हमारे पास 1 मुख्यमंत्री और 2 उपमुख्यमंत्री हैं। डबल इंजन सरकार अब ट्रिपल इंजन बन गई है। महाराष्ट्र के विकास के लिए मैं अजीत पवार और उनके नेताओं का स्वागत करता हूं। अजीत पवार का अनुभव महाराष्ट्र को मजबूत करने में मदद करेगा। अजीत पवार ने राज्य के विकास में सरकार का साथ दिया है। इससे राज्य का विकास अब बुलेट ट्रेन की गति से होगा। उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि राज्य में एक अलग तरह की विकास की राजनीति चल रही है। विकास के नाम पर अजीत पवार हमारे साथ आए हैं, इससे राज्य का विकास तेज गति से होगा।

NEWS इन ब्रीफ

वनवासी कल्याण केंद्र की जिला ईकाई का पुनर्गठन

मेदिनीनगर। वनवासी कल्याण केंद्र पलामू इकाई की बैठक में पुराने कमेटी को भंग करते हुए नई कमेटी का पुनर्गठन किया गया। रविवार को राजाभाऊ स्मृति परिसर में जिला कमेटी के पुनर्गठन के लिए आयोजित बैठक की अध्यक्षता अधिवक्ता बलराम तिवारी ने की। प्रांत प्रतिनिधि राजेंद्र बड़ाईक की देखरेख में सत्र 2023 -25 के लिए 13 सदस्यीय जिला कमेटी का पुनर्गठन किया गया। बैठक में सर्वसम्मति से अध्यक्ष बैजनाथ सिंह, उपाध्यक्ष अमलेश्वर दुबे, बलराम उरांव, श्यामलाल उरांव, सचिव अश्विनी कुमार मिश्रा, सह सचिव राजेश सिन्हा, अवध कुमार यादव, कोषाध्यक्ष सुरेंद्र गोस्वामी के अलावे कार्यकारिणी सदस्य के रूप में बलराम तिवारी, बिंदेश्वर उरांव, धृति देवी और विकास को मनोनीत किया गया। प्रमंडलीय श्रद्धा जागरण प्रमुख रामजी उराव ने कल्याण आश्रम के विकास और इतिहास पर प्रकाश डाला। जिला संगठन मंत्री अंबिका सिंह ने पलामू जिले में संचालित प्रकल्पों जानकारी दी। बैठक में रामानंद यादव, अनिल कुमार पाठक, नगर समिति अध्यक्ष मदन मोहन पांडेय, संच प्रमुख देवेंद्र सिंह, हिमांशु सिन्हा समेत कई कार्यकर्ता उपस्थित थे।

समाज सेवी पप्पू साहनी नहीं रहे

मेदिनीनगर। जिले के समाजसेवी विनोद कुमार साहनी उर्फ पप्पू साहनी का निधन हो गया। रेड़मा चौक का गौरव काली मंदिर इन्हीं की देन है। इनकी पहचान सिर्फ पलामू जिला तक ही नहीं रही बल्कि योग गुरु कहे जाने वाले स्वामी बाबा रामदेव महाराज तक है। जब कोई पलामू प्रमंडल या आसपास के जिलों में पतंजलि का नाम तक नहीं जानता था उस वक्त पप्पू साहनी ने पतंजलि का झंडा गाड़ने का काम किया। पतंजलि संगठन को पलामू जिला ही नहीं बल्कि पूरे प्रमंडल और आसपास के जिलों में आर्थिक शारीरिक और मानसिक सहयोग देकर इन्होंने संगठन को मजबूती देने का काम किया। पतंजलि के राजीव शरण ने एवं अन्य पतंजलि परिवार से जुड़े लोगों ने बताया कि वर्ष 2006 में जब पतंजलि योग समिति पलामू के संगठन सेवा के कार्य से पप्पु साहनी जुड़े। जब केंद्रीय अधिकारियों का आगमन जिले में होता तो संगठन पर पड़ने वाले आर्थिक बोझ को बहुत हद तक उनके द्वारा कम किया जाता रहा है । संगठन उनके सहयोग को सदा याद रखेगा। वह लगातार बीमारियों से जूझ रहे थे। इनका इलाज पतंजलि में किया गया। लेकिन उन्हें बचाया नहीं जा सका।

बेरोजगार संघर्ष मोर्चा की बैठक संपन्न

मेदिनीनगर। बेरोजगार संघर्ष मोर्चा कि बैठक जिला कार्यालय में हुई। बैठक के अध्यक्षता मोर्चा अध्यक्ष उदय राम ने कि। बैठक में कौन्सिलिंग में सफल अभ्यर्थियों के चतुर्थवर्गीय पदों पर नियुक्ति के मांग को लेकर चलाये जा रहे आन्दोलन कि समीक्षा कि गई।बैठक में कहा गया कि जिला प्रशासन कि उदासीन्ता एवं मनमानी के कारण आज भी पलामू में 500 से अधिक पद रिक्त है। दूसरी तरफ कॉन्सिलिंग में सफल अभ्यर्थियों को नियुक्ति से वंचित रखा गया है। जिससे बेरोजगारों में काफी आक्रोश व्याप्त है। कई बेरोजगारों का निर्धारित उम्र सीमा समाप्त हो गई और कितने का समाप्ति के कागार पर है। पलामू के बेरोजगार दर-दर कि ठोकरे खा रहे है। अन्य राज्यों में बेरोजगारों का पलायन लागातार जारी है, अन्य राज्यों में बेरोजगारों का शोषण होता है। झारखण्ड सरकार एवं पलामू जिला प्रशासन को बेरोजगारों का चिन्ता नहीं है, बेरोजगार मुखे मर रहे हैं।बैठक में निर्णय लिया गया कि 6 जुलाई को देश के उपप्रधानमंत्री एवं दलितों के पुरोधा बाबु जगजीवन राम कि 37 वीं पुण्य तिथि मोर्चा कार्यालय में 10:00 बजे दिन से मनाई जाएगी।

नाबालिक बच्ची को आवारा कुत्ते ने काटा

सीएचसी में नही हुआ इलाज

नवीन मेल संवाददाता

विश्रामपुर। नगर परिषद अंतर्गत वार्ड संख्या 12 के झगरुआ गांव में आवारा कुत्तों ने एक नाबालिक बच्ची को काट लिया। जिसकी पहचान दो वर्षीय परी कुमारी के रूप में हुई है।जिसके हाथ को कुता ने काट कर गंभीर रूप से घायल कर दिया है। जिसे परिजन विश्रामपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाये। लेकिन उसका उपचार नही हुआ। चिकित्सा कर्मियों ने रविवार का हवाला देते हुये परिजनों को कहा कि यहां रैबिज का इंजेक्शन नही है। यहां से जाओ। इसी बात

को ले परिजनों से चिकित्सा कर्मियों की तू-तू मैं-मैं भी होने लगी। वहीं कर्मियों ने स्थानीय पुलिस प्रसाशन को भी फोन कर बुला लिया लेकिन पुलिस प्रशासन उल्टे परिजनों को जिला अस्पताल जाने की बात कह कर टाल दिया। इधर परिजनों व स्थानीय लोगो में रैबिज का इंजेक्शन नही मिलने से काफी नाराजगी व्याप्त है।

मालगाड़ी से कटकर महिला की मौत

हुसैनाबाद। प्रतिनिधि। पूर्व मध्य रेलवे के गढ़वा रोड डेहरी ऑन सोन रेलखंड के काजरत - नावाडीह रेलवे स्टेशन के डाउन रेल पटरी के खम्भा संख्या 372 / 25 के समीप मालगाड़ी की चपेट में आने से एक 40 वर्षीय अधेड़ महिला की मौत हो गई। मृतक महिला की पहचान हुसैनाबाद थाना क्षेत्र के अलीनगर गांव निवासी नंदलाल पासवांन की पत्नी सुनीता देवी के रूप में हुई हैं। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार रेल पटरी पार करते समय वह मालगाड़ी की चपेट में आ गयी। उसकी मौत घटना स्थल पर हो गई। रेल कर्मियों ने घटना की सूचना रेल पुलिस को दिया हैं।

प्रखंड प्रमुख ने आंगनबाड़ी केंद्र निर्माण मे अनियमितता का लगाया आरोप

नवीन मेल संवाददाता

हुसैनाबाद। पलामू जिले की प्रखंड प्रमुख राजकुमारी देवी व उपप्रमुख इंदू देवी ने प्रखंड के महुअरी पंचायत के झरहा गांव में बन रहे आंगनबाड़ी केन्द्र के निर्माण कार्य का निरीक्षण किया। निरीक्षण के उपरांत प्रखंड प्रमुख व उपप्रमुख ने प्रेस वार्ता कर निर्माण कार्य मे भारी अनियमितता बरतने का आरोप लगाया है। उन्होंने बताया कि निरीक्षण के दौरान झरहा गांव पहुंचे तो देखा कि आंगनबाड़ी निर्माण कार्य में निम्न गुणवत्ता की सामग्री का उपयोग किया गया है। उन्होंने बताया कि आंगनबाड़ी केंद्र का निर्माण कार्य शुरू ही हुआ था कि हल्की बारिश में उसके नींव की दीवार टूट गयी है,

जिससे साबित होता है कि निर्माण कार्य में घटिया सामग्री का उपयोग किया जा रहा है। साथ ही इस बाबत प्रखंड प्रमुख ने पलामू उपायुक्त को पत्र देकर उक्त निर्माण कार्य में गुणवत्ता की जांच कराने की मांग की है।

महा जनसंपर्क अभियान की समीक्षा बैठक संपन्न

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। मोदी सरकार के 9 साल बेमिसाल कार्यक्रम के तहत 30 दिवसीय महा जनसंपर्क अभियान की समीक्षा बैठक रविवार को जिला के पदाधिकारियों के साथ भाजपा जिला कार्यालय पलामू में भाजपा पलामू जिला अध्यक्ष विजय नंद पाठक जी की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस दौरान जिलाध्यक्ष 30 दिनों तक चलने वाले अलग-अलग कार्यक्रमों की रूपरेखा से अवगत हुए।इस दौरान उन्होंने कई आवश्यक सुझाव दिए। भाजपा पलामू जिला अध्यक्ष विजय नंद पाठक ने कहा कि भाजपा संगठन में कार्यकर्ता ही सर्वोपरि है और इन्हीं द्वारा किए गए कार्यों के बदौलत आज देश में नरेंद्र मोदी की सरकार है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार के सफलता 9 वर्ष पूरा होने के अवसर पर चलने वाले इस महा जनसंपर्क अभियान में सभी ने अपनी जिम्मेदारी एवं दायित्वों का निर्वहन किया। समीक्षा बैठक मे जिला के पदाधिकारियों ने विंदु वार अपनी बातों को रखा और जिला अध्यक्ष को आश्वस्त किया कि पलामू जिला के कार्यकताओं का प्रदर्शन काफी बेहतर रहा।इस बैठक में जिला उपाध्यक्ष अरविंद गुप्ता सुनील पासवान एवं धर्मेंद्र उपाध्याय जिला महामंत्री श्याम बाबू जिला मंत्री मनोज दुबे रेनू देवी मंजू देवी जिला सोशल मीडिया प्रभारी सोमेश सिंह भाजयुमो जिलाध्यक्ष ज्योति पांडे किसान मोर्चा जिला अध्यक्ष जितेंद्र तिवारी आदि मौजूद थे।

लाइफ लाइन कौरव नदी को कराया जायेगा अतिक्रमण मुक्त

महज 10-15 फीट में सिमट गई है कौरव नदी

अटल बिहारी बाजपेई ने देखा था नदियों को जोड़ने की सपना

2002 में देश में भयानक सूखा पड़ा था। जिसे देखते हुए देश भर की नदियों को आपस में जोड़कर सिंचाई के क्षेत्र में क्रांती लाने का सपना पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने देखा था। जिसका मकसद कृषि योग्य लाखों हेक्टेयर भूमि की मानसून पर निर्भरता को कम करना था। इतना हीं नहीं नदियों को आपस में जोड़ने के काम की व्यावहारिकता परखने के लिए एक कार्य दल का गठन किया गया। लेकिन स्वर्गीय बाजपेई को सत्ता से पदच्युत होते हीं सभी योजनाएं धरी की धरी रह गई।

कई लोगों के द्वारा नदी क्षेत्र की जमीन को अतिक्रमण कर अपने कब्जे में कर लिया गया

नदी की जमीन पर कब्जा कर नदी के बहाव को भी बदलने का प्रयास किया जा रहा है

नवीन मेल संवाददाता

नावा बजार। लाइफ लाइन कही जाने वाली क्षेत्र की एक मात्र कौरव नदी का स्थानीय लोगों के द्वारा अतिक्रमण कर लिया गया है। जिसके कारण नदी संकीर्ण हो गई है। नदी की जमीन को समतल कर उसमें कृषि कार्य किये जा रहे हैं। इतना ही नहीं नदी की जमीन पर कब्जा कर नदी के बहाव तक को भी बदलने का प्रयास किया जा रहा है। जिसके कारण जल संचय भी नहीं हो पा रहा। नदी तट पर अवस्थित द्वारवार, दमारो, बसना, बनखेता, राजहारा आदि गांव के मध्य से होकर नदी बहती है। वैसे कई लोग जिनका नदी किनारे जमीन है। उनके द्वारा नदी क्षेत्र की जमीन को अतिक्रमण कर अपने कब्जे में कर लिया गया। जेसीबी मशीन से नदी तट पर मिट्टी डालकर नदी के बहाव क्षेत्र में बदलाव कर दिया गया। जिसपर उनके द्वारा कृषि कार्य किए जा रहे हैं। यह सब एक सोची समझी साजिश के तहत किया जा रहा है। स्थानीय लोगों के द्वारा इसकी शिकायत नावा बाजार अंचलाधिकारी से करते हुए कौरव नदी क्षेत्र को अतिक्रमण मुक्त कराने की मांग की गई थी। जिसे गंभीरता से लेते हुए नावा बाजार अंचलाधिकारी राकेश श्रीवास्तव कौरव नदी के तट पर पहुंचे। जहां नदी के वर्तमान स्वरूप को देखकर हतप्रभ रह गए। उन्होंने कहा कि लाइफ लाइन कौरव नदी को अतिक्रमण मुक्त कराया जाएगा। सरकारी नक्शे के अनुसार नदी क्षेत्र का सीमांकन कराई जाएगी। लोगों के द्वारा नदी क्षेत्र का अतिक्रमण किए जाने के कारण नदी संकीर्ण होती जा रही है। जिसके कारण जल संचय भी नहीं हो पा रहा। उन्होंने कहा कि राजस्व कर्मचारी व अमीन के साथ स्थल का कैंप कर अतिक्रमण मुक्त कराया जाएगा। सरकारी संपत्ति को किसी भी स्थिति में बर्बाद नहीं होने दिया जाएगा। नदी को सामान्य स्वरुप में होने से जल संचय होता। लेकिन नदी के स्वरूप के साथ छेड़छाड़ किए जाने से प्राकृतिक ह्रास हो रहा है। नदी महज 15-20 फिट में सिमट कर रह गई है। वहीं निरीक्षण के क्रम में अंचलाधिकारी के साथ स्थल पर पहुंचे बसना पंचायत के समिति सदस्य हरिशंकर दुबे उर्फ देवगोड़ा, राजबली राम सहित अन्य लोगों से नदी के प्रकृति से संबंधित कई जानकारी प्राप्त की। लोगों ने भी कहा कि नदी के साथ छेड़छाड़ की गयी है।

विश्व हिंदू परिषद,बजरंग दल की बैठक में संगठन विस्तार पर जोर

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। आज पलामू जिला मुख्यालय मेदनीनगर के वार्ड नंबर 23 स्थित पंचमुखी हनुमान मंदिर (नवकेतन के सामने) में विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल की एक बैठक आर्योजित की गई। बैठक की अध्यक्षता जिला मंत्री दामोदर मिश्र और संचालन बलोपासना प्रमुख विकास कश्यप ने किया। बैठक के दौरान वार्ड नंबर 23 में विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के समिति का पुनर्गठन किया गया। बैठक में सर्वसम्मति से मुन्ना चंद्रवंशी को विश्व हिंदू परिषद के वार्ड नंबर 23 का मंत्री और आकाश कुमार को बजरंग दल का संयोजक मनोनीत किया गया। मिथुन कुमार और पंकज चंद्रवंशी को बजरंग दल का सह संयोजक, प्रिंस कुमार को बलोपासना प्रमुख, बिट्टू कुमार उर्फ निशांत को सत्संग प्रमुख, और सुजीत कुमार को गौ रक्षा प्रमुख मनोनित किया गया। बैठक को संबोधित करते हुए जिला मंत्री ने विश्व हिंदू परिषद की स्थापना और इसके उपलब्धियों पर चर्चा करते हुए बताया कि परिषद की स्थापना 1964 में की गई थी। अगले साल परिषद अपना 60 वर्ष पूरा करने जा रही है। कई संघर्ष, आंदोलन और झंझावतों से गुजरते हुए परिषद ने कई उपलब्धियां भी प्राप्त की है। राम सेतु की रक्षा की गई, धारा 370 हटाई जा चुकी है, और, यूनिफॉर्म सिविल कोड पर चर्चा चल रही है। अगले वर्ष तक विश्व हिंदू परिषद जिले के शत-प्रतिशत पंचायत और शहरी वार्ड में अपनी समिति गठन करने के उद्देश्य लेकर काम कर रही है, और साथ ही साथ, ज्यादा से ज्यादा गांवों तक समिति गठन करने की भी योजना है।

माता हीरामणि सेवा संस्था के सौजन्य से

डेढ़ सौ कांवरिया बाबा धाम के लिए हुए रवाना

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। शहर के पुलिस लाइन रोड स्थित माता हीरामणि सेवा संस्था के अध्यक्ष प्रमोद अग्रवाल के घर से माता हीरामणि सेवा संस्था के 150 सदस्यों को देवघर बाबा धाम के लिए रवाना किया गया । पलामू सांसद विष्णु दयाल राम , पूर्व विधानसभा स्पीकर इंद्र सिंह नामधारी, पूर्व मंत्री केएन त्रिपाठी ,एसडीएम राजेश साह, एसडीपीओं सुरजीत कुमार ,माटी कला बोर्ड के सदस्य अविनाश देव, समाज सेवी अनिल साहू, भाजपा नेत्री लवली गुप्ता, आजसू पार्टी के केंद्रीय सदस्य बबलू गुप्ता, कांग्रेस युवा नेता रुद्र शुक्ला , अध्यक्ष प्रमोद अग्रवाल, कंचन अग्रवाल, पूर्व सांसद बृज मोहन राम,पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष सुरेंद्र सिंह समेत कई लोगो ने हरी झंडी दिखाकर शिविर के सदस्यों को रवाना किया । आपको बता दे कि वर्ष 1998 से माता हीरामणि सेवा संस्था के द्वारा देवघर बाबा धाम में कांवरियों को निशुल्क सेवा की जाती है। कोरोना काल मे सिर्फ दो साल सेवा बंद थी। लेकिन कोरोना काल समाप्त होने के बाद पुनः सेवा को शुरू कर दी गई । माता हीरामणि सेवा संस्था के द्वारा सेवा भाव से कांवरियों की सेवा को जाती है और पूरे सावन महीने सेवा की जाती है ।वही माता हीरामणि सेवा संस्था के द्वारा कांवरियों को निःशुल्क भोजन, कपड़े , दवा समेत हर जरूरत की वस्तुओ को उपलब्ध कराई जाती है । वही महिलाओं और पुरुषों को रहने के लिए अलग से ब्यवस्था की जाती है। माता हीरामणि सेवा संस्था के द्वारा लगभग 300 सदस्य दिन रात कांवरियों की सेवा में लगे रहते है साथ ही माता हीरामणि सेवा संस्था के द्वारा बड़े बड़े कलाकरों के द्वारा भक्ति जागरण कार्यक्रम का भी आयोजन कराया जाता है।

अलग- अलग सड़क दुर्घटना में दो घायल,एक रेफर

हुसैनाबाद। पलामू जिले के हुसैनाबाद में अलग -अलग सड़क दुर्घटना में दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए है। जिसमें एक की स्थिति को गंभीर देखते हुए बेहतर इलाज के लिए मेदिनीनगर रेफर कर दिया गया। समाचार के अनुसार जपला छतरपुर मुख्य रोड में शनिवार की देर रात अज्ञात टेंपो के धक्के से जपला निवासी चंदन कुमार की पुत्री ममता कुमारी (18) वर्ष, गंभीर रूप से जख्मी हो गई। बताया जाता हैं कि उक्त युवती सड़क पार कर रही थी,उसी क्रम में अज्ञात टेंपो ने धक्का मारकर भाग निकला। स्थानीय लोगों के सहयोग से इलाज के लिए हुसैनाबाद अनुमंडलीय अस्पताल में भर्ती कराया गया, चिकित्सक के अनुसार उसकी स्थिति खतरे से बाहर है, उसे सर व चेहरे में हल्की चोट लगी है। वहीं जपला देवरी मुख्य रोड के गैस गोदाम के समीप सड़कों गिराकर छोड़े गये बालू पर बाइक चढ़ने से अनियंत्रित होकर पलट गई। जिसमें पुरनाडीह गांव निवासी रामजनम राम का 19 वर्षीय पुत्र बच्चन कुमार गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे इलाज के लिए अनुमंडलीय अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां ऑन ड्यूटी मौजूद चिकित्सक ने प्रारंभिक इलाज के बाद स्थिति को गंभीर हालत देखते हुए बेहतर इलाज के लिए मेदिनीनगर रेफर कर दिया गया हैं। उसे सर में गंभीर चोटें आई हैं। इस घटना की जानकारी देवरी ओपी पुलिस को दे दी गई हैं।

छात्रों के उज्ज्वल भविष्य के लिए भवन का निर्माण जरूरी : अरविन्द

छतरपुर। सरकार भले ही सूबे में शिक्षण व्यवस्था को मजबूत करने के लाख दावे कर ले, लेकिन सच ये है कि ये भ्रष्ट व्यवस्था की भेंट चढ़ रही है। छतरपुर प्रखंड के कई ऐसे विद्यालय हैं जिनके भवन अधूरे पड़े हैं। उनमें उत्क्रमित मध्य विद्यालय मदनपुर, मध्य विद्यालय छतरपुर, खजूरी नौडिहा उच्च विद्यालय, यूपीजी पीएस सड़मा, यूपीजी पीएस ओठकटी, एनपीएस ठेकही, जैसे दर्जन भर ऐसे स्कूल हैं, जिनके भवन निर्माण के पैसे सरकारी बाबुओं के भ्रष्ट गठजोड़ से संवेदक और बिचौलिए डकार गए। ताजा मामले पर गौर करें तो मदनपुर उत्क्रमित मध्य विद्यालय में एक दशक पूर्व आठ कमरा बनाने के लिए लगभग बीस लाख रु की राशि स्वीकृत हुई थी। लोग बताते हैं कि कमरे बने तो जरूर लेकिन एक दशक बाद भी न तो उनमें प्लास्टर हुआ और नाही खिड़की दरवाजे ही लग पाये। नतीजन स्कूल आज भूत बंगले में तब्दील हो गया है। आलम ये है कि भवन के अभाव में अधिकांश स्कूलों में पठन-पाठन बाधित हो रहा है। नतीजन निर्माण कार्य पूर्ण होने से पहले ही स्कूल खंडहर में तब्दील होने लगा है। इस सबन्ध में ग्रामीण बताते हैं कि उन्होंने इससे सम्बंधित शिकायत विभाग से लिखित रूप से की और ट्वीट भी किया गया, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई है। वहीं इलाके के प्रखण्ड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी ने बताया कि इलाके के लगभग बीस से भी ज्यादा ऐसे स्कूल हैं जो अधूरे हैं और सम्बंधित लोगों से रिकवरी की कार्रवाई जारी है। जल्द ही अधूरे भवनों को टेंडर कर पूरा कर लिया जाएगा। वहीं नगर पंचायत के पूर्व अध्यक्ष पद के प्रत्याशी सह छतरपुर विकास मंच के संस्थापक अरविन्द गुप्ता ने कहा कि इलाके के साथ यह भद्दा मजाक है। बच्चे स्कूलों में बैठने को तरस रहे हैं, भवन अधूरे हैं लेकिन जनप्रतिनिधियों के कानों पर जूं भी नहीं रेंग रही। जिला और स्थानीय प्रशासन को चाहिए कि वह प्राथमिकता के आधार पर उन भवनों का निर्माण सुनिश्चित कराए।

कम्युनिस्ट पार्टी ने उठाया चियांकी में अतिक्रमित जमीन का मामला

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। सदर प्रखंड के चियांकी गांव में ग्रामीणों के अनुरोध पर उनको साथ लेकर जोरही बांध और धांगरगढ़वा स्थल का निरीक्षण किया। जहां ग्रामीणों के द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार पाया कि प्लॉट नंबर 1196 शिव रतन सिंह के नाम से 1951- 52 के समय सरकार के द्वारा रैयतों को बंदोबस्त किया गया था। उसके बाद मालगुजारी रसीद कट्टा और उसी के आधार पर शिव रतन सिंह के बंसज उस जमीन को जोतकोड़ कर खेती कर रहे थे। लेकिन आज वर्तमान समय में उक्त भूमि को वित्त मंत्री वित्त रामेश्वर उरांव के भतीजा उमेश उरांव ने कल्याण विभाग सरकारी निधि का दुरुपयोग करते हुए चारदीवारी कर जमीन को कैद कर दिया। डैम का पानी का निकासी मार्ग को भी बंद कर दिया गया। जिससे उमेश उरांव के वंशज आदिवासियों के राज में भी अपने आप को ठगा हुआ महसूस कर पा रहे हैं। ग्रामीणों का कहना है कि उमेश उरांव के मुखिया पुत्री बींको उरांव भी चेरो लोगों का जमीन हड़पने में भागीदार है। आज भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के जांच टीम जिसमें जिला सचिव रुचिर कुमार तिवारी के अलावा नगर सचिव सुरेश ठाकुर नौजवान संघ के अध्यक्ष चंद्रशेखर तिवारी, आलोक कुमार तिवारी ने स्थल का निरीक्षण भी किया और जांच करके पाया कि पूर्ण रूप से यह भ्रष्टाचार एव चेरो समुदाय का जमीन हड़पने का मामला है और अपने पैसा पावर एवं पद का दुरुपयोग करके मंत्री रामेश्वर उरांव के पद का लाभ उठाकर के प्रशासन को मिलाकर के गरीबों के जोतकोड़ की भूमि को चारदीवारी कर दिया जो एक गंभीर मामला है।

कार्रवाई — **जांच के दौरान नर्सिंग होम में कोई डॉक्टर नहीं मिला**

सीएस ने जेपी नर्सिंग होम को किया सील

नर्सिंग होम परिसर में अवैध रूप से चल रहा था मेडिकल स्टोर

नवीन मेल संवाददाता

विश्रामपुर। जिले के सिविल सर्जन डॉ अशोक कुमार ने शनिवार को जांच के बाद रेहला में संचालित जेपी नर्सिंग होम को सील कर दिया है। सील करने के दौरान रेहला थानाप्रभारी नेमधारी रजक सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे। सीएस ने बताया कि जांच के दौरान वहां कोई चिकित्सक उपस्थित नहीं था जिससे उस सम्बंध में कोई विशेष जानकारी नहीं मिली। लेकिन जांच के दौरान यह पाया गया कि उस परिसर में अवैध रूप से दवाखाना चलता है। वहीं किसी को नहीं रहने से यह जानकारी नहीं मिल पाई की उक्त हॉस्पिटल का संचालन

कैसे होता है। उन्होंने यह भी बताया कि नर्सिंग होम के संचालक डॉ अलाउद्दीन अंसारी के विरुद्ध रेहला थाने के घोरडीहा के धर्मेंद्र राम ने प्राथमिकी कराई है। उसी संदर्भ में जांच पड़ताल की जा रही है। रेहला थानाप्रभारी नेमधारी रजक ने बताया कि दर्ज प्राथमिकी में वादी ने अपने आवेदन में उल्लेख किया है कि उसने जेपी नर्सिंग होम में हाइड्रोसील का ऑपरेशन कराया था। तबसे उसकी तबियत और खराब होने लगी। जब वह मेदिनीनगर में एक डॉक्टर से दिखाया तब उसे बीएचयू जाने की सलाह दी गयी।वादी धर्मेंद्र बीएचयू गया तो जांचोपरांत उसे बाहर जाने की सलाह देते हुए बताया गया कि उनका किडनी खराब हो गया है। तब सीएमसी विलोर पहुंचा। उसने बताया कि जांच के बाद वहां के डॉक्टरों ने उसे बताया कि हाइड्रोसिल के ऑपरेशन के दौरान नस कट जाने से किडनी इफेक्टेड हो गया है। सीएस ने बताया कि थाना प्रभारी के आवेदन पर जांच किया गया था जबतक स्थिति स्पष्ट नहीं होगी तबतक नर्सिंग होम सील कर दिया गया है।

NEWS इन ब्रीफ

मारपीट में एक घायल

हुसैनाबाद। थाना क्षेत्र के देवरी ओपी अंतर्गत पुरनाडीह गांव में दुकान से लेनदेन को लेकर हुए विवाद में संतू राम का पुत्र बीरबल राम गंभीर रूप से घायल हो गया। ग्रामीणों के सहयोग से इलाज के लिए उसे हुसैनाबाद अनुमंडलीय अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बीरबल के द्वारा इस घटना की सूचना देवरी ओपी को दे दी गई हैं। पुलिस मामले की छानबीन कर रही हैं।

अंतर्राज्यीय फुटबॉल टूनार्मेंट की तैयारी की बाबत बैठक

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। स्थानीय परिसदन मेदिनीनगर में रविवार को फुटबॉल प्रेमियों के द्वारा एक व्यापक बैठक का आयोजन किया गया । जिसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध समाजसेवी सुनील कुमार तिवारी ने की। बैठक का संचालन मनोहर कुमार लाली ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन अजीत कुमार पाठक ने किया। उक्त बैठक में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि स्वर्गीय दुर्गा सोरेन के नाम पर एक अंतर्राज्यीय फुटबॉल टूनार्मेंट का आयोजन किया जाएगा जो कि ऐतिहासिक होगा। बैठक में झामुमो जिलाध्यक्ष राजेंद्र सिन्हा उर्फ गुड्डू सिन्हा ने बताया कि टूनार्मेंट से पहले सरकार की ओर से 5 करोड की लागत से स्थानीय पुलिस लाइन का पुनर्निर्माण सुव्यवस्थित तरीके से करा लिया जाएगा उसके पश्चात ही एक भव्य टूनार्मेंट का आयोजन किया जाएगा। बैठक को संबोधित करते हुए समाजसेवी आलोक कुमार वर्मा ने बताया कि टूनार्मेंट पूर्णतः राजनीति से परे होगा और इसमें किसी भी राजनीतिक दल का नाम प्रयोग नहीं किया जाएगा। अविनाश देव ने कहा कि इस तरह के आयोजन से खेल प्रेमियों के बीच हर्ष का संचार होता है और पूरी ऊर्जा के साथ कार्य करने में बल मिलता है। समाजसेवी अभिषेक कुमार सिंह ने कहा कि युवाओं के लिए खेल सबसे महत्वपूर्ण कार्य है इससे शारीरिक ही नहीं बल्कि मानसिक विकास भी होता है। बैठक की अध्यक्षता कर रहे समाजसेवी सुनील तिवारी ने आयोजन समिति के लिए तत्काल 50000 देने की घोषणा की एवं बताया कि जब भी खेल के प्रति युवाओं को उनके साथ की आवश्यकता होगी वह कदम से कदम मिलाकर चलेंगे। आयोजन समिति की इस बैठक में दुर्गा जौहरी नरेंद्र कुमार सिंह संदीप कुमार राम मानिकचंद आदि ने संबोधित किया एवं सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि 15 सदस्य कोर कमेटी का निर्माण किया जाए।उपरोक्त बैठक में राजेंद्र कुमार सिन्हा, सुनील तिवारी, सानू सिद्दीकी, मनोहर कुमार लाली, आलोक कुमार वर्मा, अजीत कुमार पाठक, अविनाश देव, अभिषेक कुमार सिंह, राजकुमार गुप्ता, नरेंद्र कुमार सिंह, संदीप कुमार राम, मानिकचंद, प्रसनजीत दा, दुर्गा जौहरी, ट्विंकल गुप्ता, हिमांशु त्रिवेदी,प्रेमकांत तिवारी, विनय सिंह, प्रमोद रंजन, वेद प्रकाश, मनोज कुमार जैन, ओमकार पाठक, अनूप कुमार गुप्ता, विजय प्रसाद गुप्ता, रिंकू कुमार, विकास कुमार सिंह, रंजीत गुप्ता, सूरज सिंह, धीरेंद्र पांडे, रविशंकर सिंह, सनत चटर्जी, राजीव मुखर्जी, धीरज गुप्ता, कौशल वर्मा, राकेश पाठक आदि लोग सम्मिलित थे।

सरकारी भ्रष्टाचार पर रोक लगाने के लिए एकजुट हों : केडी सिंह

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। जन जंगल जमीन की हिफाजत और सरकारी भ्रष्टाचार के खिलाफ रामगढ़ प्रखंड के सरहुआ, पिपराही, नावाडीह सहित अन्य गांव में नुक्कड़ सभा का आयोजन किया । नुक्कड़ सभा के दौरान केडी सिंह ने कहा कि और पानी की तलाश में गांव में घुस जा रहे हैं। खेती तो बर्बाद हो ही रही है साथ ही जंगल के जानवर मारे जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में जंगल की हिफाजत गांव ही कर सकता है। ब्लॉक में भ्रष्टाचार का आलम यह है कि गरीब, आदिवासी और दलितों की जमीन लूटी जा रही है। इसी परिप्रेक्ष्य में धरना का आयोजन 4 जुलाई 2023 को रामगढ़ प्रखंड पर किया गया है। सभाओं को सफल बनाने में भाकपा के रामजन्म राम, सुषमा देवी, गफ्फार मीणा, कमोदा देवी एवं झारखंड मजदूर किसान यूनियन के लुकस कोरवा सक्रिय थे।

समक्ष अखिल भारतीय किसान सभा रामगढ़ अंचल कमेटी के द्वारा धरना का आयोजन किया गया है। इस धरना को सफलता के लिए गांव हमारा जंगल हमारा नारा के साथ किसान सभा के प्रांतीय अध्यक्ष केडी सिंह एवं इप्टा के रंगकर्मी प्रेम प्रकाश ने गांव का भ्रमण किया एवं नुक्कड़ सभा का आयोजन कर पर्चा का वितरण किया।ग्राम भ्रमण के दौरान अखिल भारतीय किसान सभा ने एकीकृत पलामू में कुल भूमिका 84% भूमि पर जंगल था। लेकिन अफसरों और माफियाओं के द्वारा अंधाधुंध कटाई के कारण 12 से 13 प्रतिशत भूमि पर जंगल बचा है। इस कारण से वन्य जीव भोजन

जिला भू अर्जन पदाधिकारी पदास्थापन पर याद किये गये

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। पलामू जिला में पदस्थापित जिला भू अर्जन पदाधिकारी , ए न डीसी पलामू के पद पर पदास्थापित शैलेश कुमार सिंह का पदस्थापना देवघर जिला कर दिया गया। इसी क्रम में पदस्थापना देवघर होने पर पूर्व विधायक प्रत्याशी पांकी विधानसभा रूद्र शुक्ला ने मुलाकात कर शैलेश कुमार को सौल और पुष्पगुच्छ देकर पलामू जिला में अति सराहनीय और बहुत ही अच्छे कार्य काल व्यतीत करने के लिए तहे दिल से आभार और धन्यवाद व्यक्त किया। युवा नेता ने कहा कि शैलेश कुमार सिंह का कार्यकाल स्वर्ण युग के रूप में आम जनों के दिलों में विद्यमान रहेगा। इनके कार्यकाल में आम जनता बड़ी सुलभता के साथ अपनी बातों को रखते थे और इन के माध्यम से उन कार्य का निवारण होता था। युवा नेता ने उनसे समय-समय पर पलामू में आने का आग्रह किया व कहा कि पलामू जिला सदैव आपको अपने हृदय में बसाये रखेगा।

मेदिनीनगर की हृदयस्थली

पलामू में एक जगह, जिसे लोग छह मुहान कहते हैं

डॉ. राजेंद्र प्रसाद की प्रतिमा के सामने पूर्व दिशा की ओर जानेवाली सड़क कचहरी रोड के नाम से जानी जाती है

यहां से शहर के किसी भी हिस्से में जाने के लिए ऑटो या रिक्शा भी आसानी से मिल जाता है

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। आपने कई बड़े शहरों में चौक चौराहों के बारे में सुना होगा, जहां से 4 रास्ते,5 रास्ते निकलते हैं। लेकिन पलामू के राजेंद्र प्रसाद चौक छह मुहान से छह रास्ते निकलते हैं। इसलिए यह चौक छहमुहान के नाम से जाना जाता है। इस स्थान को जिला मुख्यालय मेदिनीनगर की हृदयस्थली माना जाता है। यह चौक शहर के बीचो-बीच है। इस चौक की खासियत यह है कि यहां से लोग शहर के हर कोने में जा जा सकते है। यहां पर चौक के बीचो-बीच पूर्व राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद की प्रतिमा स्थापित है। इस चौक से छह रास्ते निकलते हैं। जो शहर के सभी स्थानों पर जाने के लिए सुलभ हैं। यहां से शहर के किसी भी हिस्से में जाने के लिए ऑटो या रिक्शा भी आसानी से मिल जाता है। इस चौके से प्रतिदिन हजारों वाहन गुजरते हैं। डॉ. राजेंद्र प्रसाद की प्रतिमा के सामने पूर्व दिशा की ओर जानेवाली सड़क कचहरी रोड के नाम से जानी जाती है। यह सड़क कचहरी होते हुवे रेड़मा चौक पर निकलती है। प्रतिमा की दाईं तरफ दक्षिण दिशा की ओर जानेवाली सड़क जिला स्कूल रोड के नाम से प्रसिद्ध है। प्रतिमा के पीछे पश्चिम की ओर जानेवाली सड़क हॉस्पिटल रोड के नाम से जाना जाता है। यह रोड पुलिस लाइन होते हुवे बिसफुटा के रास्ते पड़वा मोड़ की तरफ जाती है। प्रतिमा से उत्तर की ओर जानेवाली सड़क जेल हाता रोड बाई पास रोड में जाकर मिल जाती है। चौक के पूर्व-दक्षिण की ओर जानेवाली सड़क डीसी बंगला रोड के नाम से फेमस है। यह सड़क शहीद चौक शिवाजी मैदान,कोयल नदी निकलती है। छहमुहान के पश्चिम-दक्षिण की ओर जानेवाली सड़क इंजीनियरिंग रोड के नाम से जाना जाता है। इस रास्ते में आप मॉल, बिजली दुकान, पंचमुहान चौक, सब्जी बाजार, कपड़ा दुकान, ज्वेलरी शॉप की दुकानों पर आसानी से जा सकते हैं।

झारखण्ड सरकार
GOVERNMENT OF JHARKHAND

झारखण्ड ऊर्जा संचरण निगम लिमिटेड
JHARKHAND URJA SANCHARAN NIGAM LIMITED
JUSNL

132/33 के0वी0 ग्रिड सब-स्टेशन, जरमुण्डी
एवं
132 के0वी0 द्विपथ लिलो संचरण लाइन
का उद्घाटन

ग्रिड की क्षमता
2x50MVA
(100MVA)

लाभान्वित क्षेत्र
- बासुकीनाथ तीर्थ स्थल
- तालझारी
- घोरमारा
- जरमुण्डी
- सोनारायथाडी
- मोहनपुर एवं
- दुमका के क्षेत्र

मुख्य अतिथि
श्री हेमन्त सोरेन
माननीय मुख्यमंत्री, झारखण्ड

विशिष्ट अतिथि
श्री बादल पत्रलेख
माननीय मंत्री, कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग

सम्मानित अतिथि
श्री शिबू सोरेन
माननीय सांसद (राज्यसभा)
डॉ निशिकांत दुबे
माननीय सांसद, गोड्डा लोकसभा क्षेत्र
श्री सुनील सोरेन
माननीय सांसद, दुमका लोकसभा क्षेत्र
श्रीमती सीता सोरेन
माननीय विधायक, जामा
श्री बसंत सोरेन
माननीय विधायक, दुमका

दिनांक : 03 जुलाई, 2023 | समय : अपराह्न 03:00 बजे
स्थान : ग्रिड सब-स्टेशन, जरमुण्डी, दुमका

PR No. 301198 (Energy) 2023-24

ऊर्जा विभाग, झारखण्ड सरकार

अरमान चतुर्वेदी ने आईआईटी एडवांस में हासिल की सफलता

नवीन मेल संवाददाता। श्री बंशीधर नगर
प्रखंड के उसका कला ग्राम निवासी अनुपम चतुर्वेदी का पुत्र अरमान चतुर्वेदी ने आईआईटी जेईई एडवांस सीआरएल रैंक 13471 तथा जेनरल मेंस में जनरल ईडब्ल्यूएस में 1937 रैंक लाकर अपने माता पिता एवं जिला का नाम रौशन किया है। अरमान चतुर्वेदी ने बताया कि उनकी प्रारंभिक शिक्षा भवनाथपुर डीएवी स्कूल से तथा इंटर की शिक्षा टीडीएम कॉलेज अधौरा से हुआ है। उसने घर पर रहकर ही आईआईटी जेईई के लिए ऑनलाइन कोचिंग कर इसकी तैयारी की तथा पहली बार में ही सफलता हासिल की। अरमान ने बताया कि इस सफलता का श्रेय माता-पिता, गुरु के साथ-साथ समाज के उन लोगों को भी जाता है जो हमारा मार्गदर्शन करते रहे। युवा समाजसेवी अमित तिवारी उर्फ गुड्डू तिवारी ने रविवार को उनके आवास पर अरमान को मिठाई खिलाई हौसला अफजाई की।

मेराल के कई लोग भाजपा छोड़ झामुमो में शामिल

नवीन मेल संवाददाता। गढ़वा
मेराल प्रखंड के चामा पंचायत से भाजपा छोड़कर एक दर्जन से अधिक लोग झारखंड मुक्ति मोर्चा में शामिल हो गए। रविवार को गढ़वा विधायक झारखंड सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर के गढ़वा स्थित आवास पर सभी ने झारखंड मुक्ति मोर्चा की सदस्यता ग्रहण की। मंत्री मिथिलेश ठाकुर ने माला पहनाकर एवं मिठाई खिलाकर सभी को पार्टी में शामिल कराया।

झामुमो के चामा पंचायत अध्यक्ष मुसाहेब अंसारी के नेतृत्व में सभी ने माटी की पार्टी झामुमो की सदस्यता ग्रहण की। पार्टी में शामिल होने वालों में मुख्य रूप से भाजपा के पूर्व मंडल महामंत्री उपेंद्र विश्वकर्मा, विलास कुमार रवि, रमेश कुमार रवि, राजेश कुमार रवि, सचिन कुमार, बहादुर विश्वकर्मा आदि का नाम शामिल है। इस मौके पर पार्टी में शामिल होने वाले लोगों उपेंद्र विश्वकर्मा आदि ने कहा कि झारखंड मुक्ति मोर्चा ही झारखंड एवं झारखंडियों की असली हितैशी पार्टी है। यहां सभी लोगों को पूरा मान, सम्मान एवं उचित हक, अधिकार मिलता है। जबकि भाजपा में छोटे कार्यकताओं की कोई पूछ नहीं होती है। भाजपा की सरकार में न तो गढ़वा और न ही झारखंड में कोई भी विकास कार्य हुआ। परंतु आज झामुमो की सरकार झारखंड एवं झारखंडियां के हित में काफी बेहतर कार्य कर रही है।

रंका के 150 से अधिक युवाओं ने थामा झारखंड मुक्ति मोर्चा का दामन

झारखंड का सपना अब हो रहा है पूरा : मिथिलेश

नवीन मेल संवाददाता। गढ़वा
रंका प्रखंड के कंचनपुर पंचायत सहित अन्य पंचायतों के 150 से अधिक युवाओं ने झारखंड मुक्ति मोर्चा का दामन थामा। रविवार को गढ़वा विधायक झारखंड सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर के गढ़वा स्थित आवास पर सभी ने झामुमो की सदस्यता ग्रहण की। मंत्री ठाकुर ने सभी को माला पहना कर एवं मिठाई खिलाकर स्वागत करते हुए पार्टी में शामिल कराया।

झामुमो के युवा प्रखंड अध्यक्ष दीपक कुमार सोनी, युवा उपाध्यक्ष मुकेश तिवारी, किशोर ओझा, सदस्य संतोष राम एवं लभली उरांव के नेतृत्व में रामबाबू ठाकुर, जितेंद्र यादव, ओम प्रकाश यादव, सचिन यादव, उमेश भूईया सहित 150 से अधिक युवाओं ने झारखंड मुक्ति मोर्चा की सदस्यता ग्रहण की। ये सभी लोग मंत्री श्री ठाकुर के कार्यों से प्रभावित होकर भारतीय जनता पार्टी और बहुजन समाज पार्टी छोड़कर झामुमो में शामिल हुए। मौके पर मंत्री ठाकुर ने कहा कि माटी की पार्टी झारखंड मुक्ति मोर्चा में सभी का स्वागत है। इन ऊजार्वान युवाओं को पार्टी में शामिल होने से पार्टी और मजबूत होगी। इनके उत्साह और उमंग का लाभ पार्टी को मिलेगा। उन्होंने कहा कि दिशोम गुरु शिबू सोरेन ने जिस सोच के साथ अलग झारखंड राज्य का निर्माण कराया था, उनका सपना अब पूरा हो रहा है। आज मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नेतृत्व में झारखंड एवं झारखंड वासियों को उनका संपूर्ण हक एवं अधिकार मिल रहा है। पार्टी की नीति एवं मुख्यमंत्री सोरेन के बेहतर कार्यों का असर पूरे राज्य में है। यहां महिला, पुरुष, बुजुर्गों, नौजवानों सभी के दिल पर हेमंत सोरेन के बेहतर कार्यकाल की गहरी छाप पड़ी है। मंत्री ने कहा कि उनकी सोच विकास और सिर्फ विकास करना है। वे संपूर्ण गढ़वा वासियों के सहयोग एवं आशीर्वाद से अपने विकास के मिशन में काफी तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। आगे भी इसी तरह से गढ़वा वासियों का साथ मिलता रहा तो बहुत जल्द गढ़वा सबसे विकसित जिलों की श्रेणी में सबसे अग्रणी होगा। मौके पर झामुमो के केंद्रीय प्रवक्ता धीरज दुबे, जिलाध्यक्ष तनवीर आलम, सचिव मनोज ठाकुर, आशुतोष पांडेय, नवीन तिवारी मौजूद थे।

मंत्री की पहल पर गढ़वा विस क्षेत्र में 11 हाई मास्ट लाइट लगाएगी ग्रासिम इंडस्ट्रीज

गढ़वा। ग्रासिम इंडस्ट्रीज रेहला गढ़वा विधानसभा क्षेत्र में 11 स्थानों पर हाई मास्ट लाइट लगाएगा। गढ़वा विधायक झारखंड सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर के प्रयास से आदित्य बिड़ला ग्रुप का ग्रासिम इंडस्ट्रीज की सीएसआर फंड से यह हाई मास्ट लाइट लगा रहा है। जानकारी देते हुए मंत्री ठाकुर ने बताया कि ग्रासिम इंडस्ट्रीज अपने सीएसआर फंड से गढ़वा विधानसभा क्षेत्र के गढ़वा प्रखंड अंतर्गत तिलदाग पंचायत के तिलदाग मोड़, चिरौंजिया पंचायत के ब्रह्मा स्थान खजूरी, बेलचंपा में एसआईएस मोड़ बेलचंपा, प्रतापपुर पंचायत में पतसा चौक, महुलिया पंचायत के पचपड़वा बाजार में, मेराल प्रखंड अंतर्गत ओखरगाड़ा पंचायत के पचफेड़ी मोड़, चेचरिया पंचायत के अटौला बस स्टैंड चौक, दुलदुलवा पंचायत के पेशका बाजार में, डंडा प्रखंड अंतर्गत डंडा पंचायत के गुलर मोड़ (फूलन देवी चौक), रंका प्रखंड अंतर्गत चुटिया पंचायत के गोदरमाना बजरंग चौक तथा रमकंडा प्रखंड अंतर्गत उदयपुर पंचायत के उदयपुर बाजार चौक पर हाई मास्ट लाइट लगाएगा। मंत्री ठाकुर ने बताया कि ग्रासिम इंडस्ट्रीज की ओर से प्रथम चरण में इन स्थानों पर हाई मास्ट लाइट लगाया जा रहा है, जबकि अगले चरण में अन्य स्थानों पर लगाया जाएगा। मंत्री ने कहा कि सभी इंडस्ट्री एवं बड़ी-बड़ी संस्थानों के पास उनके क्षेत्र में विकास एवं सार्वजनिक कार्य करने के लिए सीएसआर फंड होता है। पूर्व में स्थानीय संस्थानों के इस फंड का उपयोग हुआ या नहीं हुआ यह किसी को पता भी नहीं चलता था, परंतु अब स्थानीय संस्थानों की ओर से सीएसआर फंड का सदुपयोग कराया जा रहा है। इससे क्षेत्र में विकास का नया कार्य हो रहा है। या प्रक्रिया जारी रहेगी।

विद्यालय प्रबंधन समिति का किया गया पुनर्गठन

केतार। प्रखंड मुख्यालय केतार स्थिति सरस्वती शिशु विद्या मंदिर के प्रांगण में रविवार को विद्यालय प्रबंधन समिति का पुर्नगठन किया गया। आयोजन के दौरान सर्वप्रथम विद्यालय में विगत दो वर्षों का लेखा जोखा के साथ विद्यालय विकास पर चर्चा की गई। इस दौरान विद्या भारती मेदिनीनगर प्रमंडल निरीक्षक नीरज लाल ने विद्यालय में कराए गए विकास कार्यों की सराहना की। इसके साथ ही उन्होंने पुरानी समिति की उपस्थिति में दो वर्षीय विद्यालय प्रबंधन समिति का गठन किया जिसमें सर्वसम्मति से पुनः रामविचार साहू को अध्यक्ष, विनोद प्रसाद को उपाध्यक्ष, प्रमोद मेहता को सचिव, अक्षयवट वैद्य को उपसचिव, गोपाल विश्वकर्मा को कोषाध्यक्ष, ब्रजेंद्र कुमार सिंह व नंदकुमार प्रजापति को संरक्षक, महेंद्र विश्वकर्मा, गीता देवी, जयमाल प्रसाद, निरंजन प्रसाद, विजय गुप्ता, राकेश सिंह, कुमार सूर्या को सदस्य बनाया गया। इस मौके पर विद्यालय के प्रधानाचार्य मनोज कुमार गुप्ता, धनंजय विश्वकर्मा, अरविंद प्रताप सैंगर सहित दर्जनों लोग उपस्थित थे।

डीसी ने सुखाल्दारी पर्यटक स्थल का किया अवलोकन

नवीन मेल संवाददाता। धुरकी
जिला के उपायुक्त सेखर जमुवार आज धुरकी प्रखंड के कपूर्री ठाकुर पर्यटन स्थल सुखलदरी का भ्रमण सपतनीक किया तथा सुखलदरी झरना स्थल की प्राकृतिक सोंदर्य को देखकर मंत्रमुग्ध हो गये। झरना स्थल की तारीफ करते हुए उन्होंने सुखलदरी के विकास के लिए राज्य सरकार को प्रस्ताव भेजने की बात कही। उपायुक्त ने धुरकी बीडीयो अरूण कुमार सिंह तथा प्रखंड के सभी मुखिया के साथ बैठक कर सरकार के योजनाओं की समीक्षा की। उन्होंने सभी से जनता के प्रति जबाबदेह तथा उत्तरदायी होने के प्रति आगाह किया। बैठक में थाना प्रभारी सदानंद कुमार तथा पुलिस बल के दर्जनों जवान तथा बीडीओ अरूण कुमार सिंह उपायुक्त के कार्यक्रम को लेकर काफी संजीदा थे। इससे पूर्व कांग्रेस जिला अध्यक्ष ओबैदुलाह अंसारी ने उपायुक्त को बुके देकर स्वागत किया।

जोरदार बारिश में खपरैल घर क्षतिग्रस्त

नवीन मेल संवाददाता। केतार
शनिवार की रात्रि में हुई जोरदार बारिश से चांदडीह गांव निवासी ऊषा देवी पति लालमणि सिंह का मिट्टी का खपरैल घर गिर कर क्षतिग्रस्त हो गया, जिससे पूरा परिवार बेघर हो गया है। ऊषा देवी ने बताया कि घर गिरने से खाने पीने की समाग्री, अनाज, बिछावन सहित अन्य समाग्री मिट्टी से दब गई है। उन्होंने बताया कि हमलोग काफी गरीब परिवार से हैं। इस वजह से हमलोग आवास निर्माण कराने में सक्षम नहीं है। उन्होंने प्रखंड विकास पदाधिकारी सह अंचलाधिकारी मुकेश मछुआ से मुआवजा व पीएम आवास योजना का लाभ देने की मांग की है।

वज्रपात की चपेट में आने से युवती की मौत

गढ़वा। गढ़वा थाना क्षेत्र के प्रतापपुर में वज्रपात की चपेट में आने से खैरूलवारा खान की पुत्री शमीमा खातून की मौत हो गई। घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। घटना के संबंध में परिजनों ने बताया कि शमीमा घर में काम कर रही थी उसी दौरान हल्की बारिश के बीच वज्रपात हो गई, जिसमें शमीमा बेहोश हो गई। गंभीर स्थिति में अस्पताल ले जाने के दौरान उसकी मौत हो गई। सदर अस्पताल पहुंचने पर चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना मिलने पर सदर अस्पताल पहुंचे जेएमएम के प्रखंड अध्यक्ष फुजैल अहमद ने बताया कि मृतक के परिजनों को हरसंभव मदद की जाएगी। आपदा प्रबंधन से लाभ भी उन्हें उपलब्ध कराया जाएगा।

संक्षिप्त

मुखिया ने श्राद्ध कर्म में किया सहयोग

केतार। केतार बाजार निवासी जोखन चौधरी के माता के निधन पर मुखिया प्रमोद कुमार ने रविवार को उनके घर जाकर शोक व्यक्त किया और ढांढस बढ़ाया। उन्होंने मृतक के श्राद्ध कर्म के लिए आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराई। इस मौके पर मुखिया प्रमोद कुमार ने कहा कि जोखन चौधरी का मृत्यु पूर्व में हो चुका है और अब उनकी मां की मृत्यु हो गई है।ऐसे में घर मे विधवा महिला का कोई सहारा नही है इसको देखते हुए ,चावल,आटा, रिफाइन तेल,चीनी ,इत्यादि भोज की सामग्री दी है । ताकि स्व. जोखन चौधरी की माँ की श्राद्धकर्म उनकी विधवा पत्नी कर सकें।

बीएलओ का एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित

खरौंधी (गढ़वा)। प्रखंड कार्यालय के सभागार में प्रखंड अंतर्गत मतदान केंद्र संख्या 01 से 48 तक के बीएलओ व बीएलओ पर्यवेक्षकों को बीएलओ एप संचालन सबंधी प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में उपस्थित बीएलओ एवं पर्यवेक्षक को प्रखंड विकास पदाधिकारी गणेश महतो एवं कम्प्यूटर ऑपरेटर मितेश पांडेय ने प्रशिक्षण दिया। बीडीओ ने सभी बीएलओ को अपने मोबाइल के माध्यम से मतदान केंद्र में उपलब्ध न्यूनतम सुविधाओं को अपडेट करने तथा मतदाताओं के सत्यापन हेतु डोर टू डोर जाने का निर्देश दिया। उन्होंने बीएलओ एप के माध्यम से सभी योग्य व्यक्तियों का नाम मतदाता सूची में जोड़ने के लिये प्रपत्र 6 भरने का निर्देश दिया। आधार सीडिंग के लिए 6इ प्रपत्र भरने, मृत या स्थानांतरित मतदाताओं के लिए प्रपत्र 7 भरने, नाम, आयु आदि के सुधार हेतु प्रपत्र 8 भरने की विस्तृत जानकारी दी गई। प्रशिक्षण में जीपीएस उमेश कुमार, बीएलओ सुनैना देवी, पूनम देवी, करिश्मा बानो, उर्मिला देवी, ममता देवी, हेमवती देवी, मिना देवी, मधु देवीकिरण देवी, नीतू देवी, संध्या देवी सहित सभी बीएलओ व बीएलओ पर्यवेक्षक उपस्थित थे।

धर्म-कर्म: जीयर स्वामी पाल्हे जतपुरा में कर रहे प्रवास

भव्य व दिव्य होगा गुरु पूर्णिमा महोत्सव

नवीन मेल संवाददाता। श्री बंशीधर नगर
विंध्य क्षेत्र में अवस्थित श्री बंशीधर धाम के पाल्हे जतपुरा ग्राम में इस वर्ष परिव्राजक संत लक्ष्मी प्रपन्न जीयर स्वामी महाराज के सानिध्य में गुरु पूर्णिमा महामहोत्सव का भव्य और दिव्य आयोजन होगा। जीयर स्वामी इस बार वैष्णव भक्तों के अनुरोध पर अपने चातुर्मास्य व्रत हेतु पांच माह तक विंध्य क्षेत्र में अवस्थित पाल्हे जतपुरा ग्राम, श्री बंशीधर नगर की पुण्य धरा पर प्रवास कर रहे हैं। उत्तम तप के विग्रह स्वरूप स्वामीजी महाराज जो अपनी ओजपूर्ण वाणी एवं दृष्टांत पूर्ण कथा शैली से गुरु परंपरा को आगे बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर यज्ञ स्थल पर स्वामी जी के दर्शन के लिए भीड़ उमड़ पड़ती है। बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ समेत देश के विभिन्न प्रदेशों से शिष्यों का आगमन शुरू हो गया है। यज्ञ समिति की ओर से श्रद्धालुओं के लिए प्रवास एवं प्रसाद आदि की समुचित प्रबंध की गयी है। उल्लेखनीय है कि झारखंड राज्य की धरती पर पहली बार पूज्य जीयर स्वामी के सानिध्य में समतामूर्ति संत भाष्यकार रामानुजाचार्य स्वामी का सहस्त्राब्दी जयंती स्मृति महामहोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इसके अंतर्गत 25 अलग-अलग यज्ञ मंडपों में 1051 कुंडात्मक श्रीलक्ष्मी नारायण महायज्ञ, अनेक धार्मिक अनुष्ठान, अंतर्राष्ट्रीय धर्म सम्मेलन एवं अंतर्राष्ट्रीय भजन संध्या का भी आयोजन होगा। ध्यातव्य है कि यज्ञ स्थल पर ही श्री लक्ष्मी नारायण महायज्ञ के समापन होने पर स्वामी के द्वारा वैष्णव मंत्र प्रदान किया जाता है, जिसमें हजारों की संख्या में दीक्षा ग्रहण कर श्रद्धालु वैष्णवता के मार्ग को अंगीकार करते हैं।

मारपीट में चार घायल

नवीन मेल संवाददाता। गढ़वा
बरडीहा थाना क्षेत्र के सालगा गांव में भूमि विवाद को लेकर हुई मारपीट की घटना में चार महिला घायल हो गई। घायलों में जगदीश यादव की पत्नी सारधा देवी, इंद्रदेव यादव की पत्नी, सविता देवी, भरत यादव की पत्नी राजमुनि देवी, एवं शंभू यादव की पत्नी सरस्वती देवी के नाम शामिल हैं। सभी को इलाज के लिए गढ़वा सदर अस्पताल में भर्ती किया गया है। घटना के संबंध में उक्त घायलों ने आरोप लगाया है कि नरेश यादव उसके भूमि को अपना भूमि बता कर उसी भूमि में बीहन कर रहा था। जानकारी मिलने के बाद इसका विरोध किया तो नरेश यादव, मंगरु यादव, राजेश यादव, कामेश्वर यादव, बुधन यादव आदि ने मिलकर लाठी डंडे से मारपीट की।

पत्नी से कहासुनी पर युवक ने जहर खाकर दी जान

गढ़वा। बंशीधर नगर थाना क्षेत्र के बंशीधर नगर गांव निवासी राधेश्याम राम का पुत्र सूरज कुमार ने कीटनाशक खाकर जान दे दी। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। घटना के संबंध में परिजनों ने बताया कि सूरज की पत्नी मायके गई हुई थी। फोन से ही उक्त दोनों के बीच कहासुनी हुई, जिसके बाद सूरज ने कीटनाशक खा लिया। उसे बंशीधर नगर अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां से बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल रेफर कर दिया गया, लेकिन रास्ते में उसकी मौत हो गई।

झारखंड के लातेहार में शिक्षा व्यवस्था का आलम

एक ऐसा सरकारी स्कूल, जहां 350 बच्चे एक साथ बैठ कर पढ़ाई करने को मजबूर

नवीन मेल संवाददाता। लातेहार
सरकारी शिक्षा का स्तर कैसा होता है ये बात किसी से छिपा नहीं है। शिक्षा व्यवस्था बदहाल होने की कई वजहें हैं। इनमें से सबसे ज्यादा दिक्कत बुनियादी और ढांचागत संरचना की है। झारखंड के लातेहार में शिक्षा व्यवस्था का आलम भी कुछ ऐसा ही है। दरअसल, बालूमाथ प्रखंड मुख्यालय स्थित राजकीय कृत प्लस टू उच्च विद्यालय में कुल 17 कमरे हैं और हर कमरे में एक बार में 100 बच्चों के बैठने की क्षमता है, लेकिन 3500 बच्चों का नामांकन हुआ है। ऐसे में कमरों के अभाव में बच्चे स्कूल की फील्ड में पढ़ाई करने को मजबूर हैं।

बता दें कि उन्हीं 17 कमरों में से चार छोटे कमरे को स्कूल का ऑफिस भी बनाया गया है। वहीं अन्य एक कमरा लाइब्रेरी के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। दरअसल, कमरों के हिसाब से स्कूल में 1000 बच्चों के ही बैठने की क्षमता है। साल 2023-24 में 9वीं कक्षा में 397 बच्चों का नामांकन हुआ है, जबकि 10वीं में 457, 11वीं में 1,200 बच्चों का एडमिशन हुआ है। वहीं 12वीं के बच्चों को मिलाकर कुल 3,500 बच्चे वर्तमान में अध्ययनरत हैं।

एक साथ 350 बच्चे बैठते हैं : इस स्कूल में एक कक्षा को चलाने के लिए तीन सेक्शन बनाए गए हैं। नौवीं क्लास में तीन सेक्शन है, जिनमें प्रत्येक सेक्शन में 200 बच्चे बैठते हैं। वहीं दसवीं क्लास में भी तीन सेक्शन बनाए गए हैं और एक सेक्शन में 200 बच्चों को बैठाया जाता है, जबकि 11वीं कक्षा में आर्ट्स में तीन सेक्शन बनाए गए हैं और एक सेक्शन में 350 बच्चों को बैठाया जाता है। वहीं साइंस और कॉमर्स में एक-एक सेक्शन बनाकर किसी तरह से स्कूल संचालित किया जा रहा है।

प्रिंसिपल ने क्या कहा? : बता दें कि बालूमाथ प्रखंड का मदर विद्यालय कहे जाने वाले इस स्कूल में खेलने के लिए एक बड़ा मैदान भी है। इस मैदान में बालूमाथ के सभी तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। यहां कई पदाधिकारी वह नेता का आवागमन होते रहता है फिर भी किसी भी पदाधिकारी व नेता का इस विद्यालय पर कोई ध्यान नहीं है। वहीं 3,500 नामांकन वाले विद्यालय में मात्र 17 कमरा एवं 17 शिक्षक के भरोसे विद्यालय को चलाया जा रहा है। स्कूल की प्रिंसिपल रूबी बानो ने कहा कि सरकार द्वारा जो संसाधन उपलब्ध कराया गया है इसी संसाधन के तहत विद्यालय में पठन-पाठन का कार्य कराया जा रहा है।

झारखंड मुक्ति मोर्चा के सिद्धांतों को अपनाने की जरूरत : तिवारी

नवीन मेल संवाददाता। बरवाडीह
झारखंड मुक्ति मोर्चा जिला कमेटी के निर्देश पर जेएमएम नेता शशि भूषण तिवारी के नेतृत्व में प्रखंड के विभिन्न पंचायतों में सदस्यता अभियान चलाया गया। सदस्यता अभियान में तिवारी ने कहा कि झामुमो ही राज्य के जनता की एकमात्र हितैषी पार्टी है। झामुमो पार्टी क्षेत्र के विकास के संकल्प के साथ सत्ता में आई है और अंतिम व्यक्ति तक विकास की रोशनी पहुंचाने का कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि राज्य के लोकप्रिय मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने जनता के दुख दर्द को दूर करने का बीड़ा उठाया और इसे दूर करने का पूरा प्रयास कर रही है। ऐसे में सभी लोग ईमानदारी पूर्वक झारखंड मुक्ति मोर्चा के साथ अधिक से अधिक संख्या जुड़ें। वहीं उन्होंने लोगों को झारखंड मुक्ति मोर्चा की नीति एवं सिद्धांत के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी। जेएमएम नेता ने कहा कि प्रखंड के विभिन्न पंचायतों में 30, 000 से अधिक लोगों को झारखंड मुक्ति मोर्चा का सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा गया है जो जल्द ही पूरा कर लिया जाएगा। मौके पर जेएमएम नेता सह बीस सूत्री सदस्य महबूब आलम, मकसूद आलम, मंजर अंसारी, मोहम्मद आबिद अली, तबरेज अंसारी, आबिद अंसारी, मोहम्मद फैयाज, जहांगीर अंसारी समेत अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे।

सीएमओएएल शाखा की बैठक में लिए कई निर्णय

नवीन मेल संवाददाता। बालूमाथ
कोयला अधिकारियों का संगठन शाखा कार्यकारिणी समिति की बैठक माइंस रेस्क्यू स्टेशन रामगढ़ में रविवार को संगठन सीसीएल शाखा के अध्यक्ष दीनानाथ सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई। जानकारी देते हुए तेतरिया माइंस पीओ कन्हैया लाल यादव ने बताया कि बैठक में गैर अधिकारी वर्ग को एनसीडब्ल्यूए-क में 19 प्रतिशत न्यूनतम प्रदत लाभ दिए जाने के कारण अधिकारी वर्ग में उत्पन्न वेतन विसंगति के संबंध में चर्चा की गई। बैठक में अधिकारी वर्ग के वेतन वृद्धि पर खुशी जाहिर करते हुए अध्यक्ष सिंह ने कहा कि डीपीई भारत सरकार के दिशा निर्देशों का अनुपालन करते हुए अधिकारी वर्ग के वेतन विसंगति को कोयला मंत्रालय तथा कोल इंडिया प्रबंधन द्वारा यथाशीघ्र दूर किया जाय। इसके लिए पत्र के माध्यम से कोल इंडिया

वेतन विसंगति दूर नहीं होने पर आंदोलन की चेतावनी

प्रबंधन को वेतन विसंगति को 15 दिनों के अंदर दूर करने की मांग पत्र के माध्यम से की गई है। कहा कि समय पर मांगे पूरी नहीं होने की स्थिति में हम संगठित होकर आंदोलन का रास्ता अपनाएंगे। मौके पर संगठन का सीसीएल के अध्यक्ष, सचिव तथा कोषाध्यक्ष ने भी बैठक को बारी-बारी से संबोधित किया। कहा कि अगर हमारी मांगें पूरी नहीं होती है तो संगठन के केंद्रीय नेतृत्व का जैसा निर्देश होगा उसे अमल कर चरणबद्ध आंदोलन किया जाएगा। मौके पर संगठन की एकजुटता पर बल दिया गया तथा प्रबंधन को कड़ी चेतावनी दी गई कि हम अधिकारियों को हल्के में न लिया जाए। मौके पर उपरोक्त लोगों के अलावे संगठन के कई पदाधिकारी उपस्थित रहे।

मैट्रिक में उत्कर्ष करने वाले बच्चे सम्मानित

नवीन मेल संवाददाता। इटखोरी(चतरा)
जिले के इटखोरी प्रखंड अंतर्गत की पितीज में उत्कर्ष ज्ञान कोचिंग सेंटर के द्वारा रविवार को प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसका बतौर मुख्य अतिथि जिला परिषद उपाध्यक्ष बिरजू तिवारी, विशिष्ट अतिथि सदर प्रखंड विकास पदाधिकारी गणेश रजक, डीएसपी केदार नाथ राम, भाजपा नेता सतीश सिंह, राजद महिला मोर्चा प्रदेश उपाध्यक्ष प्रियंका वर्मा, रूबी देवी, कुसुम देवी, शिक्षक सुदर्शन दुबे, सेंटर के संचालक मंजीत आर्य आदि ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। अतिथियों को तिलक लगाकर व गुलदस्ता देकर स्वागत किया गया।

इसके उपरांत 2023 के 10 वीं परीक्षा में कोचिंग सेंटर के 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को प्रतिभा

सम्मान समारोह में सम्मानित किया गया। टॉपर किए गए छात्र-छात्राओं को मेडल, प्रपत्र तथा नगद पुरस्कार दिया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिप उपाध्यक्ष ने उत्कर्ष ज्ञान कोचिंग सेंटर को एक कंप्यूटर सेट देने की घोषणा की। साथ हीं उन्होंने आगे कहा कि इस कंप्यूटर सेट से सेंटर के सभी छात्र-छात्राएं निःशुल्क शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि टॉपर निशा कुमारी व अन्य छात्रों द्वारा इस कंप्यूटर के द्वारा अन्य छात्रों को शिक्षा देना है। सदर बीडीओ रजक ने कहा है कि पहले की अपेक्षा लड़कों से ज्यादा लड़कियां शिक्षा पर ध्यान दे रही हैं। वहीं अन्य अतिथियों ने शिक्षा पर जोर दिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सेंटर के संचालक के साथ रूपेश रंजन, कृष्णा कुमार, डब्लू कुमार केसरी, अखिलेश यादव, सुनील दास, रवीना कुमारी, अनामिका कुमारी समेत अन्य शिक्षक व शिक्षिकाओं ने भूमिका निभाया।

कोल परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहण का विरोध

नवीन मेल संवाददाता। टंडवा
एनटीपीसी के चट्टी बारियातु कोल परियोजना क्षेत्र में पड़ने वाले टंडवा प्रखंड क्षेत्र के सनहा स्थित उत्क्रमित विद्यालय में ग्रामीणों ने रविवार को बैठक कर औने-पौने दाम में प्रबंधन द्वारा भूमि अधिग्रहण के प्रयास का कड़ा विरोध किया। बताया गया कि कंपनी महज 8 लाख रुपए प्रति एकड़ के दर से प्रस्तावित लगभग 211 एकड़ जमीन अधिग्रहण करने को लेकर कुछ बिचौलियों के माध्यम से ग्रामीणों को गुमराह कर रही है। बैठक में सर्वसम्मति से गुमराह करने वाले शामिल संलिप्तों को कड़ी चेतावनी देते हुए रैयतों ने अपनी जमीनों को देने से इंकार किया है। मौके पर रुपु महतो, निलेश्वर महतो, रोहन महतो, अशोक महतो, प्रकाश महतो, दीपनारायण महतो, देवन्ति देवी, किरण देवी, पालको देवी, दुलारी देवी समेत दर्जनों महिला-पुरुष मौजूद थे।

टोरी आरओबी निर्माण के शिलापट्ट का आज सतैईसा पूजा करेंगे ग्रामीण

नवीन मेल संवाददाता। चंदवा
टोरी फ्लाई ओवरब्रिज निर्माण के शिलापट्ट का सतैईसा पूजा कार्यक्रम 03 जुलाई सोमवार समय 10 बजे आयोजित की गई है। इस आशय की जानकारी कामता पंचायत समिति सदस्य अयुब खान ने एक प्रेस वक्तव्य जारी कर दी है। उन्होंने बताया कि दिनांक 03 अप्रैल 2021 को फ्लाई ओवर ब्रिज निर्माण के लिए शिलान्यास किया गया था। लेकिन 27 महिना हो गया फिर भी इसका निर्माण कार्य शुरू नहीं हो पाया है। ब्रिज का निर्माण कार्य शुरू नहीं होने से ग्रामीण शिलापट्ट का सतैईसा पूजा कार्यक्रम पुरे विधि विधान से करेंगे। उन्होंने आगे कहा की निर्माण कार्य शुरू

निर्माण कार्य में विलंब होने पर ग्रामीणों ने अपनाया नाराजगी जताने का अनोखा तरीका

होने में जिस तरह 27 माह विलंब हो गया है इससे शंका है कि किसी की बुरी नजर फ्लाई ओवर ब्रिज के शिलापट्ट और इस परियोजना पर लग गई है इस लिए निर्माण कार्य शुरू नहीं हो पा रहा है। सतैईसा कार्यक्रम कर शिलापट्ट से बुरी नजर को भगाया जाएगा ताकि बुरी नजर के कारण कार्य शुरू नहीं हो पा रहा है तो कार्य शुरू हो सके।

रजिस्टर 2 में छेड़छाड़, रैयतों ने लगाई न्याय की गुहार

नवीन मेल संवाददाता। मयूरहंड
मयूरहंड प्रखंड क्षेत्र के करमा पंचायत अंतर्गत चौथा मौजा के रजिस्टर 2 में छेडछाड किए जाने का मामला उजागर हुआ है। पंदनी पंचायत अंतर्गत पचघारा के मूल रैयत के वंशजों ने दावा करते हुए बताया की हम सभी खेवट नंबर 5/2 एवं 5/3 के खेवटदार के वंशज हैं। उक्त करनामे का उजागर तब हुई जब सभी रैयतों ने मालगुजारी रसीद निर्गत कराने अंचल कार्यालय पहुंचे तो रजिस्टर 2 में छेडछाड़ पाई गई। पीड़ित रैयतों ने रेवेन्यू सचिव, रांची, उपायुक्त चतरा, अपर समाहर्ता चतरा, उप समाहर्ता चतरा एवं अंचल अधिकारी मयूरहंड को आवेदन देकर न्याय की गुहार लगाई है। खेवट नंबर 5/2 दशरथ सिंह तथा 5/3 बिहारी सिंह पिता भुली सिंह के नाम से दर्ज है। दोनों की खाता संख्या 25.26.27. एवं 28 रकबा 4 एकड 95 डिसमील है। इसका रसीद वर्ष 1954-55 से अंचल कार्यालय द्वारा पदारथ सिंह एवं रघुनंदन सिंह के नाम से निर्गत होते आ रहा था। इनके वंशज यशवंत सिंह, विजय सिंह, नित्यानंद सिंह, प्रदीप सिंह, रामखेलावन सिंह, अशोक सिंह, साधू शरण सिंह, सत्यानंद सिंह, बिरेंद्र सिंह, अनंत सिंह एवं करुणाकर सिंह सभी चौथा मौजा के रैयत अंचल कार्यालय पहुंचे तो राजस्व कर्मी द्वारा खाता लॉक बताया गया। वहीं खाता 28 के जमीन का नया जमाबंदी खोल दिया गया।

धोती, साड़ी व पठन सामग्री का वितरण

नवीन मेल संवाददाता। बरवाडीह
जिला में संचलित वंदे मातरम निष्काम कर्म योग साधना द्वारा रविवार को प्रखंड लात पंचायत के ग्राम टोंगारी खरवार टोला में नारायण सेवा समिति सतबरवा ट्रस्ट द्वारा जरूरतमंदों के बीच में कॉपी, कलम, साड़ी धोती वस्त्र का वितरण किया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में जरूरतमंद लोगों के बीच लगातार नारायण सेवा समिति ट्रस्ट की अध्यक्ष निर्दोष कुमार द्वारा कई लोगो के सहयोग से ग्रामीण क्षेत्रों में लगातार जरूरतमंद लोगों के बीच सामानों के वितरण किया जा रहा है। नारायण सेवा समिति के अध्यक्ष निर्दोष कुमार द्वारा गांव के खरवार टोला में 100 से अधिक जरूरतमंद छोटे-छोटे स्कूली बच्चों, वृद्ध व असहाय लोगों के बीच कॉपी,

कलम, धोती साड़ी वस्त्र आदि सामानों का वितरण किया गया। नारायण सेवा समिति को मनिका के व्यवसाय अजय वस्त्रलोक और श्याम वस्त्रलोक के द्वारा बहुत सारे कपड़े वितरण हेतु उपलब्ध कराया गया था। समिति के अध्यक्ष निर्दोष कुमार ने कहा कि समाज के कई संपन्न लोगों द्वारा नियमित रूप से इसी तरह जरूरतमंद लोगों के बीच वितरण करने हेतु समान उपलब्ध कराया जा रहा है जिसे जिले के कई क्षेत्रों में वितरण कर जरूरतमंद लोगों को मदद पहुंचाया जा रहा है। मौके पर शंकर सिंह, सुरेंद्र भुइंया, जितेंद्र सिंह, रमेश सिंह, राजेंद्र सिंह, संजय दासी, जीतू लोहरा मुख्य रूप से उपस्थित थे।

पहल मुंबई की ब्लैक स्क्रीन कंपनी के बैनर तले होगा वेब सीरीज का निर्माण

चंदवा के शिक्षक की उपन्यास पर बनेगी वेब सीरीज

नवीन मेल संवाददाता। चंदवा
प्रखंड के अति सुदूरवर्ती क्षेत्र चेटर पंचायत के रखात गांव के रहने वाले युवक विनीत कुमार ने अपने गांव और चंदवा जैसे छोटे जगह का नाम रौशन करने काम किया है। पेशे से शिक्षक विनीत कुमार के द्वारा अबतक सात किताबें लिखी जा चुकी है। इनके लिखे किताबों के कहानी संग्रह में कुसुम, सरई फुल, वनस्थली, जबकि उपन्यास में एक नक्सली का मौन प्रेम, माटी, एक आतंकवादी की प्रेम कथा और पुष्पी शामिल हैं। उनकी किताब वनस्थली हाल ही में प्रकाशित हुई है। शिक्षक विनीत फिलहाल चंदवा प्रखंड के महुआमिलान स्कूल में एक शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं।

विनीत कुमार के द्वारा जानकारी देते हुए बताया गया कि उनकी लिखी गई उपन्यास पुष्पी, पर मुंबई की ब्लैक स्क्रीन नामक कंपनी वेब सीरीज बनाने वाली है जिसको लेकर कंपनी के साथ करार भी हो गया है। मेरे द्वारा

लिखी गई किताब पर वेब सीरीज बनेगी यह मेरे लिए किसी सपने से कम नहीं था। किताबें लिखने के मेरे शौक ने मुझे आज इस मुकाम तक पहुंचाया है। वेब सीरीज की कथा है एक गाँव की जिसके केंद्र में पुष्पी नाम की एक ग्रामीण लड़की है । कथा प्रारंभ होती है गांव के चार लंगोटिया दोस्तों से जिनकी दोस्ती का मिसाल गांव के बाहर भी दिए जाते थे। विपरीत परिस्थितियों में इन दोस्तों के बीच प्रेम और ईर्ष्या जैसी मानव्य संवेदनाएं भी देखने को मिली और दोस्ती की पराकाष्ठा भी देखी गई, जहां कन्हाई नामक युवक ने अपना सब कुछ न्योछावर कर दोस्ती की मिसाल पेश की और अंततः वैराग्य धारण कर देश सेवा में समर्पित हो गया। रघु, कन्हाई और पुष्पी इन तीनों के बीच त्रिकोणीय प्रेम संबंध की कथा है यह उपन्यास। चार लंगोटिया यार जिसमें पूरनचंद और हासिब मियां संपन्न हैं तथा रघु और कन्हाई काफी गरीब हैं। दसवीं कक्षा के बाद पढ़ाई के प्रति उनकी रुचि एवं लगन ऐसी थी कि दो के खर्चे पर ही चारों दोस्त साथ शहर जाकर पढ़ने लगे। गरीब परिवार का रघु जब पढ़ाई में अव्वल आया तो संपन्न दोस्त पूर्णचंद और हासीब मियां के छाती पर सांप लोट गया, जिसके खर्चे पर रघु और कन्हाई पलते थे और पढ़ते थे। शिक्षक विनीत कुमार ने कहा कि मुझे उम्मीद है कि जब मेरी लिखी किताब 'पुष्पी' पर बनने वाली वेब सीरीज को लोग देखेंगे तो उन्हें बहुत पसंद आएगा।

फांसी के फंदे पर लटक कर विवाहिता की मौत जांच में जुटी पुलिस

चंदवा। थाना क्षेत्र अंतर्गत बरवाटोली पंचायत के हेसालोंग गांव में एक विवाहिता की मौत घर में ही फांसी के फंदे पर लटककर हो गई। मृतका की पहचान हेसालोंग निवासी धीरज मुंडा की पत्नी कलावती देवी के रूप में की गई है। पुलिस ने शव को अंत्यपरीक्षण हेतु लातेहार भेज दिया। महिला की मौत आत्महत्या है या हत्या पुलिस ने दोनों पहलुओं पर जांच पड़ताल शुरू दी है। घर वालों ने बताया कि रात में सभी खाना खाकर सोने चले गए, सुबह हमने देखा कि कलावती का शव फंदे के सहारे झूल रहा है। घटना की सूचना गांव वालों को दी। फिर पुलिस को। मृतका का मायका लोहरदगा जिले के सेन्हा प्रखंड के जोगना में है। पति धीरज मुंडा बीते 2 मई को लाधुप पंचायत के हेसला गांव में घटित ओझागुनी का आरोप लगाकर बुजुर्ग दंपती की हत्या मामले में लातेहार मंडलकारा में बंद है।

'अंधविश्वास फैलाने वालों पर होगी कड़ी कार्रवाई'

नवीन मेल संवाददाता। लातेहार
जिला में डायन बिसाही अंधविश्वास का मामला चरम सीमा पर है। बात-बात पर लोग गांव के महिलाओं को आसानी से डायन बिसाही का अंधविश्वास फैला कर इनको प्रताड़ित कर रहे हैं। यहां तक कि निर्मम हत्या करने से भी बाज नहीं आ रहे हैं। गांव पंचायत में ओझा गुणी भगत के नाम पर कुछ लोग दुकान खोल कर बैठ गए हैं। कुछ समस्या को लेकर जब ग्रामीण इनके दुकान में जाते हैं तो वे लोगों से मुर्गी, खस्सी, चेग्ना, पैसा की मांग करते हैं। लोग उनकी मांग को आसानी से पूरा कर देते हैं। उनकी बातों में आसानी से फस जाते हैं। उनके दिमाग में डाल दिया जाता है कि आपके गांव के ही महिला आपके साथ जादू मंतर कर रही है। वे बिना सोचे समझे ही महिलाओं को प्रताड़ित कर हत्या को अंजाम दे दिया जाता है। इसकी रोकथाम को लेकर जिला प्रशासन द्वारा अब प्रत्येक पंचायत में मुखिया, पंचायत समिति, उप मुखिया के उपस्थिति में ग्रामीणों के बीच जागरूकता शिविर का आयोजन किया जाएगा ताकि लोगों के दिमाग में जो डायन बिसाही का अंधविश्वास बन गया है उसको दूर किया जा सके। होने वाली घटनाओं पर रोक लगाई जा सके।

क्या कहते हैं थाना प्रभारी : थाना प्रभारी आशुतोष कुमार ने बताया कि डायन बिसाही अंधविश्वास को दूर करने के लिए जिला प्रशासन के द्वारा बैठक कर जागरुकता अभियान चलाया जाएगा ताकि उनके दिलों में बैठे अंध विश्वास को दूर किया जा सके। इसके बाबजूद भी किसी के द्वारा अंध विश्वास फैलाने का काम किया जाता है तो उसके खिलाफ कानूनी करवाई की जाएगी।

मंत्री उरांव व सांसद साहू ने किया 31 धुमकुड़िया भवन का शिलान्यास

सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक केंद्र है धुमकुड़िया : रामेश्वर उरांव

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा
भंडरा प्रखंड में रविवार को विधायक सह मंत्री डॉ रामेश्वर उरांव एवं राज्यसभा सांसद धीरज प्रसाद साहू ने संयुक्त रूप से 31 धुमकुड़िया भवन का शिलान्यास किया। मौके मंत्री डॉ रामेश्वर उरांव ने कहा कि धुमकुड़िया हमारी सामाजिक केंद्र, धार्मिक केंद्र और सांस्कृतिक केंद्र है। क्षेत्र भ्रमण के दौरान लोहरदगा जिले में धुमकुड़िया भवन, सांस्कृतिक केंद्र, अखड़ा,की कमियों को देखते हुए हमने संस्कृति एवं परम्परा को आधुनिक युग में कैसे महत्वपूर्ण बनाया जाए इस पर कार्य किया है। फल स्वरूप आज 31 धुमकुड़िया भवनों का शिलान्यास किया गया। इसके साथ - साथ विधायक निधि से लोहरदगा जिले के हर एक गांव में आदिवासी परम्परा एवं त्योहारों को संरक्षित करने के लिए अखड़ा का निर्माण कर रहे हैं ताकि भावी पीढ़ी सांस्कृतिक परिवेश में जीवन व्यतीत करें और आधुनिक काल में हम अपने परंपरा एवं संस्कृति को न भूलें। समय-समय पर सभी प्रखंडों में जनसुनवाई कार्यक्रम के माध्यम से जनता की समस्याओं का

समाधान किया जा रहा है। प्राथमिकता के आधार पर क्षेत्र के सभी समस्याओं का समाधान किया जाएगा। समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास कार्य को पहुंचाया जाएगा। मौके पर रोहित उरांव, जिलाध्यक्ष सुखेर भगत, विधायक सह मंत्री प्रतिनिधि निशीथ जयसवाल, जिप अध्यक्ष रीना कुमारी, जिप सदस्य सुखदेव उरांव, जिप सदस्य राधा देवी, बीस सूत्री अध्यक्ष डोमना उरांव, प्रखंड अध्यक्ष जुगल भगत, युवा जिलाध्यक्ष विशाल डुंगडुंग, हाजी सिकंदर अंसारी, चंद्रशेखर भगत, शंभू प्रजापति, बबलू खान, देवनाथ उरांव, संजय नायक, तारिक खान, मुशर्रफ रजा, विजय उरांव, हरिदास भगत, काले उरांव, बिरसू भगत, असलम अंसारी, जफर इकबाल, मंसूर अंसारी, फगुआ उरांव आदि उपस्थित थे।

धुमकुड़िया भवनों का निर्माण होना आदिवासी भाई बहनों के लिए गौरवपूर्ण बात : राज्यसभा सांसद धीरज प्रसाद साहू ने कहा कि गठबंधन की सरकार आदिवासी भाई बहनों के हितों के लिए कार्य करने में तत्पर है। कल्याण विभाग के माध्यम से जिले में धुमकुड़िया भवनों का निर्माण होना आदिवासी भाई बहनों के लिए गौरवपूर्ण बात है। इससे सांस्कृतिक महत्व को बढ़ावा मिलेगा। स्थानीय विधायक डॉ रामेश्वर उरांव के प्रयास से लोहरदगा जिले में आदिवासी संस्कृति कला केंद्र का निर्माण किया जा रहा है, और जगह जगह आदिवासी मसना घेराव,एवं कब्रस्तान का भी घेराव कराया जा रहा है। हमारा प्रयास है कि लोहरदगा जिले में विकास कार्य तेजी से हो और यहां की जनता खुशहाल रह सके।

मनोरंजन कार्यक्रम के तौर पर खिलाड़ियों के बीच दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा
जिला प्रशासन द्वारा ललित नारायण स्टेडियम में संचालित पुलिस/आर्मी/एथलेटिक प्रशिक्षण केंद्र के तत्वधान में रविवार को प्रशिक्षण ले रहे खिलाड़ियों के बीच प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में 100 मीटर, 200 मीटर और 600 मीटर दौड़ का प्रतियोगिता मनोरंजन कार्यक्रम के तौर पर आयोजन किया गया।

प्रतियोगिता में 14 वर्ष अंडर वर्ग के 100 मीटर प्रतियोगिता में पहला स्थान अनूप उरांव, दूसरा स्थान अक्सराज मिश्रा और तीसरा स्थान पर सूरज कुमार ने बाजी मारी, वही 16 साल आयु वर्ग के 100 मीटर दौड़ में प्रियंका उरांव ने पहला स्थान, दूसरा स्थान रिया कुमारी और तीसरा स्थान पर एंजल तिग्गा ने बाजी मारी, बालक वर्ग में पहला स्थान अभिषेक उज्जवल खेस और दूसरा स्थान अनीश मिंज ने बाजी मारा। 16 वर्ष आयु वर्ग के बालिकाओं की 600 मीटर दौड़ में पहला स्थान संध्या कुमारी, दूसरा स्थान जैस्मिन कुमारी और तीसरा स्थान पर कुसुम कुमारी ने बाजी मारा, वहीं बालक वर्ग के 600 मीटर दौड़ में पहला स्थान नमन उरांव, दूसरा स्थान बसंत उरांव और तीसरा स्थान पर उदित कुमार ने बाजी मारी। खेल में उम्दा प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को मेडल देकर सम्मानित किया गया और उन्हें और अच्छे तैयारी हेतु प्रेरित किया गया। मौके पर खिलाड़ियों को प्रशिक्षण दे रहे पुलिस आर्मी एथलेटिक कोच विनय उरांव ने कहा कि वर्तमान में जिला के उपायुक्त डॉ वाघमारे प्रसाद कृष्ण, एसपी आर राजकुमार तथा अनुमंडल पदाधिकारी अरविंद कुमार लाल के प्रयास से जिला में शिक्षा और खेल के क्षेत्र में जिला के गरीब तथा मध्यम वर्ग से आने वाले विद्यार्थियों तथा खिलाड़ियों के लक्ष्य को दिशा देने हेतु बढ़िया प्लेटफार्म तैयार किए हैं। इस प्लेटफार्म के माध्यम से खेल में रुचि रखने वाले युवाओं के लिए पुलिस/आर्मी/एथलेटिक, क्रिकेट फुटबॉल और कुश्ती से संबंधित निशुल्क प्रशिक्षण की व्यवस्था तथा पढ़ाई में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों के लिए जिला के साथ-साथ सभी ब्लॉक में लाइब्रेरी जैसी सुविधा खोलकर एक अच्छा प्लेटफार्म देने का काम किया जा रहा है। जिससे कि खिलाड़ी और विद्यार्थियों में एक सकारात्मक भावना की सृजन हुई है। वर्तमान में इस प्रशिक्षण के माध्यम से सुबह 05:00 बजे से 6:30 बजे तक पुलिस तथा आर्मी में तैयारी कर रहे लगभग 30 अभ्यार्थी तथा शाम को 04:30 से 06:00 बजे तक 16 साल से कम उम्र के 50 बालक एवं बालिकाओं को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। अभी भी जो खिलाड़ी एथलेटिक्स तथा पुलिस आर्मी की फिजिकल तैयारी करना चाहते हैं वे आ सकते हैं।

बजरंग दल की बैठक में जिला टोली का विस्तार

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा
बजरंग दल लोहरदगा की बैठक फुलवारी राम मंदिर में हुई। बैठक में जिला टोली का विस्तार किया गया। इसमें जिला सहसंयोजक लवकेश राय उर्फ राजा, अखाड़ा प्रमुख चंदन साहू, विद्यार्थी प्रमुख सनी कुमार, गोरक्षा प्रमुख चंदन गोप को बनाया गया। इस बैठक की अध्यक्षता विश्व हिंदू परिषद के जिला मंत्री सतीश पांडे ने की। बैठक में बजरंग दल संयोजक सचिन कुमार, सहसंयोजक उज्जवल कुशवाहा, सुरक्षा प्रमुख उमेश सिंह समेत अन्य उपस्थित थे।

बंद मकान में चोरी करने वाली दो महिला गिरफ्तार

नवीन मेल संवाददाता। सेन्हा
चोरी करने का प्रयास के आरोप पर सेन्हा थाना पुलिस बरही से गिरफ्तार कर दो आरोपी महिला को न्यायिक हिरासत लोहरदगा जेल भेजा। सेन्हा थाना क्षेत्र के बरही में दो महिला बंद मकान में घुस गोदरेज का लॉक खोल ज्वेरात एवं पैसा की चोरी करने का प्रयास कर रही थी। इसकी सूचना पर सेन्हा थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया।

बताया जाता है कि बरही ग्राम निवासी सवीर अंसारी के पुत्र खलील अंसारी के घर में दिनदहाड़े दरवाजा के कुंडी खोल कर घर में दो महिला घुस गई थी। गोदरेज का लॉक खोल कर गहना एवं पैसे की

चोरी करने का प्रयास कर रही थी। तभी घर के सदस्य काम कर लौटा तो घर खुला देख चोर का हल्ला करने लगा तभी आसपास के महिला व पुरुष दोनों महिला को घेर लिया और थाना को घटना की सूचना दिया गया। घटना की सूचना पर पुअनि गणेश कुमार यादव दलबल के साथ बरही ग्राम पहुंच दोनों महिला को पकड़ थाना लाया।

पूछताछ के दौरान गिरफ्तार दोनों महिला अपना नाम पता बताते हुए कही कि डाल्टेनगंज चियांकी मोहसरी टोली निवासी मुना खेरवार के पुत्री संजना कुमारी और मनीष खेरवार के पत्नी कुसुम कुमारी है। चोरी के प्रयास मामले में सेन्हा थाना में कांड संख्या 91/23 दर्ज कर धारा 380,511 भादवी के तहत दोनों आरोपी महिला को लोहरदगा जेल भेज दिया गया। पु अ नि गणेश कुमार यादव ने कहा कि दो महिला को बरही स्थित मकान में चोरी करने के आरोप में जेल भेजा गया है।

लातेहार/चतरा संक्षिप्त

समशुल खान को अधिवक्ता संघ ने दी बधाई

लातेहार। वरीय अधिवक्ता समशुल कमर खान के गवर्नमेंट प्लीडर (जीपी) बनाये जाने पर स्थानीय अधिवक्ताओं ने उन्हें बधाई दी है। अधिवक्ता संघ भवन में अधिवक्ताओं ने उन्हें बुके भेंट किया और बधाई दी। वरीय अधिवक्ता मिथिलेश कुमार सिन्हा ने कहा कि खान के कार्यकाल में यहां के लोगों को न्याय सुलभ होगा और सरकारी दीवानी मुकदमों में सरकार का पक्ष जोरदार ढंग से रखा जा सकेगा। बधाई देने वालों में अधिवक्ता संघ के उपाध्यक्ष पंकज कुमार, संयुक्त सचिव लाल अरविंद नाथ शाहदेव, गणेश प्रसाद, सबिता साहु, नवीन कुमार गुप्ता, अब्दुल सलाम, प्रमोद कुमार पांडेय, रिंकू पांडेय, अश्विनी कुमार, विकास कुमार, मो इरशाद शामिल हैं।

स्थानांतरित माइन इंचार्ज को दी गई विदाई

टंडवा (चतरा)। टंडवा थाना क्षेत्र अंतर्गत मगध कोल परियोजना में कार्यरत माइन इंचार्ज राकेश कुमार को प्रबंधन ने पदोन्नति देते हुए अरगड्डा कोल परियोजना में मैनेजर के तौर पर प्रतिनियुक्त किया है। रविवार को परियोजना कार्यालय में विदाई सह सम्मान समारोह का विधिवत आयोजन कर उन्हें सम्मानित करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की गई। महाप्रबंधक नृपेंद्र नाथ ने उनके सफल कार्यकाल की प्रशंसा किया। इस अवसर पर स्टाफ अधिकारी (सीविल) सुनील मनोहर भास्कर, खान प्रबंधक मोहम्मद अकरम, विक्रय पदाधिकारी दया शंकर ओझा, माइन इंचार्ज संजय कुमार बेहेरा, सेफ्टी ऑफिसर सत्य नारायण प्रसाद, अभियंता (असैनिक) पंकज सरकार, उप प्रबंधक (कार्मिक) असीम प्रकाश, सहायक प्रबंधक (कार्मिक), आकाश वरुण कुल्लु, सहायक प्रबंधक (सर्वेक्षक) छोटेलाल भगत, विद्युत और यांत्रिक विभाग से अजय कुमार सिन्हा, राजेश कुमार, अनिल हेम्ब्रोम, देबब्रता सरकार, वीपीआर रेड्डी आदि मौजूद थे।
नोट फोटोः- स्थानांतरित पदाधिकारी को सममनित करते सह कर्मी

कॉमन सर्विस सेंटर का किया गया उद्घाटन

मनिका। प्रखंड मुख्यालय स्थित पंचायत सचिवालय बंदुआ में आज दिन रविवार को डिजिटल कॉमन सर्विस सेंटर का उद्घाटन बंदुआ पंचायत की मुखिया अनीता देवी ने फीता काटकर किया। मुखिया अनीता देवी ने बताया कि कॉमन सर्विस खुलने से पंचायत के लोगों को पैसा लेन देन आधार कार्ड या किसी भी प्रकार के फॉर्म ऑनलाइन कराने के लिए अब प्रखंड मुख्यालय जाने की जरूरत नहीं है। ग्रामीण हो या स्कूली बच्चे बेझिझक आकर सेंटर में अपना कार्य करवाएं। मौके पर मुखिया पति भरदुल सिंह, ग्राम प्रधान महावीर प्रसाद, समाजसेवी रामसेवक उरांव, धर्मेंद्र प्रसाद, विनोद उरांव, राजेश्वर यादव, कामेश्वर राम, कलावती देवी आदि उपस्थित थे।

लायंस क्लब ने किया जांच शिविर का आयोजन

चतरा। रविवार को जिला मुख्यालय स्थित हेरुवा शिव मंदिर प्रांगण में लायंस क्लब द्वारा साप्ताहिक निःशुल्क मधुमेह एवं रक्तचाप जांच सह परामर्श शिविर का आयोजन किया गया। जिसका शुभारंभ बतौर मुख्य अतिथि जिला परिषद् उपाध्यक्ष सह लायंस क्लब के संरक्षक बिरजू तिवारी ने किया। उन्होंने कहा कि एक अच्छा स्वास्थ्य रोगों और बीमारियों से आजादी है और यह एक व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक और सामाजिक भलाई की भावना है। यदि कोई अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखता है तो वह वास्तव में, पूरे जीवन के लिए सबसे कीमती उपहार है। जीवन के सभी आयामों जैसे शारीरिक, मानसिक और सामाजिक आदि में स्वस्थ रहना बहुत आवश्यक है। मौके पर अध्यक्ष डाक्टर हसदेव गुप्ता, उपाध्यक्ष चन्द्रशेखर लाल गुप्ता, उपाध्यक्ष बसंत कुमार दांगी, सचिव माधी गुप्ता, विकास कुमार स्नेही, मार्केट चेयर पर्सन प्रहलाद यादव, समुह संचालक दीपक कुमार समेत लायंस क्लब के अनेकों का गणमान्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

नशे में दूसरे के मकान में घुसने का आरोपी गिरफ्तार

नवीन मेल संवाददाता। सेन्हा
झखरा ग्राम में नशे के हालत में दूसरे के घर घुसने की सूचना पर पुलिस अग्रतर कारवाई करते युवक को लोहरदगा न्यायिक हिरासत में प्रस्तुत किया। सेन्हा थाना क्षेत्र के झखरा ग्राम में नशे के हालत में दूसरे के मकान में घुसने के आरोप पर झखरा निवासी सिदिक अंसारी का 31 वर्षीय पुत्र अमेरुल अंसारी को सेन्हा पुलिस गिरफ्तार कर आरोपी को अनुमंडल न्यायिक हिरासत में प्रस्तुत किया गया। पुअनि गणेश यादव ने जानकारी देते हुए कहा कि शराब के नशे में झखरा निवासी भरत जयसवाल का मकान में चार दिवारी फांद कर घर का दरवाजा खटखटा रहा था। जिसपर आसपास के ग्रामीणों का

सहयोग लेते हुए थाना को सूचनार्थ किया गया था। सूचना के आलोक पर सेन्हा थाना पुलिस कारवाई करते हुए धारा 107/116 कॉलज 3 द प्र स के तहत अनुमंडल न्यायिक हिरासत में आरोपी को प्रस्तुत किया गया। जहां आरोपी के विरुद्ध अग्रतर कारवाई किया जाएगा।

अखंड हरिकीर्तन का हुआ समापन जमकर झूमे भक्त

कुडु। कुडू इंदिरा गांधी चौक स्थित प्रशिद्ध शिव मंदिर में शनिवार से शुरू हुए 24 घंटे का अखंड हरिकीर्त्तन का विभिन्न अनुष्ठानों के बीच रविवार दो जुलाई की सुबह समापन हो गया। समापन के पश्चात भंडारे का आयोजन किया गया। जिसमे भारी संख्या में पहुंचे लोगों ने प्रसाद चखा। कटैया की प्रसिद्ध कंठामृत रसधारा हरीकृतन मण्डली के मार्गदर्शन में अखण्ड हरिकीर्त्तन में भक्त जम कर झूमे। इस दौरान हरे रामा, हरे कृष्णा, हरे हरे के जयघोष से पूरा क्षेत्र गुंजायमान होता रहा। कार्यक्रम को सफल बनाने में संरक्षक छत्रधारी प्रसाद, अध्यक्ष प्रेम प्रकाश वर्मा, सचिव राजेन्द्र साहू आदि का सराहनीय योगदान रहा।

कराटे खिलाड़ियों के बीच बेल्ट और सर्टिफिकेट का किया गया वितरण

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा
जिला कराटे एसोसिएशन एवं एस.एस. स्पोर्टस कराटे एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में ललित नारायण स्टेडियम में बेल्ट और सर्टिफिकेट वितरण समारोह का आयोजन किया गया।

इसमें रेंसी श्रवण साहु ब्लैक बेल्ट 6वीं डॉन ने कराटेकारों को बेल्ट और सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया। बेल्ट और सर्टिफिकेट प्राप्त करने वाले कराटेकार में वाईट से यलो बेल्ट मान्या राज और श्री समृधि यलो से ऑरेंज बेल्ट मृगांक वैभव, शिवांश यादव, अभय उरांव ऑरेंज से ग्रीन बेल्ट संतुष्टी महली, प्रियांशु सिंह, तन्मय यादव, ग्रीनबेल्ट से ब्लू बेल्ट

सानिया परवीन, यश उरांव, आदर्श उरांव एवं स्काई अप पब्लिक स्कूल कुम्हरिया से आनंद उरांव को दिया गया। मौके पर विशेष रुप से सेंसाई सुर्यावती देवी आदि अभिभावक मौजुद थे।

अनदेखी बुनियादी विद्यालय परिसर में बच्चे खतरे के साये में

सूखे पेड़ दे रहे हैं हादसे को निमंत्रण

नवीन मेल संवाददाता। कुडू
राजकीय बुनियादी विद्यालय कुडू परिसर में विद्यालय कार्यालय के ठीक सटे और बच्चों को आने जाने के मुख्य मार्ग पर यूकिलिप्टस के दो विशाल सूखे पेड़ किसी बड़े हादसे को दावत दे रहे हैं। शिक्षक सहित विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावक इसको लेकर काफी चिंतित है कि स्कूल संचालन के समय अगर पेड़ गिर जाता है तो इससे बहुत बड़ा खतरा हो सकता है। इसलिए प्रशासन से अविलंब पेड़ कटवाने की मांग की है। इस संबंध में प्राभारी प्रधानाध्यापक धर्मदेव प्रसाद ने बताया कि आधे से ज्यादा झुक चुके दोनों पेड़ का तना बिल्कुल सड़ता जा रहा है। और इसके छोटे छोटे टुकड़े टूट कर गिरते रहते हैं। इस लिए हम अपनी तरफ से प्रयास करते हैं कि जब भी बारिश या तेज हवा चलती है तो बच्चों को

इधर से जाने नही दिया जाए साथ ही सभी शिक्षक भी कार्यालय से बाहर निकल जाते हैं। उन्होंने बताया कि पेड़ को विद्यालय द्वारा कटवा देने से वन विभाग कार्रवाई कर सकता है। इसलिए हम बिना अनुमति के इसे नहीं कटवा सकते। **पहले मिली थी पेड़ काटने की अनुमति :** ज्ञात हो कि करीब चार वर्ष पहले विद्यालय परिसर में लगे पेड़ काटने की अनुमति मिली थी। विद्यालय के प्रधानाध्यापक राम अवतार सिंह द्वारा संबंधित कार्यालय में पत्रचार कर विधालय परिसर में पेड़ काटने की अनुमति ली थी। उस वक़्त कई पेड़ काटे गए लेकिन पता नही इन दोनों पेड़ो को क्यों छोड़ दिया गया था।

लगातार 55वें सप्ताह लगाया गया स्वास्थ्य जांच शिविर

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा
सेवा भारती लोहरदगा के द्वारा चुन्नीलाल उच्च विद्यालय के परिसर मे लगातार 55 वें सप्ताह भी निशुल्क स्वास्थ्य जांच एवं चिकित्सा शिविर लगाया गया। जिला अध्यक्ष दीपक सर्राफ, प्रोफेसर परमानंद प्रसाद अग्रवाल व डॉ कुमुद अग्रवाल ने शिविर का शुभारंभ किया। निशुल्क स्वास्थ्य शिविर में 41 लोगों ने अपना स्वास्थ्य जांच एवं इलाज कराकर लाभान्वित हुए। प्रो परमानंद प्रसाद ने कहा कि प्रत्येक सप्ताह निशुल्क स्वास्थ्य शिविर लगाना बहुत ही सराहनीय कार्य हैं। मानव सेवा से बड़ा कोई कार्य नहीं और मैं इन सभी के कार्यों से बहुत प्रभावित हूं। जिला अध्यक्ष दीपक सर्राफ व डॉ कुमुद अग्रवाल ने कहा कि बदलते मौसम एवं बरसात में बच्चे एवं बुजुर्गों को स्वास्थ्य के प्रति खास ध्यान देने की आवश्यकता है। घर के आसपास पानी का जमाव ना रहे उससे मच्छर का प्रकोप बढ़ता है जिससे की डेंगू

आदि कई बीमारियां होने का डर बना रहता है। खाने पीने की चीजें को हर समय ढक कर रखें और समय-समय पर अपना स्वास्थ्य की जांच करवाते रहें है। निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर में अब तक 1820 लोग चेकअप करा कर लाभान्वित हुए हैं। शिविर में जिला अध्यक्ष दीपक सर्राफ, डॉ कुमुद अग्रवाल, संजय चौधरी, शशि भूषण सिंह, प्रो परमानंद प्रसाद अग्रवाल, सुबोध प्रसाद महतो, गोपाल महतो, महेश कास्यंकार, चिंता देवी, कविता गुप्ता, गुप्तेश्वर प्रसाद गुप्ता, अंजली सर्राफ आदि थे।

NEWS इन ब्रीफ

एमआईसी इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड को हाथ लगा रेलवे का एक बड़ा ऑर्डर

नई दिल्ली। एमआईसी इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड को एक और बड़ा ऑर्डर हाथ लगा है। कंपनी ने शेयर बाजार को बताया कि उसे अमृत भारत स्टेशन के संबंध में यात्री सुविधाएं (दूरसंचार) प्रदान करने और दिव्यांगजनों की सुविधा के लिए सूचना प्रणाली के विस्तार और उपयोगिता स्थानांतरण के लिए उत्तर रेलवे जोन के दिल्ली डिवीजन से ऑर्डर मिला है। पिछले तीन सालों में इस स्टॉक ने 160 प्रतिशत से अधिक का मल्टीबैगर रिटर्न दिया है। इस साल वाईटीडी में यह शेयर 80.99% और पिछले एक साल में 59.39% चढ़ा है।

विदेशी निवेशकों ने जून में जमकर लगाया दांव

नई दिल्ली। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने जून में भारतीय इक्विटी में 47,148 करोड़ रुपये का निवेश किया है। यह राशि पिछले 10 महीने में सबसे अधिक है। वित्तीय परामर्श कंपनी क्रेविंग अल्फा के प्रिंसिपल पार्टनर मयंक मेहरा ने हालांकि कहा कि जुलाई में निवेश कम हो सकता है, क्योंकि अमेरिकी फेडरल रिजर्व की हालिया टिप्पणियों से एफपीआई सतर्क रुख अपना सकते हैं। जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के मुख्य निवेश रणनीतिकार वी के विजयकुमार ने कहा कि एफपीआई आगे चलकर थोड़ा सतर्क हो सकते हैं, क्योंकि देश में मूल्यांकन अल्पकालिक नजरिए से थोड़ा अधिक है। आंकड़ों के मुताबिक जून में एफपीआई ने भारतीय शेयरों में शुद्ध रूप से 47,148 करोड़ रुपये का निवेश किया।

जीएसटी से आम आदमी को मिली राहत : सीतारमण

एजेंसी। नई दिल्ली

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को जीएसटी के लाभों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि वस्तु एवं सेवा टैक्स ने आम लोगों को राहत दी है। 2017 में शुरू की गई टैक्स सुधार ने वस्तुओं की कीमत को कम किया है, सामानों पर कीमतें कम हुई हैं और लोगों को राहत मिली है। जीएसटी की छठी वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित एक समारोह में निर्मला सीतारमण ने कहा कि कई सामान्य उपयोग की वस्तुओं पर, जीएसटी के तहत टैक्स की दर जीएसटी के पहले की तुलना में बहुत कम है। वित्त मंत्री ने कहा कि दूध, चाय, दूध पाउडर, चीनी, खाद्य वनस्पति तेल, मसाले और जूते जैसी वस्तुएं जिनकी कीमत 500 रुपए तक है, चाहे वह किसी भी प्रासंगिक इकाई की हो, जीएसटी के तहत पहले के टैक्स 6 से 10 फीसदी की तुलना में 5 फीसदी टैक्स लगता है। सीतारमण ने कहा कि हेयर ऑयल, टूथपेस्ट, साबुन, परफ्यूम और डिटर्जेंट जैसी वस्तुओं पर जीएसटी 28 फीसदी था, जिसे कम करके 18 फीसदी कर दिया गया है। वित्त मंत्री ने यह भी बताया कि मिक्सचर, ग्राइंडर, रेफ्रिजरेटर, वैक्यूम क्लीनर और टेलीविजन (27 इंच) और वॉशिंग मशीन जैसे सामान्य उपयोग वाले बिजली के सामानों पर जीएसटी से पहले औसत कर 31.5 फीसदी था और अब यह घटकर 12 फीसदी हो गया है। निर्मला सीतारमण ने बताया कि ये अब लग्जरी वस्तु नहीं हैं, बल्कि घर के कामकाज के लिए उपयोग किए जाते हैं। मंत्री ने यह भी बताया कि जीएसटी लागू होने के बाद राज्य सरकारों के राजस्व में भी सुधार हुआ है। उन्होंने कहा कि करीब सभी राज्यों का राजस्व में इजाफा हुआ है। केंद्र सरकार ने भी जीएसटी से ज्यादा अमाउंट जुटाए हैं। मंत्री ने बताया कि मुआवजे के ट्रांसफर करने के बाद भी राज्यों के राजस्व में बढ़ोतरी आई है। जून, 2023 में हुए 1,61,497 करोड़ के जीएसटी कलेक्शन में से सीजीएसटी 31,013 करोड़, एसजीएसटी 38,292 करोड़, आईजीएसटी 80,292 करोड़ और सीईएसएस 11,900 करोड़ रुपए रहा है। जून में हुआ जीएसटी कलेक्शन एक साल पहले की समान अवधि की तुलना में 12 फीसदी अधिक है। यह चौथी बार है जब जीएसटी कलेक्शन 1.60 लाख करोड़ रुपए से अधिक रहा है। जीएसटी की दरों और स्लैब को तर्कसंगत बनाने, पेट्रोल, डीजल और विमान ईंधन पर जीएसटी लगाने जैसे मुद्दों पर भी अब तक कोई फैसला नहीं हो पाया है। टैक्स एक्सपर्ट्स का कहना है कि जीएसटी को अधिक समावेशी बनाने के लिए जीएसटी परिषद इन सुधारों को लागू करे। हालांकि, अगले साल आम चुनावों को देखते हुए इन सुधारों को लागू किए जाने की संभावना कम ही दिख रही है।

25 हजार करोड़ के 9000 फर्जी जीएसटी नंबरों का पदार्फाश

नई दिल्ली। केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड के चेयरमैन विवेक जौहरी ने बताया कॉरपोरेट इनकम टैक्स देने वाले केवल 40 फीसदी लोग जीएसटी के तहत पंजीकृत हैं। जीएसटी के छह साल पूरे होने के बाद भी केवल 1.39 लाख कारोबारी इसमें पंजीकृत हैं। जीएसटी दिवस पर एक कार्यक्रम में जौहरी ने कारोबारियों से अपील की कि वे जीएसटी में पंजीकरण अवश्य कराएं। इससे उनको ही लाभ होगा। केंद्र और राज्य के अधिकारी दो महीने का विशेष कार्यक्रम चला रहे हैं, जिसमें फर्जी कारोबारियों पर नजर है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा, जीएसटी के कारण कर के मोर्चे पर अधिक उछाल आया है। इसलिए, केंद्र और राज्य दोनों को लाभ हुआ है। आज, जीएसटी के बाद किसी भी राज्य को राजस्व का नुकसान नहीं हुआ है।

मानसून के आते ही जून में डीजल बिक्री घटी

नई दिल्ली। मानसून के आते ही कृषि क्षेत्र में मांग घटने और वाहनों की आवाजाही कम होने से जून में डीजल की बिक्री घटी है। जून में डीजल की खपत सालाना आधार पर 3.7 प्रतिशत घटकर 71 लाख टन रही। गौरतलब है कि देश में डीजल सर्वाधिक खपत वाला ईंधन है और कुल मांग में इसकी 20 प्रतिशत हिस्सेदारी है। इससे पहले अप्रैल और मई में डीजल की खपत क्रमशः 6.7 प्रतिशत और 9.3 प्रतिशत बढ़ गई थी, क्योंकि इस दौरान कृषि मांग बढ़ गई थी और गर्मी से बचने के लिए कारों में एयर कंडीशनिंग का सहारा लिया। मासिक आधार पर डीजल की खपत लगभग स्थिर रही। मई में डीजल की बिक्री 70.9 लाख टन थी। जून में पेट्रोल की बिक्री सालाना आधार पर 3.4 प्रतिशत बढ़कर 29 लाख टन हो गई। आंकड़ों के मुताबिक मासिक आधार पर इसकी बिक्री स्थिर रही। जून में विमान ईंधन (एटीएफ) की मांग सालाना आधार पर छह प्रतिशत बढ़कर 587,300 टन हो गई।

जून में एफपीआई का निवेश 10 महीने के 47,148 करोड़ रुपए पर पहुंचा

नई दिल्ली। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने जून में भारतीय इक्विटी में 47,148 करोड़ रुपए का निवेश किया है। यह राशि पिछले 10 महीने में सबसे अधिक है। वित्तीय परामर्श कंपनी क्रेविंग अल्फा के प्रिंसिपल पार्टनर मयंक मेहरा ने हालांकि कहा कि जुलाई में निवेश कम हो सकता है, क्योंकि अमेरिकी फेडरल रिजर्व की हालिया टिप्पणियों से एफपीआई सतर्क रुख अपना सकते हैं। जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के मुख्य निवेश रणनीतिकार वी के विजयकुमार ने कहा कि एफपीआई आगे चलकर थोड़ा सतर्क हो सकते हैं, क्योंकि देश में मूल्यांकन अल्पकालिक नजरिए से थोड़ा अधिक है। आंकड़ों के मुताबिक जून में एफपीआई ने भारतीय शेयरों में शुद्ध रूप से 47,148 करोड़ रुपए का निवेश किया। डिपॉजिटरी के आंकड़ों से पता चलता है कि इक्विटी में एफपीआई निवेश मई में 43,838 करोड़ रुपए, अप्रैल में 11,631 करोड़ रुपए और मार्च में 7,936 करोड़ रुपए था। इससे पहले एफपीआई ने जनवरी और फरवरी में इक्विटी से शुद्ध रूप से 34,000 करोड़ रुपए निकाले थे।

हर चार साल में एक नया एचडीएफसी बैंक बनाने का हमारा लक्ष्य : प्रबंध निदेशक

मुंबई। एचडीएफसी बैंक के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी शशिधर जगदीशन ने कहा कि उनका लक्ष्य हर चार साल में एक नया एचडीएफसी बैंक बनाने का है। मूल कंपनी एचडीएफसी के साथ एचडीएफसी बैंक का विलय हाल में सफलतापूर्वक पूरा हुआ है। जगदीशन ने शनिवार को एचडीएफसी बैंक में शामिल हुए एचडीएफसी के 4,000 से अधिक कर्मचारियों को लिखे पत्र में कहा कि भविष्य उज्ज्वल है, और विलय की संभावनाओं को साकार करने का काम अब शुरू हो रहा है। उन्होंने कहा, "वित्तीय और बंधक सेवाओं का कारोबार बहुत तेजी से बढ़ने वाला है। एक संयुक्त इकाई के रूप में एचडीएफसी बैंक- एक बड़े और बढ़ते वितरण नेटवर्क और ग्राहक आधार, पर्याप्त से अधिक पूंजी, संपत्ति की स्वस्थ गुणवत्ता और लाभप्रदता और अच्छे मुनाफे के साथ वृद्धि के लिए सबसे अच्छी स्थिति में होगा। उन्होंने आगे कहा, "जिस गति से हमने बढ़ने का लक्ष्य रखा है, उसके अनुसार हम हर चार साल में एक नया एचडीएफसी बैंक बना सकते हैं।" एचडीएफसी बैंक ने विलय के पहले दिन से अपने ब्रांड को फिर से स्थापित करने की प्रक्रिया शुरू की।

कच्चा तेल फिर हुआ महंगा

नई दिल्ली। इंटरनेशनल मार्केट में कच्चे तेल की कीमतों के आधार पर भारतीय तेल कंपनियों द्वारा रोज सुबह 6 बजे पेट्रोल और डीजल के लेटेस्ट रेट अपडेट किए जाते हैं। देश में एक साल से अधिक वक्त से तेल की कीमतें स्थिर हैं। लेकिन राज्य स्तर पर लगने वाले टैक्स के कारण विभिन्न शहरों में पेट्रोल और डीजल की कीमतें अलग-अलग होती हैं। ऐसे में पेट्रोल और डीजल खरीदने से पहले एक बार लेटेस्ट कीमतें जान लेना बेहतर है। राष्ट्रीय स्तर पर आज (रविवार), 2 जुलाई को भी पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं किया गया है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में ब्रेंट क्रूड ऑयल की कीमत में बढ़ोतरी देखने को मिली है। ब्रेंट क्रूड ऑयल 75.41 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गई है। वहीं, डब्ल्यूटीआई क्रूड ऑयल 70.64 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गया है।

पहली बार बिजली से दौड़ेंगी बसें

एजेंसी। नई दिल्ली

दिल्ली से जयपुर के बीच 225 किमी के रूट पर अगले छह साल में बिजली से चलने वाली बसें दौड़ने लगेंगी। केंद्रीय राष्ट्रीय राजमार्ग मंत्रालय देश का पहला इलेक्ट्रिसिटी इनेबल्ड हाईवे (विद्युत चालित हाईवे) बनाने की दिशा में काम कर रहा है। इसके लिए मौजूदा सड़क पर ही आने-जाने वाले रास्तों पर एक डेडिकेटेड लेन बिजली से चलने वाली बसों के लिए तय हो जाएगी। इन बसों की रफ्तार 100 किमी तक होगी। ऐसी 55 सीटर बस का प्रोटोटाइप भी तैयार हो रहा है। दो बसें जोड़कर 95 सीटर पर भी काम चल रहा है। अफसरों का कहना है, इलेक्ट्रिक हाईवे के लिए अलग सड़क की जरूरत नहीं है, एक डेडिकेटेड लेन होगी। इन बसों में तारों से बिजली आपूर्ति होगी। इसके लिए डिवाइडर पर बिजली के पोल लगाए जा सकते हैं। इस प्रोजेक्ट को बीओटी (बिल्ट,ऑपरेट एंड ट्रांसफर) के तहत बनाने की योजना है। सूत्रों के अनुसार प्रोजेक्ट में टाटा और सिमन्स जैसी कंपनियों को शामिल किया जाएगा। ये इलेक्ट्रिक बसें अलग होती हैं। अन्य इलेक्ट्रिक बस बैटरी से चलती हैं और चार्ज करने की जरूरत पड़ती है, जबकि विद्युत ऊर्जा से चलने वाली बसों में लगातार बिजली की आपूर्ति होती रहती है, इसलिए इन्हें चार्जिंग की जरूरत ही नहीं है। जिस तरह अभी ट्रेन या मेट्रो में विद्युत आपूर्ति की जाती है, उसी तर्ज पर ये बसें भी चलेंगी। जर्मनी में प्रति किमी 22 करोड़ रु. के खर्च से इलेक्ट्रिसिटी हाईवे बन चुका है। इससे वहां ट्रकों का करीब 60% ट्रैफिक घटा है। स्वीडन भी इसका इस्तेमाल कर चुका है। मौजूदा समय में कई अन्य यूरोपीय देशों में इस तरह की बसें चलाई जाती हैं। आसान भाषा में समझें तो ऐसा हाईवे जिस पर इलेक्ट्रिक वाहन चलते हों। आपने ट्रेन के ऊपर एक इलेक्ट्रिक वायर देखा होगा। ट्रेन के इंजन से ये वायर एक आर्म के जरिए कनेक्ट होता है, जिससे पूरी ट्रेन को इलेक्ट्रिसिटी मिलती है। इसी तरह हाइवे पर भी इलेक्ट्रिक वायर लगाए जाएंगे।

विदेश

पेरिस में मेयर के घर घुसाई कार, पत्नी और बच्चा घायल

पेरिस। फ्रांस में एक किशोर की पुलिसकर्मी द्वारा हत्या के बाद से फैली हिंसा में अब तक सैकड़ों लोग मारे जा चुके है। इस बीच प्रदर्शनकारी और हिंसक होते जा रहे हैं। पांचवें दिन भी हिंसा की आग थमने का नाम नहीं ले रही है। फ्रांस में प्रदर्शनकारी अपने आपे से बाहर हो रहे हैं। आज उनमें से कुछ ने पेरिस के मेयर के घर कार तक घुसा दी जिससे उनकी पत्नी और उनका एक बच्चा घायल हो गया। एल'हे-लेस-रोजेस शहर के मेयर विंसेंट जीनब्रून ने ट्वीट कर बताया कि जब उनका परिवार सो रहा था, तब प्रदर्शनकारियों ने आग लगाने की कोशिश की और उनके घर में एक कार घुसा दी। मेयर ने ट्वीट कर कहा,पिछली रात डरावनी और अपमानजनक स्थिति को दिखाने वाली थी, मैं इसे कभी नहीं भूल सकता। दंगाइयों द्वारा मेरे घर में कार घुसाने से मेरी पत्नी और मेरा एक बच्चा घायल हो गए हैं। यह हत्या का प्रयास कायरता को दिखाता है।

यूएससे 3 अरब डॉलर के फाइटर जेट्स खरीदेगा इजराइल

संसद ने डील को दी मंजूरी

एजेंसी। तेल अवीव

इजराइल की संसद ने एक अहम डिफेंस डील पर मुहर लगा दी है। अब इजराइली एयर फोर्स अमेरिका से ऋ35 स्टील्थ फाइटर जेट्स खरीद रहा है। इनकी कीमत 3 अरब डॉलर बताई गई है। यह फाइटर जेट्स लॉकहीड मार्टिन कंपनी बनाती है। एयर डिफेंस के मामले में इजराइल पहले ही बेहद मजबूत है। अब 25 एफ-35 मिलने के बाद उसकी ताकत में जबरदस्त इजाफा होगा। डिफेंस मिनिस्टर योव गैलेंट ने इस डील के बारे में ज्यादा जानकारी देने से इनकार कर दिया। एयर डिफेंस के मामले में इजराइल पहले ही बेहद मजबूत है। अब 25 एफ -35 मिलने के बाद उसकी ताकत में जबरदस्त इजाफा होगा। एयर डिफेंस के मामले में इजराइल पहले ही बेहद मजबूत है। अब 25 एफ35 मिलने के बाद उसकी ताकत में जबरदस्त इजाफा होगा। अमेरिका और इजराइल की इस डील को लेकर लंबे वक्त से बातचीत चल रही थी। इसी दौरान गाजा पट्टी में इजराइल ने जब यहूदियों की नई बस्तियां बनाने की कोशिश की तो इस पर कुछ देर के लिए रोक लग गई, क्योंकि अमेरिकी सरकार लगातार कह रही थी कि इजराइल के इस कदम से उसके और गल्फ कंट्रीज के बीच दूरियां और बढ़ जाएंगी। बहरहाल, इजराइल कोशिश करता रहा और आखिरकार यह डील अनाउंस हो गई। इजराइल और अमेरिका के बीच हाल ही में 10 साल के लिए डिफेंस एग्रीमेंट रिन्यू किया गया है। इसके तहत इजराइल 38 अरब डॉलर के हथियार और एयरक्राफ्ट अमेरिका से खरीदेगा। फरवरी में बेंगलुरू में एयरो इंडिया शो हुआ था। इसमें दुनियाभर के विदेशी विमान शामिल हुए। लेकिन, इनमें सबसे ज्यादा सुर्खियां बटोरीं थीं अमेरिका में बने ऋ35 फाइटर जेट ने। दरअसल, पहली बार अमेरिकी ऋ35 फाइटर भारत आए थे। एक्सपर्ट्स का मानना है कि भारत को रिझाने के लिए अमेरिका की ये एक कोशिश थी। रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक- 27 साल के इतिहास में भारत के एयरो इंडिया शो के लिए अमेरिका ने अपने सबसे ज्यादा डेलीगेट्स भेजे थे। जिससे पता चलता है कि अमेरिका के लिए भारत कितना अहम होता जा रहा है। रूसी एक्सपोर्टर रोसोबोरोना एक्सपोर्ट एयरो शो में सेंटर स्टेज पर रहता था। इस बार ये कम था।

ईरान अगले सप्ताह चीन रूस के साथ शंघाई गठबंधन में होगा शामिल

बीजिंग। रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने शुक्रवार को कहा कि ईरान को चीन, रूस और मध्य एशियाई देशों के साथ क्षेत्रीय शंघाई सहयोग संगठन के सदस्य के रूप में औपचारिक रूप से मंजूरी दी जाएगी। लावरोव ने मॉस्को में एससीओ केंद्र के उद्घाटन के मौके पर कहा, 4 जुलाई को राष्ट्राध्यक्षों की बैठक में ईरान की पूर्ण सदस्यता को मंजूरी दी जाएगी। ईरान ने हाल के महीनों में अपने अलगाव को कम करने, अपनी अर्थव्यवस्था में सुधार करने और परियोजना की ताकत बढ़ाने के लिए दोस्तों और दुश्मनों के साथ समान रूप से अपनी कूटनीति तेज कर दी है। एससीओ की सदस्यता पहले से ही कार्ड पर थी और ईरान को भी जल्द ही एक अन्य समूह में स्वीकार किए जाने की उम्मीद है।

ताइवान की प्रमुख कंपनियां भारत में लाने को उत्सुक

एजेंसी। ताइपे

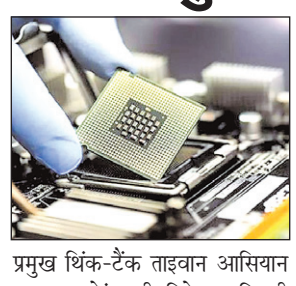

चीन के साथ ताइवान के बढ़ते तनाव के बीच इस स्वशासित द्वीप के शीर्ष नीति निमार्ताओं ने कहा है कि प्रमुख ताइवानी प्रौद्योगिकी कंपनियां अपना जोखिम कम करने के लिए अपने विनिर्माण केंद्रों को भारत में स्थानांतरित करने पर विचार कर रही हैं। ताइवान के राष्ट्रीय विकास उप मंत्री काओ शिएन-क्यू ने कहा कि सेमीकंडक्टर और इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों के विनिर्माण सहित उभरती और महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों के क्षेत्रों में नई दिल्ली और ताइपे के बीच सहयोग की बहुत अधिक गुंजाइश है। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय पत्रकारों के एक समूह के साथ बातचीत में कहा कि ताइवान की प्रमुख प्रौद्योगिकी कंपनियां अपनी वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने के लिए भारत को एक प्रमुख गंतव्य के रूप में देख रही हैं। चुंग-हुआ इंस्टीट्यूशन ऑफ इकोनॉमिक रिसर्च में स्थित प्रमुख थिंक-टैंक ताइवान आसियान अध्ययन केंद्र की निदेशक क्रिस्टी त्सुन-त्जु सू ने भारत को ताइवान के लिए एक महत्वपूर्ण देश बताया। उन्होंने कहा कि चीन में काम करने वाली ताइवानी कंपनियां अपने स्थानीय ग्राहकों को बनाए रखते हुए भारत में आपूर्ति श्रृंखला की स्थापना करना चाह रही हैं। बीजिंग के साथ वाशिंगटन के व्यापार विवाद और ताइवान के आसपास चीनी सेना की बढ़ती मौजूदगी के कारण प्रमुख ताइवानी कंपनियां अपने उत्पादन केंद्रों को चीन से यूरोप, अमेरिका और भारत जैसे देशों में स्थानांतरित करने पर विचार कर रही हैं।

प्रदर्शन प्रदर्शनकारियों-पुलिस में रातभर भिड़ंत, अब तक 2400 गिरफ्तार

गोलीबारी से मारे गए किशोर का शव दफनाया

एजेंसी। पेरिस

फ्रांस में पुलिस की गोलीबारी में मारे गए किशोर को दफना दिया गया। घटना के बाद भारी सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद चौथी रात को व्यापक विरोध-प्रदर्शन हुए और इस दौरान देशभर में 2400 लोगों को गिरफ्तार किया गया। हिंसक विरोध-प्रदर्शनों के मद्देनजर फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने जर्मनी का दौरा रद्द कर दिया है। फ्रांस के गृह मंत्रालय ने बताया कि हिंसा रोकने के लिए देशभर में 45,000 पुलिसकर्मियों की तैनाती की गई है। मंगलवार रात को प्रदर्शन की शुरूआत के बाद से पुलिस ने कुल 2,400 लोगों को गिरफ्तार किया है। इनमें से आधी से ज्यादा गिरफ्तारियां हिंसा की चौथी रात को हुईं। राष्ट्रपति मैक्रों ने शांति की अपील करते हुए अभिभावकों से अपने बच्चों को घरों पर ही रखने की अपील की। बावजूद इसके, विभिन्न शहरों में प्रदर्शनकारियों ने कई वाहनों और इमारतों में आग लगा दी तथा दुकानों में लूटपाट की। अधिकारियों के मुताबिक, युवा प्रदर्शनकारियों की पुलिस से रातभर भिड़ंत हुई। उन्होंने बताया कि विभिन्न जगहों पर प्रदर्शनकारियों ने करीब 2,500 दुकानों में तोड़फोड़ और आगजनी की। फ्रांस में हिंसा का असर मैक्रों की जर्मनी यात्रा पर पड़ा है। जर्मनी के राष्ट्रपति फ्रैंक-वाल्टर स्टीनमीयर के कार्यालय ने बताया कि मैक्रों ने शनिवार को फोन करके जर्मनी की अपनी पहली राजकीय यात्रा को स्थगित करने का अनुरोध किया। मैक्रों रविवार शाम को जर्मनी रवाना होने वाले थे। पिछले 23 वर्षों में फ्रांस के किसी राष्ट्रपति की यह जर्मनी की पहली राजकीय यात्रा होती। मैक्रों के कार्यालय ने बताया कि राष्ट्रपति ने स्टीनमीयर से बात की और ह्यह्यदेश में सुरक्षा स्थिति को देखते हुए कहा कि वह आने वाले दिनों में फ्रांस में रहना चाहते हैं। इस बीच, नैनटेरे के उपनगर में पुलिस की गोलीबारी में मारे गए किशोर नाहेल को अंतिम विदाई दी गई। कब्रिस्तान में ताबूत लाए जाने के दौरान बड़ी संख्या में लोग सड़कों के किनारे खड़े थे। पेरिस से मार्सिले और ल्योन तक हिंसा की आग फैल गई है, जिसमें सैकड़ों पुलिसकर्मी और दमकलकर्मी घायल हुए हैं।

दक्षिण कोरियाई ने चीन कारखाने के लिए सैमसंग डेटा चुराने से किया इनकार

कोरिया। औद्योगिक जासूसी के आरोप में जेल में बंद एक दक्षिण कोरियाई चिप कार्यकारी ने इन आरोपों को खारिज कर दिया कि उसने सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स द्वारा विकसित संवेदनशील जानकारी के साथ चीन में एक कॉपीकैट चिप फैक्ट्री बनाने की मांग की थी। 25 मई को हिरासत में लिए जाने के बाद एक पत्र में चोई जिन्सेओग ने अपनी रक्षा योजना के बारे में विस्तार से बताया और कहा कि जियान संयंत्र के संबंध में उनके खिलाफ लगाए गए आरोप सभी अप्रमाणित थे। अभियोजकों ने इस महीने की शुरूआत में सैमसंग के पूर्व कार्यकारी पर चीन के जियान में सैमसंग कारखाने से केवल 1.5 किमी (1 मील) दूर सेमीकंडक्टर प्लांट बनाने के लिए अवैध रूप से गुप्त जानकारी प्राप्त करने का आरोप लगाया था। चोई सियोल के दक्षिण में एक शहर सुवोन के एक हिरासत केंद्र में कैद में है, जहां सैमसंग का मुख्यालय है। उन्होंने पहले अपने वकील के माध्यम से सभी आरोपों से इनकार किया था। पत्र में चोई ने कहा कि कारखाने की योजना ताइवान के फॉक्सकॉन में डीआरएएम मेमोरी चिप्स के शुरूआती परीक्षण उत्पादन के लिए बनाई गई थी।

नवाज शरीफ के जल्द पाकिस्तान लौटने की अभी संभावना नहीं

एजेंसी। लाहौर

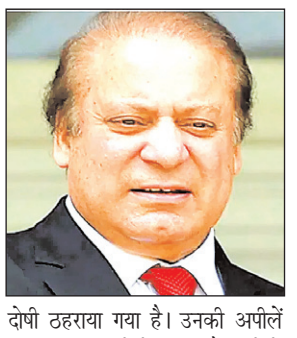

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री और पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) के प्रमुख नवाज शरीफ के जल्द पाकिस्तान लौटने की संभावना नहीं है। यह जानकारी स्थानीय मीडिया ने दी। नाम न छापने की शर्त पर द एक्सप्रेस ट्रिब्यून से बात करने वाले सूत्र ने कहा कि तीन बार के पूर्व प्रधान मंत्री के इस साल के अंत तक पाकिस्तान लौटने की उम्मीद थी। नवाज, जिन्हें भ्रष्टाचार के मामलों में 2018 के आम चुनाव से पहले अदालत द्वारा दोषी ठहराया गया था। 2019 में उपचार के लिए वह लंदन गए और तब से वहीं रह रहे हैं। पिछले हफ्ते नवाज दुबई पहुंचे और पाकिस्तानी राजनेताओं से मुलाकात की। खाड़ी अमीरात में उनके आगमन से मीडिया में उनकी पाकिस्तान वापसी को लेकर बहस छिड़ गई। द एक्सप्रेस ट्रिब्यून की रिपोर्ट के अनुसार, एक कैबिनेट सदस्य सूत्र ने कहा कि वह अभी वापस नहीं लौटेंगे। पीएमएल-एन सुप्रीमो को पनामा पेपर्स मामले के बाद राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो (एनएबी) द्वारा दायर अल-अजीजिया और एवेनफील्ड अपॉर्टमेंट मामले में दोषी ठहराया गया है। उनकी अपीलें संबंधित अदालतों में लंबित हैं। सूत्रों ने इस बात पर जोर दिया कि शरीफ परिवार को नवाज की वापसी की योजना के बारे में पता है। द एक्सप्रेस ट्रिब्यून की रिपोर्ट के अनुसार, रमेरी समझ और पार्टी के भीतर से जो बातचीत मैं सुन रहा हूं, उसके अनुसार नवाज नवंबर तक वापस आ जाएंगे, तब तक, इन (कानूनी) मुद्दों को सुलझा लिया जाएगा। संयुक्त अरब अमीरात में मौजूदा गठबंधन सरकार के प्रमुख सहयोगी पाकिस्तान पीपल्स पार्टी (पीपीपी) के नेतृत्व के साथ बैठक की आवश्यकता के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि अभी भी कुछ चीजें हैं, जिन पर अगले चुनाव से पहले निर्णय लेने की जरूरत है।

प्रेमी ने लंदन में भारतीय मूल की छात्रा की हत्या करने की बात कबूली

लंदन। 19 वर्षीय भारतीय मूल की छात्रा के प्रेमी ने पिछले साल लंदन में उसके विश्वविद्यालय आवास में उसकी हत्या करने की बात स्वीकार की है, लेकिन हत्या करने के किसी भी इरादे से इनकार किया है। 23 वर्षीय मैहर मारौफे को सबिता थानवानी की हत्या के लिए दोषी ठहराया गया, जो 19 मार्च, 2022 को लंदन के क्लेरकेनवेल इलाके में आर्बर हाउस के स्टूडेंट फ्लैट में अपनी गर्दन पर गंभीर चोटों के साथ पाई गई थी। मारौफे को एक इमरजेंसी वर्कर की पिटाई कर हमले के आरोप में भी दोषी ठहराया गया। पिछले साल मार्च में, एक पड़ोसी ने थानवानी के कमरे से चीखें आने की आवाज सुनी, जिसके बाद सुबह-सुबह आपातकालीन सेवाएं सतर्क हो गईं। पुलिस ने बिस्तर के चारों ओर खून के धब्बे देखे, साथ ही थानवानी के कमरे के फर्श पर कंबल और रजाई भी देखी। सुबह 6 बजे उसे घटनास्थल पर ही मृत घोषित कर दिया गया और पोस्टमार्टम जांच में उसकी मौत का कारण गर्दन पर तेज हमले को बताया गया।

बीमारी व हमारा समाज

झारखंड में सिकल सेल बीमारी एनीमिया ने सबको हैरान और परेशान कर दिया है। यह जानलेवा बीमारी तेजी से अपना पैर पसार रहा है। इसे समाप्त करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी कूद गये हैं। उन्होंने इसे 2047 तक खत्म करने के लिए सिकल सेल एनीमिया मुक्त भारत को करने का संकल्प भी लिया है। जिले और राज्य स्तर पर इसे खत्म करने के लिए रणनीति बननी शुरू हो गयी है। झारखंड में इस अभियान की लांचिंग रांची के कांके प्रखंड में होनी है। इस अभियान के तहत सिकल सेल की पहचान के लिए आम लोगों की स्क्रीनिंग की जायेगी। उनके पाजीटिव पाये जाने पर उपचार किया जायेगा। पहले चिन्हित किये गये रोगियों को सिकल सेल कार्ड भी दिया जायेगा। अपने राज्य झारखंड में करीब पांच हजार लोग पाये गये हैं। अब इन्हें कार्ड देने की योजना है। ऐसा देखा जा रहा है कि यह बीमारी आदिवासी बहुल इलाकों में ज्यादा पाई जा रही है। ऐसे में अनुमान लगाया जा रहा है कि उनके रहन सहन और शिक्षा की कमी की वजह से यह बीमारी बढ़ते जा रहा है। ऐसे में इस बीमारी की रोकथाम के लिए जागरूकता चलाने की जरूरत है। यह बीमारी विकारों का समूह है जिसके कारण लाल रक्त कोशिकायें विकृत होकर टूट जाती है। तथा खून का बहाव रूक जाता है और दर्द होता है। यह लंबे समय तक रहने वाली बीमारी है। इसमें आदमी की मौत नहीं होती है। लंबे समय तक जिन्दगी रहती है। इस बीमारी के लक्षण दर्द और ज्यादा थकान हैं। इसी बाबत पलामू में इसे समाप्त करने के लिए भी स्वास्थ्य विभाग की कसरत शुरू हो गयी है। बहरहाल देखा जाये तो आदमी के कई अनजान शत्रु हमारे आस-पास घूम रहे हैं। जरूरत है उन्हें पहचानने की । ऐसे में सावधानी आवश्यक है। दूसरी सबसे बड़ी बात यह कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी दिनचर्चा के प्रति सावधान रहने की जरूरत है। खान-पान और रहन-सहन पर पैनी नजर रखनी चाहिए। ऐसा नहीं होने पर परेशानियों का बसेरा हमारे आस-पास मंडराने लगता है। ऐसे भी कहा गया है कि हेल्थ है तो सब कुछ है। अन्यथा सब बेकार हैं। शरीर को बीमारी से मुक्त रखने के लिए जीवन के बताये आदर्श नियमों का हर समय पालन करना चाहिए। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह कि जगह-जगह छोला छाप डाक्टरों की टीम घूम रही है। इनसे बचने की भी जरूरत है। ऐसे में समीप के किसी अच्छे डाक्टर से तुरंत मिल कर शरीर में हो रही परेशानी को बताना चाहिए। इस बीमारी से निपटने के लिए जहां एक ओर जिला प्रशासन प्रयासरत है,वहीं लोगों को जागरूक करने के लिए स्वंयसेवी संस्थाओं को भी आगे आने की जरूरत है। समाज में हो रहे बदलाव के लिए जहां एक ओर प्रत्येक व्यक्ति को जवाबदेह बनने की जरूरत है,वहीं बीमारी और आपदा के मौके पर प्रत्येक व्यक्ति को अच्छे कार्य में बढ़-चढ़ कर भाग लेने की जरूरत है। यह समाज की सुन्दरता होती है। लेकिन हाल के दिनों में देखा जा रहा है कि ऐसा नहीं हो रहा है। यह दुखद बात है। बहरहाल इस बीमारी को लेकर पिछले दिनों पलामू के कई जगहों पर जागरुकता शिविर का आयोजन किया। सिकल सेल एनीमिया बीमारी में शरीर में खून बनना बंद हो जाता है। इस बात की पुष्टि करते हुए अशोक कुमार सिंह ने बताया कि इस बीमारी से कीडनी लीवर जैसे कई जरुरी अंग डैमेज हो जाते हैं। उन्होंने लोगों से अपील करते हुए कहा कि इस बीमारी में सावधानी जरुरी है। स्वास्थ्य केंद्रों के अलावा कई स्कूलों में बच्चों को इस बीमारी के बारे में बताया गया।

झारखंड में इस अभियान की लांचिंग रांची के कांके प्रखंड में होनी है। इस अभियान के तहत सिकल सेल की पहचान के लिए आम लोगों की स्क्रीनिंग की जायेगी। उनके पाजीटिव पाये जाने पर उपचार किया जायेगा।

सहायक प्रौद्योगिकी : भारत का दृष्टिकोण व क्षमता

सहायक प्रौद्योगिकी (एटी) अर्थात ऐसा कोई भी उत्पाद या सेवा, जिसके माध्यम से दिव्यांगजनों (पीडब्ल्यूडी) अथवा इस तरह की किसी भी स्वास्थ्य स्थितियों का सामना कर रहे लोगों को मुख्यधारा में शामिल होने और उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए दैनिक गतिविधियों का निर्वहन करने में सहायता की जाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन और यूनिसेफ द्वारा मई 2022 में सहायक प्रौद्योगिकी पर जारी की गई पहली वैश्विक रिपोर्ट (जीआरईएटी) के अनुसार, दुनिया में 2.5 बिलियन से अधिक लोगों को एक अथवा अधिक सहायक उत्पादों की आवश्यकता होती है। भारत में, 2011 की जनगणना के अनुसार लगभग 26.8 मिलियन लोग दिव्यांग हैं और यह उनके लिए सहायक प्रौद्योगिकी की आवश्यकता को दर्शाता है। भारत में दिव्यांगजनों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिनमें शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य देखभाल तक सीमित पहुंच शामिल है। इसके अलावा, कई दिव्यांगजन पहुंच की कमी के कारण परिवहन और आवास जैसी बुनियादी सेवाओं तक पहुंचने बनाने के लिए भी संघर्ष करते हैं। सहायक प्रौद्योगिकी दिव्यांगजनों को रोजमर्रा के काम करने और उनके समुदायों में समान रूप से भागीदारी करने में मदद करते हुए इन चुनौतियों का समाधान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के अंतर्गत एक केंद्रीय सार्वजनिक उपक्रम, भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम (एलिम्को) का उद्देश्य दिव्यांगजनों को गुणवत्तापूर्ण सहायक उपकरण और पुनर्वास सेवाएं प्रदान करना है। पिछले कुछ वर्षों में, एलिम्को भारत में एटी के क्षेत्र में एक प्रमुख भागीदार बन चुका है। एलिम्को सहायक उपकरणों की विस्तृत श्रृंखला का निर्माण करता है, जिसमें प्रोस्थेसिस, ऑर्थोसिस, श्रवण यंत्र और गतिशीलता सहायक उपकरण जैसे ट्राई साइकिल, व्हीलचेयर, स्टिक, वॉकर, बैसाखी आदि शामिल हैं। एलिम्को ने दुनिया भर में प्रगति के साथ तालमेल बनाये रखने के लिए आधुनिकीकरण करने के लिए सक्रिय कदम उठाये हैं। इस दिशा में, एलिम्को ने अंतरराष्ट्रीय कंपनियों के साथ सहयोग किया और लोअर लिम्ब प्रोस्थेटिक कंपोनेंट (कृत्रिम पैर) और सक्रिय व्हील चेयर के स्वदेशी निर्माण का मार्ग प्रशस्त करने के लिए टीओटी पर हस्ताक्षर किये। प्रोस्थेटिक्स के लिए एलिम्को द्वारा निर्मित 'परिवर्तन किट' का मूल्य इस श्रेणी में आयातित प्रोस्थेसिस की तुलना में बेहद कम है, जिसे देश भर में हजारों लाभार्थियों को लगाया गया है। आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत दृष्टिबाधित दिव्यांगों के लिए स्वदेशी डिजाइन से निर्मित 'सुगम्य' छड़ी की परिकल्पना की गई है। प्रौद्योगिकी ग्रहण करने की दिशा में एलिम्को द्वारा किये गये प्रयासों में अत्याधुनिक प्रोस्थेटिक और ऑर्थोटिक केंद्र; उन्नत डिजाइन दक्षता के साथ- 3डी मॉडलिंग और विश्लेषण सॉफ़्टवेयर; 3डी प्रिंटिंग सहित कंप्यूटर एडेड डिजाइनिंग (सीएडी) और कंप्यूटर एडेड मैन्युफैक्चरिंग (सीएएम); सीएनसी स्लाइडिंग हेड मशीन और सीएनसी टर्न मिल मशीन का उपयोग; सटीक /सटीक धातु विश्लेषण के लिए- स्पेक्ट्रो विश्लेषक; बैटरी चालित मोटराइज्ड ट्राइसाइकिल में रिवर्स ड्राइव और डिस्क ब्रेक और एक्टिव फोल्डिंग व्हील चेयर तथा रफ टेरेन व्हील चेयर का डिजाइन / ड्राइंग जैसी नई सुविधाएँ शामिल की गई हैं। दिव्यांगजनों के लिए सार्वजनिक स्थलों और परिवहन प्रणालियों को अधिक सुलभ बनाने के लिए सरकार द्वारा 2015 में सुगम्य भारत अभियान का शुभारंभ किया गया था और यह दिव्यांगजनों के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी को अधिक सुलभ बनाने पर केंद्रित है। कौशल विकास के लिए 2015 में शुभारंभ की गई राष्ट्रीय कार्य योजना का लक्ष्य 2022 तक दस लाख दिव्यांगजनों को प्रशिक्षण प्रदान करना है, जिसमें दिव्यांगजनों को उनके कौशल विकसित करने में सहायता करने के लिए एटी प्रदान करने का प्रावधान है। दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग (डीईपीडब्ल्यूडी) की सहायता/ उपकरणों की खरीद / फिटिंग के लिए दिव्यांगजन को सहायता (एडीआईपी) योजना दिव्यांगजनों को सहायक उपकरणों और अन्य उपकरणों की खरीद के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है और यह सबसे लोकप्रिय भी है तथा जरूरतमंद दिव्यांगजनों को निःशुल्क सहायक उपकरण उपलब्ध कराने के लिए इसमें देश के सभी जिले शामिल हैं। दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग (डीईपीडब्ल्यूडी) के तहत विभाग द्वारा देश भर में नौ राष्ट्रीय संस्थान स्थापित किए गए हैं, साथ ही राष्ट्रीय संस्थानों की विस्तारित शाखाओं के रूप में 21 समग्र क्षेत्रीय केंद्र (सीआरसी) भी स्थापित किये गये हैं। भारत दिव्यांगजनों के लिए एटी समाधान विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करने वाले स्टार्ट-अप में वृद्धि का साक्षी बन रहा है, जो दिव्यांगजनों के लिए नवीन उत्पाद बनाने हेतु नवीनतम तकनीक का लाभ उठा रहे हैं। यह भारत सरकार के समर्थन से समावेशन को बढ़ावा देने और उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने में सहायता कर सकते हैं। आज, एटी दिव्यांगजनों के लिए विश्व मंच पर चर्चा का एक महत्वपूर्ण विषय है, जो दिव्यांगजनों के जीवन को बेहतर बनाने पर केंद्रित एक वैश्विक कार्यक्रम है। कुल मिलाकर, भारत में दिव्यांगता क्षेत्र में सहायक प्रौद्योगिकी का व्यापक दायरा महत्वपूर्ण है और इस क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करने वाले स्टार्ट-अप और इनोवेटर्स का एक बढ़ता हुआ इकोसिस्टम भी है। सरकार ने समावेशन को बढ़ावा देने और दिव्यांगजनों के जीवन में सुधार लाने में एटी समाधानों की क्षमता को पहचाना है और सरकार एटी समाधानों के विकास, इन्हें अपनाने और इनके उपयोग को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय कदम उठा रही है। निरंतर निवेश और समर्थन के साथ, एटी समाधानों के विकास और इन्हें अपनाने के मामले में भारत वैश्विक रूप से प्रमुख बनने की क्षमता रखता है।

सहायक प्रौद्योगिकी दिव्यांगजनों को रोजमर्रा के काम करने और उनके समुदायों में समान रूप से भागीदारी करने में मदद करते हुए इन चुनौतियों का समाधान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

इन दिनों

■ **राजेश अग्रवाल**
लेखक सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग के सचिव हैं।

बोधि वृक्ष

आईये सुने भगवान सत्यनाराण की कथा

इस प्रकार मन से चिन्तन करता हुआ लकड़ी को मस्तक पर रख कर उस सुन्दर नगर में गया, जहां धन-सम्पन्न लोग रहते थे। उस दिन उसने लकड़ी का दुगुना मूल्य प्राप्त किया। इसके बाद प्रसन्न हृदय होकर वह पके हुए केले का फल, शक्कर, घी, दूध और गेहूं का चूर्ण सवाया मात्रा में लेकर अपने घर आया। तत्पश्चात उसने अपने बान्धवों को बुलाकर विधि-विधान से भगवान श्री सत्यनारायण का व्रत किया। उस व्रत के प्रभाव से वह धन-पुत्र से सम्पन्न हो गया और इस लोक में अनेक सुखों का उपभोग कर अन्त में सत्यपुर अर्थात बैकुण्ठलोक चला गया।

श्री मन नारायण-नारायण-नारायण।
भज मन नारायण-नारायण-नारायण।
श्री सत्यनारायण भगवान की जय।
सत्यनारायण व्रत तीसरा अध्याय

श्री सूतजी बोले - श्रेष्ठ मुनियों! अब मैं पुनः आगे की कथा कहूंगा, आप लोग सुनें। प्राचीन काल में उल्कामुख नाम का एक राजा था। वह जितेन्द्रिय, सत्यवादी तथा अत्यन्त बुद्धिमान था। वह विद्वान राजा प्रतिदिन देवालय जाता और ब्राह्मणों को धन देकर सन्तुष्ट करता था। कमल के समान मुख वाली उसकी धर्मपत्नी शीला, विनय एवं सौन्दर्य आदि गुणों से सम्पन्न तथा पतिपरायणा थी। राजा एक दिन अपनी धर्मपत्नी के साथ भद्रशीला नदी के तट पर श्रीसत्यनारायण का व्रत कर रहा था। उसी समय व्यापार के लिए अनेक प्रकार की पुष्कल धनराशि से सम्पन्न एक साधु नाम का बनिया वहां आया। भद्रशीला नदी के तट पर नाव को स्थापित कर वह राजा के समीप गया और राजा को उस व्रत में दीक्षित देखकर विनयपूर्वक पूछने लगा। साधु ने कहा - राजन! आप भक्तियुक्त चित्त से यह क्या कर रहे हैं? कृपया वह सब बताइये, इस समय मैं सुनना चाहता हूं।

(क्रमशः)

गुरु-शिष्य परंपरा का विशेष उत्सव है गुरु पूर्णिमा

रमेश सर्राफ धमोरा

गुरु पूर्णिमा पर्व गुरु-शिष्य की परंपरा के लिए विशेष उत्सव होता है। गुरु अपने ज्ञान से शिष्य को सही मार्ग पर ले जाते हैं। इसलिए गुरुओं के सम्मान में हर वर्ष यह पर्व मनाया जाता है। इस अवसर पर गुरु के अलावा भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की भी पूजा की जाती है। आषाढ़ मास की पूर्णिमा के दिन महाभारत के रचयिता महर्षि वेद व्यास का जन्म हुआ था। उनकी जन्मतिथि के उपलक्ष्य में पूजा की जाती है। इस बार गुरु पूर्णिमा तीन जुलाई को है। गुरु पूर्णिमा के दिन भगवान शिव ने अपने पहले सात शिष्य सप्तऋषियों को सबसे पहले योग का ज्ञान प्रदान किया था। इस प्रकार आदियोगी शिव इस दिन आदि गुरु यानी पहले गुरु बने। सप्तऋषि इस ज्ञान को लेकर पूरी दुनिया में गये। आज भी धरती की हर आध्यात्मिक प्रक्रिया के मूल में आदियोगी द्वारा दिया गया ज्ञान ही है। गुरु, साधक के अज्ञान को मिटाता है। ताकि वह अपने भीतर ही सृष्टि के स्रोत का अनुभव कर सके। पारंपरिक रूप से गुरु पूर्णिमा का दिन वह समय है जब साधक, गुरु को अपना आभार अर्पित करते हैं और उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। योग साधना और ध्यान का अभ्यास करने के लिए गुरु पूर्णिमा को विशेष लाभ देने वाला दिन माना जाता है। गुरु शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है और इसका गहन आध्यात्मिक अर्थ है। इसके दो अक्षरों गुरु में गु शब्द का अर्थ है अज्ञान। रु शब्द का अर्थ है आध्यात्मिक ज्ञान का तेज जो आध्यात्मिक अज्ञान का नाश करता है। संक्षेप में गुरु वे हैं जो मानव जाति के आध्यात्मिक अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाते हैं और उसे आध्यात्मिक अनुभूतियां और आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करते हैं। गुरु पूर्णिमा वर्षा ऋतु के आरम्भ में आती है। इस दिन से चार महीने तक साधु-सन्त एक ही स्थान पर रहकर ज्ञान की गंगा बहाते हैं। ये चार महीने मौसम की दृष्टि से भी सर्वश्रेष्ठ होते हैं। न अधिक गर्मी और न अधिक सर्दी। इसलिए अध्ययन के लिए उपयुक्त माने गये हैं। जैसे सूर्य के ताप से तृप्त भूमि को वर्षा से शीतलता एवं फसल पैदा करने की शक्ति मिलती है। वैसे ही गुरु चरणों में उपस्थित साधकों को ज्ञान, शान्ति, भक्ति और योग शक्ति प्राप्त करने की शक्ति मिलती है। यह दिन महाभारत के रचयिता कृष्ण द्वैपायन व्यास का जन्मदिन भी है। वे संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे और उन्होंने चारों वेदों की भी रचना की थी। इस कारण उनका एक नाम वेद व्यास भी है। उन्हें आदिगुरु कहा जाता है और उनके सम्मान में गुरु पूर्णिमा को व्यास पूर्णिमा नाम से भी जाना जाता है। भक्तिकाल के संत घीसादास का भी जन्म इसी दिन हुआ था वे कबीरदास के शिष्य थे। गुरु तथा देवता में समानता के लिए एक श्लोक में कहा गया है कि जैसी भक्ति की आवश्यकता देवता के लिए है वैसी ही गुरु के लिए भी। सिख धर्म में भी गुरु को भगवान माना जाता है। इस कारण गुरु पूर्णिमा सिख धर्म का भी अहम त्योहार है। सिख धर्म केवल एक ईश्वर और अपने दस गुरुओं की वाणी को ही जीवन का वास्तविक सत्य मानता है। आषाढ़ की पूर्णिमा को चुनने के पीछे गहरा अर्थ है कि गुरु तो पूर्णिमा के चंद्रमा की तरह हैं। जो पूर्ण प्रकाशमान हैं और शिष्य आषाढ़ के बादलों की तरह। आषाढ़ में चंद्रमा बादलों से घिरा रहता है जैसे बादल रूपी शिष्यों से गुरु घिरे हों। गुरु अंधेरे में भी चांद की तरह चमक सके। उस अंधेरे से घिरे वातावरण में भी प्रकाश जगा सके तो ही गुरु पद की श्रेष्ठता है।

गुरु पूर्णिमा के दिन भगवान शिव ने अपने पहले सात शिष्य सप्तऋषियों को सबसे पहले योग प्रदान किया था। इस प्रकार आदियोगी शिव इस दिन आदि गुरु यानी पहले गुरु बने।

गुरु पूर्णिमा

फोटो की दुनिया

फेसबुक वॉल से

महाराष्ट्र की राजनीति में 'चाणक्य' की पराजय

मुकुंद

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के नेता अजित पवार ने अपने समर्थक विधायकों के साथ महाराष्ट्र की शिंदे सरकार में शामिल होकर सबको चौंका दिया। अजित ने उप मुख्यमंत्री पद की शपथ ली है। छगन भुजबल समेत नौ विधायकों को भी शिंदे सरकार में जगह दी गई है। अजित पवार राजनीति के चाणक्य कहे जाने वाले शरद पवार के भतीजे हैं। भतीजे ने पवार को भरी दोपहर में राजनीति के आसमान में तारे दिखा दिये हैं। दो महीने पहले की बात है। समूची राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी सकते में आ गई थी। दरअसल शरद पवार ने घोषणा की थी-एक मई, 1960 से एक मई, 2023 तक सार्वजनिक जीवन में लंबा समय बिताने के बाद अब कहीं रुकने पर विचार करने की आवश्यकता है। इसलिए, मैंने राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त होने का फैसला किया है। इस वक्त यशवंतराव चव्हाण केंद्र के सभागार में मौजूद हर नेता के पैरों तले जमीन हिल गई थी। शरद पवार का पूरा नाम शरद गोविंदराव पवार है। पूर्व कांग्रेस नेता शरद पवार ने 1999 में अलग राह पकड़ी थी। वह राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के संस्थापक हैं। पवार महाराष्ट्र में मुख्यमंत्री रह चुके हैं। प्रभावशाली नेता के रूप में अपनी पहचान बनाने वाले शरद केंद्र में रक्षा और कृषि मंत्री रहे हैं। राजनीति के साथ-साथ वह क्रिकेट प्रशासन से भी जुड़े रहे हैं। सन 2005 से 2008 तक भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के अध्यक्ष और 2010 से 2012 तक अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद के भी अध्यक्ष रह चुके हैं। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के निर्माण का मुख्य कारण यह था कि पवार, तारिक अनवर और पीए संगमा इटली मूल की सोनिया गांधी के कांग्रेस का नेतृत्व किये जाने के खिलाफ थे। इस आधार पर 20 मई, 1999 को तीनों कांग्रेस से अलग हो गये। ...और 25 मई 1999 को देश नये राजनीतिक दल राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी का उदय हुआ। पवार ने अपने राजनीतिक सफर की शुरूआत कांग्रेस के साथ 1967 में की थी। यशवंतराव चव्हाण को उनका राजनीतिक गुरु माना जाता है। 1978 में जनता पार्टी के गठबंधन से सरकार बनाने के लिए उन्हें कांग्रेस से निष्कासित कर दिया गया था। इस गठबंधन के फलस्वरूप वह महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बने थे। साल 1984 में बारामती से वह पहली बार लोकसभा चुनाव जीते। 1987 में शिवसेना के बढ़ते प्रभाव की वजह से उन्होंने कांग्रेस में वापसी की। 1993 में उन्होंने चौथी बार मुख्यमंत्री के पद शपथ ली। यह उनका सबसे विवादास्पद कार्यकाल रहा। 2001-2002 के दौरान उन पर माफिया से संबंध होने के आरोप लगे। उन पर गेहूं निर्यात और 2जी स्पेक्ट्रम घोटालों के आरोप भी लगते रहे हैं। कहा तो यह भी जाता है कि शरद पवार कभी हारते नहीं हैं। जब वह खुद चुनाव लड़ते हैं तो जीत उनकी होती है। जब जीत पक्की न हो तो वह मैदान में उतरते ही नहीं। फिर भी उन्हें एक चुनाव में हार का सामना करना पड़ा। यह उनके चुनावी करियर की एकमात्र हार है। बेशक यह पराजय राजनीतिक क्षेत्र में नहीं बल्कि क्रिकेट के मैदान में हुई। वर्ष 2004 में उन्हें तत्कालीन अध्यक्ष जगमोहन डालमिया के हाथों 'भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड' यानी 'बीसीसीआई' के चुनाव में बेहद कड़े मुकाबले में पराजय का सामना करना पड़ा। इससे वह हार नहीं माने। अगले ही साल उन्होंने डालमिया को हरा दिया और बीसीसीआई के अध्यक्ष बन गये।

अजित पवार राजनीति के चाणक्य कहे जाने वाले शरद पवार के भतीजे हैं। भतीजे ने पवार को भरी दोपहर में राजनीति के आसमान में तारे दिखा दिये हैं।

राजनीति

स्वामी, परिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा. लि. की ओर से इसके पब्लिकेशन डिवीजन, रेड़मा मेदिनीनगर (डालटनगंज), से हर्षवर्द्धन बजाज द्वारा प्रकाशित एवं पारिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा.लि. C/O शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पम्प, रातू, रांची-835222, झारखंड द्वारा मुद्रित. रजिस्ट्रेशन नं. **RNI.** 61316/94 पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं.-13 । प्रधान संपादक : सुरेश बजाज, संपादक : हर्षवर्द्धन बजाज, स्थानीय संपादक : ओम प्रकाश अमरेन्द्र*, प्रेस कार्यालय : रांची रोड, रेड़मा, मेदिनीनगर, (डालटनगंज) पलामू-822102, फोन नम्बर : 07759972937, 06562-240042/ 222539, फैक्स नम्बर : 06562-241176/231257, रांची कार्यालय : 502बी, पांचवी मंजिल मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान, हरमू रोड, रांची-83001, फोन नं.- 0651-2283384/ फैक्स : 0651-2283386, दिल्ली कार्यालय : 25-एलएफ, तानसेन मार्ग, नई दिल्ली-1, गढ़वा कार्यालय : मेन रोड, गढ़वा-822114, फोन : 9430164580, लातेहार कार्यालय : रमेश सेनेटरी, मेन रोड, लातेहार -829206, फोन : 9128656020, 7763034341, लोहरदगा कार्यालय : रिलायंस पेट्रोल पंप के बगल में, आशा कॉम्प्लेक्स लोहरदगा- फोन : 7903891779, 8271983099, ई-मेल : **rnm_hb@yahoo.co.in, rnm.hvb@gmail.com** (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार।)

वे रोग, जिन्हे यंत्र नहीं देख पाते : वातगुल्म

वैद्य ब्रजेश कुमार दुबे
पतंजली आरोग्य केन्द्र रेड़मा
डालटनगंज पलामू झारखण्ड
मो. - 7903216488, 9334716688

आयुर्वेद में कुछ रोगों के विस्तृत विवरण मिल जाते हैं, जिन्हे आज के यंत्र देख नहीं पाते। इन रोगों में से एक रोग 'वातगुल्म' का विवरण यहां राष्ट्रीय नवीन मेल के पाठकों हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है:-

याभिः क्रियाभिर्जायन्ते शरीरे धातवः समाः।
सा चिकित्सा विकाराणां कर्म तद्भिषजां स्मृतम् ।। (च.सू.16/34)

अर्थात :- जिन क्रियाओं द्वारा शरीर में दोषों की समता उत्पन्न हो, वही चिकित्सा है तथा चिकित्सकों का कर्तव्य भी यही है। स्वास्थ्य रक्षा की दृष्टि से भी दोषों की विषमता न होने पाये तथा दोषों की समता बनी रहे, चिकित्सकों के लिए यही प्रयत्न अपेक्षित है। जैसा कि आचार्य चरक के निम्नोद्धत वचन से स्पष्ट होता है-

कथं शरीरे धातुनां वैषम्यं न भवेदिति।
समानां चानुबन्धः स्यादित्यर्थ क्रियते क्रिया।। (च.सू. 16/35)

अर्थातः- शरीर में दोषों की विषमता किसी प्रकार न होने पाये तथा दोषों की समता बनी रहे, चिकित्सकों द्वारा इसी निमित्त क्रिया की जाती है। इस प्रकार हमें यह ज्ञात होता है कि त्रिदोष सिद्धांत का स्वास्थ्य रक्षा तथा रोगोपचार की दृष्टि से कितना महत्व है? त्रिदोष-सिद्धांत की उपादेयता आयुर्वेद के द्विविध प्रयोजन(स्वस्थ की स्वास्थ्य रक्षा तथा रोगाक्रांत का रोगाक्रांत का रोगोपचार) की सार्थकता ही है।

वातगुल्मः- प्रकृति हमारी माता है। हमारे स्वास्थ्य के विरोधी कोई तत्व अगर हमारे शरीर में पनपने लगता है तो प्रकृति उनको दूर करने के लिए भरसक प्रयत्न करती है। आँव भी एक ऐसा रोग है, जो शरीर में सेन्द्रिय विष तैयार करता है। इसलिये प्रकृति उस विष को निकालने के लिए बार-बार शौच की संख्या बढ़ा देती है। किसी भी चिकित्सक का प्रकृति के इस कार्य में सहयोग करना ही कर्तव्य है, उसके विरूद्ध जाना नहीं। जब आँव के दस्त लगते हैं तब रोगी को बार-बार शौच जाना पड़ता है और उसको मरोड़ भी बहुत होती है। वह चाहता है कि इन दोनों कष्टों से बचे और चिकित्सक के पास दौड़ता है। इस स्थिति में आर्युवेद रोगी के कष्ट की निवृत्ति के लिये बेल के मुरब्बे आदि का सेवन कराता है और परहेज कराता है। औषधि की योजना ऐसी बनाता है कि प्रकृति के कार्य में कोई बाधा न पड़ेऔर रोगी का कष्ट दूर हो जाये। किन्तु आजकल कुछ ऐसी औषधियां निकल गई हैं जिनको खिला देने के बाद रोगी को तत्काल कष्ट से छुटकारा हो जाता है और वह समझता है कि हम शीघ्र ही अच्छे हो गये। शायद चिकित्सक भी समझता होगा कि हमने रोगी को ठीक कर दिया। किन्तु होता उल्टा है। प्रकृति जिस विष को आँव के माध्यम से निकालना चाहती थी,वह आँव पेट में ही रह जाती है। तब वह दो रूपों में परिणत हो जाती है। एक तो वह आँव आंतों की दीवार से चिपककर परत की तरह बन जाती है। दूसरे उसी आँव के ऊपर कुछ मांस भी चारो तरफ से बढ़ने लगता है, जो कई किलो भार तक हो जाता है। किंतु इसे किसी यंत्र से नहीं देखा जा सकता है। इसी का नाम वातगुल्म है। आयुर्वेद के अनुसार गुल्म दो प्रकार के होते हैं

1.वातगुल्म व 2. रक्त गुल्म।

रक्तगुल्म तो गर्भाशय का रोग है और वामगुल्म पेट का रोग है। इसे देखने के दो उपाय हैं।-

1. रोगी को चित्त लिटा कर उसके दोनों पैरों को मोड़कर उसकी नाभी केचारो ओर अंगुलियों से टटोला जाये और उसकी सीमा देख ली जाये। हाथ का स्पर्श बता देता है कि पेट में एक गाँठ है और वह कितनी बड़ी है।

2. दूसरा उपाय यह है कि पेट खोल कर देखें तो आँखें साफ देख लेती हैं कि पेट में बहुत बड़ी गांठ है। एक रोगी का पेट खोला गया, मैं उसमें सर्जन के सामने था, उसके पेट में गुल्म की चार गांठे थीं। सबका ऑपरेशन एक साथ संभव न था, इसलिए पेट सी दिया गया। प्रायः एक ही आपरेशन में मृत्यु हो जाती है, बहुत सावधानी बरतने पर कई ऑपरेशन संभव हैं

औषधिः- (1) महाशंखवटी-2ग्राम, कृमिमुद्गर रस-3ग्राम, प्रवाल पंचामृत-3 ग्राम, कामदुधा रस-4ग्राम, साधारण सूतशेखर रस-3 ग्राम, अम्बर-1/6 ग्राम, सिद्धमकर-ध्वज-1 ग्राम, सितोपलादि-25 ग्राम- इन औषधियों की 21 पुड़िया बनायें। एक-एक पुड़िया खाली पेट मधु के साथ सेवन करें सुबह शाम।

(2) कुबेराक्षादि वटी-दो गोली, लहसुनादि वटी-दो गोली- चारो गोलियां निगल कर मीठा कुमार्यासव चार ढक्कन औषधि बराबर पानी मिलाकर पी लें। इसे भोजन के आधे घंटे बाद दोनों समय लें।

यदि लहसुन का परहेज हो तो लहसुनादि वटी के स्थान पर कपीलुहिंग्वादि वटी एक या दो गोली लें।

(3) रात को सोते समय 10 ग्राम ईसबगोल की भूसी के साथ त्रिफला चूर्ण पानी या दूध(गुनगुना) से लें। दूध में चीनी मिलायी जा सकती है। पेट को साफ रखना आवश्यक है। ईसबगोल की भूसी परत की तरह आँतों में चिपके आँव को फुलाता है और त्रिफला उसे निकालता है। इसलिए औषध सेवन करने पर यदि शौच में चिकनाहट मालूम पड़ै तो रोगी घबड़ाये नहीं, वह समझे की आँव निकल रही है।

इस रोग में प्रायः अम्लपित्त भी हो जाता है, ऐसी स्थिति में अविपत्तिकर चूर्ण पाँच-पाँच ग्रम भोजन से दस मिनट पहले पानी संग ले लें। एक महीने के लिए खट्टे फल का प्रयोग निषिद्ध है। इस अवसर पर मलाई निकाले हुए पावभर दूध को फ्रिज में रख दें। यदि फ्रिज न हो तो मिट्टी के बरतन में पानी डाल दें, उसी में दूधवाले बर्तन को रख दें ताकि दूध ठंडा बना रहे। प्रत्येक दो घंटे पर पचास ग्राम दूध घर के चने के सत्तु के साथ लेते रहें। इस रोग में परहेज बहुत जरूरी है।

काव्य कोना

हे अविनश्वर

ऊषा की पावन पुनीत बेला
आशा की नगरी से
विछोह की विदाई।
हे अविनश्वर!
कैसा संयोग!
नटराज की काया
रस का बखान
सृष्टि से संहार से सृष्टि
संधि और विच्छेद
क्रिया और कारक।
हे अविनश्वर!
कैसा प्रहार!
फूलों की पंखुरी पर
क्रुद्ध प्रभंजन का आघात
निर्मल और निर्मम
मिलन अनोखा।
हे अविनश्वर!
कैसा विरोधाभास!
यायावरी का चक्कर
स्थावर का जीवन
समागम असंभव
विग्रह न संभव
फिर भी,
सामंजस्य की लय पर
हे अविनश्वर!

❖ नाग मणि

गुरुओं का सम्मान है गुरु पूर्णिमा

किसी भी शिष्य के जीवन में गुरु का योगदान सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। गुरु के बिना ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती तथा ज्ञान की प्राप्ति ही जीवन में सारे अंधकार को दूर कर सकती है। गुरु के बिना जीवन की कल्पना भी अधूरी है। हर गुरु की आशा होती है कि उनका शिष्य उच्चतम शिखर तक जाए। गुरु के बिना किसी दिशा क्षेत्र में उपलब्धि पाना नामुमकिन है। गुरु में 'गु' का अर्थ अंधकार एवं 'रु' का अर्थ ज्ञान है। अतः जो अंधकार जीवन में ज्ञान की रौशनी भर दे वही गुरु है। गुरु शिष्य के मध्य गहरा रिश्ता होता है।

ईश्वर से भी ऊंचा स्थान गुरु को दिया गया है कबीर दास जी का दोहा इस विचार पर सटीक है कि

गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय।।

हिंदू मान्यताओं के अनुसार गुरु पूर्णिमा का त्यौहार आसाढ़ माह में पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। महर्षि वेदव्यास चारो वेदों और महाभारत के रचयिता हैं। वेद के रचयिता होने के कारण उन्हें वेदव्यास भी कहा जाता है। उनके हीं शिष्यों द्वारा गुरु पूजा की परंपरा प्रारंभ हुई। वेदव्यास जी का जन्म आषाढ़ माह में पूर्णिमा के दिन हुआ था इसलिए इसे व्यास दिवस या व्यास पूर्णिमा भी कहते हैं। इसके अलावा हिंदू धर्म में गुरु पूर्णिमा के लिए एक और घटना का उल्लेख है। भगवान शंकर की पूजा गुरु के रूप में की जाती है क्योंकि भगवान शंकर ने सप्तर्षियों को योग एवं कई प्रकार के ज्ञान का उपदेश दिया था।

गुरु पूर्णिमा हिंदू धर्म में ही नहीं बल्कि बौद्ध, जैन एवं कई धर्मों में मनाया जाता है। बौद्ध धर्म का मानना है कि भगवान बुद्ध को 'गया' के पास बोधि वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था और भगवान बुद्ध ने बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार अपने शिष्यों द्वारा करवाएँ इसलिए उनके सम्मान के रूप में गुरु पूर्णिमा मनाया जाने लगा।

किसी भी बच्चे के लिए उनके माता-पिता या अभिभावक प्रथम गुरु होते हैं क्योंकि उनका मार्गदर्शन बच्चे को प्राप्त होता है। इस बात की पुष्टि मैं स्वरचित दोहा के साथ कर रही हूं-

अनुपम छवि मां की सदा, करती मिथ्या क्रोध।
माता तो है गुरु प्रथम, देती जीवन बोध।।

पूर्णिमा तिथि भगवान विष्णु को समर्पित मानी जाती है। इस दिन सभी लोग पूजा- अर्चना करते हैं। घरों और मंदिरों में भी पूजा पाठ होती है। गुरु पूर्णिमा में गुरु के साथ शिव जी की भी पूजा की जाती है।

संस्कृत में एक श्लोक है
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुदेवी महेश्वरः।
गुरुः साक्षात परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

अर्थात गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है, गुरु ही शंकर है, गुरु ही साक्षात परब्रह्म का रूप है, उन सद्गुरु को प्रणाम। गुरु के बिना किसी दिशा क्षेत्र में उपलब्धि पाना नामुमकिन है। गीता में भगवान श्री कृष्ण जी ने गुरु शिष्य परंपरा को 'परंपराप्राप्तम्ह योग बताया है। गुरु शिष्य परंपरा आध्यात्मिक प्रज्ञा का नई पीढ़ियों तक पहुंचाने का सोपान है। वर्तमान समय में इस तिथि का ज्ञान बच्चों को नहीं होता है। वह सनातन धर्म से दूर होते जा रहे हैं इसलिए हम सभी का कर्तव्य है उन्हें संस्कार ,त्योहार और परंपरा से जोड़ें। इस दिन बच्चों से उनके गुरु की पूजा करवाई जाए। गुरु पूर्णिमा एक त्यौहार है जो सभी आध्यात्मिक और शैक्षणिक गुरुओं को सम्मान देने के लिए समर्पित है। कलयुग में गुरु की छवि धूमिल हुई है लेकिन इससे उनका महत्व कम नहीं होता। अनेक गुरु आज भी निःस्वार्थ भाव से ज्ञान देते हैं। आज गुरु शिष्य परंपरा अर्थ और यश से जुड़कर अनर्थ की ओर अग्रसर से नैतिकता का पतन हो रहा है। आज भी अनेक गुरु निःस्वार्थ भाव से ज्ञान देते हैं जिनमें 'श्री मनोज कुमार गुप्ता जी' का नाम भी है। वह लगभग आठ वर्षों से योग कक्षा 'राज्य योग केंद्र, रांची' में निःस्वार्थ भाव से ले रहे हैं। इनका नाम न वहां दर्ज है, न इनको कोई शुल्क प्राप्त होता है। फिर भी गाड़ीखाना चौक से जेल रोड प्रत्येक दिन सुबह छः बजे आते हैं। जब इन्होंने कक्षा अपने सहयोगी जगदीश जी के साथ शुरू किया था तो केवल दो शिष्य हीं जुड़े थें। अभी तक इन्होंने पांच सौ व्यक्तियों को योग से रूबरू करवाया और स्वस्थ जीवन का आशीर्वाद दिया। अभी भी लगभग पचास से सत्तर शिष्य प्रत्येक दिन योग शिक्षा लेने इस केंद्र में आते हैं।

इनके निःस्वार्थ भाव को स्वरचित पंक्तियां समर्पित कर नमन करती हूं-

गुरु बिन मिलता ही नहीं, शिष्यों सच्चा ज्ञान।
सीखो गुरु से तुम सदा, सभ्य बने इंसान।।
राहों से कांटे हटा ,करें लक्ष्य आसान।
शिक्षा उनसे जब मिले, ईश्वर सा दो मान।।

❖ खुशबू बरनवाल 'सीपी'

श्रावण मास के प्रमुख त्योहार, धार्मिक महत्व व पूजन विधि

श्रावण मास के प्रथम सोमवार से इस व्रत को शुरू किया जाता है। प्रत्येक सोमवार को गणेशजी, शिवजी, पार्वतीजी की पूजा की जाती है। इस सोमवार व्रत से पुत्रहीन पुत्रवान और निर्धन धर्मवान होते हैं। स्त्री अगर यह व्रत करती है, तो उसके पति की शिवजी रक्षा करते हैं। आगामी चार जुलाई से पवित्र श्रावण मास का प्रारम्भ हो रहा है। इस वर्ष अधिमास के कारण श्रावण मास दो माह की अवधि का है। इस अवधि में श्रावणी शिवरात्रि, नागपंचमी और रक्षाबंधन का पर्व मनाया जाएगा। इसके अलावा श्रावण मास में परम्परागत कांवड़ यात्रा निकलेगी। इस दौरान देशभर के प्रसिद्ध शिवालयों में उत्सव का माहौल रहेगा। साथ ही पवित्र अमरनाथ यात्रा का शुभारम्भ हो ही चुका है। देखा जाये तो श्रावण मास भगवान शिवजी का प्रिय मास है इसलिए हर शिव भक्त इस मास में भगवान को प्रसन्न करने का प्रयास करता है। भगवान शंकर तो सिर्फ एक लोटे जल से भी प्रसन्न हो जाते हैं बशर्ते वह सच्चे मन से अर्पित किया गया हो। श्रावण अथवा सावन हिन्दू पंचांग के अनुसार वर्ष का पांचवां महीना होता है जोकि ईस्वी कलेंडर के जुलाई या अगस्त माह में पड़ता है। इस माह में अनेक महत्त्वपूर्ण त्योहार मनाए जाते हैं, जिसमें 'हरियाली तीज', 'रक्षा बन्धन', 'नाग पंचमी' आदि प्रमुख हैं।

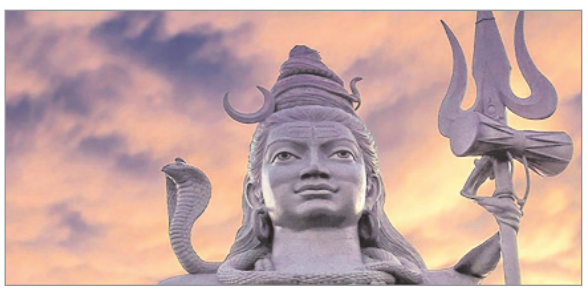

श्रावण मास पूजन विधि : श्रद्धालु इस पूरे मास शिवजी के निमित्त व्रत और प्रतिदिन उनकी विशेष पूजा आराधना करते हैं। शिवजी की पूजा में गंगाजल के उपयोग को

विशिष्ट माना जाता है। शिवजी की पूजा आराधना करते समय उनके पूरे परिवार अर्थात शिवलिंग, माता पार्वती, कार्तिकेयजी, गणेशजी और उनके वाहन नन्दी की संयुक्त रूप से पूजा की जानी चाहिए। शिवजी के स्नान के लिए गंगाजल का उपयोग किया जाता है। इसके अलावा कुछ लोग भांग घोंटकर भी चढ़ाते हैं। शिवजी की पूजा में लगने वाली सामग्री में जल, दूध, दही, चीनी, घी, शहद, पंचामृत, कलावा, वस्त्र, जनेऊ, चन्दन, रोली, चावल, फूल, बिल्वपत्र, दूर्वा, फल, विजिया, आक, धूतूरा, कमल-गट्टा, पान, सुपारी, लौंग, इलायची, पंचमेवा, धूप, दीप का इस्तेमाल किया जाता है।

श्रावण मास के सोमवार को व्रत करते समय ध्यान दें : श्रावण मास के प्रथम सोमवार से इस व्रत को शुरू किया जाता है। प्रत्येक सोमवार को गणेशजी, शिवजी, पार्वतीजी की पूजा की जाती है। इस सोमवार व्रत से पुत्रहीन पुत्रवान और निर्धन धर्मवान होते हैं। स्त्री अगर यह व्रत करती है, तो उसके पति की शिवजी रक्षा करते हैं। सोमवार का व्रत साधारणतः दिन के तीसरे पहर तक होता है। इस व्रत में फलाहार या पारण का कोई खास नियम नहीं है, किंतु आवश्यक है कि दिन-रात में केवल एक ही समय भोजन करें। सोमवार के व्रत में शिव-पार्वती का पूजन करना चाहिए।

श्रावण मास की महत्ता : इस मास के बारे में यह भी माना जाता है कि इस दौरान भगवान शिव पृथ्वी पर अवतरित होकर अपनी ससुराल गए थे और वहां उनका स्वागत आर्घ्य और जलाभिषेक से किया गया था। माना जाता है कि प्रत्येक वर्ष सावन माह में भगवान शिव अपनी ससुराल आते हैं। भू-लोक वासियों के लिए शिव कृपा पाने का यह उत्तम समय होता है। इसके अलावा पौराणिक कथाओं में वर्णन आता है कि इसी सावन मास में समुद्र मंथन किया गया था। समुद्र मथने के बाद जो विष निकला, उसे भगवान शंकर ने कंठ में समाहित कर सृष्टि की रक्षा की, लेकिन विषपान से महादेव का कंठ नीलवर्ण हो गया। इसी से उनका नाम 'नीलकंठ महादेव' पड़ा। विष के प्रभाव को कम करने के लिए सभी देवी-देवताओं ने उन्हें जल अर्पित किया। इसलिए शिवलिंग पर जल चढ़ाने का खास महत्व है। यही वजह है कि श्रावण मास में भोले को जल चढ़ाने से विशेष फल की प्राप्ति होती है। शिवपुराण' में उल्लेख है कि भगवान शिव स्वयं ही जल हैं।

❖ शुभा दुबे

सूडोकु नवताल- 6749

★★★✯☆ मध्यम

4	6		3		8	9		7
	1		9		6		5	4
						8		
	4		5				8	
2		5		4		6		1
	3				1		7	
		3						
5	9		7		2		6	
7		6	4		3		9	2

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -6748 का हल

5	7	2	3	8	4	1	9	6
8	6	1	9	2	5	7	3	4
3	9	4	1	6	7	5	8	2
2	5	7	4	1	3	8	6	9
4	8	6	5	9	2	3	7	1
1	3	9	6	7	8	4	2	5
6	2	3	7	4	1	9	5	8
9	4	5	8	3	6	2	1	7
7	1	8	2	5	9	6	4	3

दैनिक पंचांग

03 जुलाई को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य	मिथुन में	कर्क	06.23 बजे से
चंद्र	धनु में	सिंह	08.39 बजे से
मंगल	सिंह में	कन्या	10.51 बजे से
बुध	मिथुन में	तुला	13.01 बजे से
गुरु	मेष में	वृश्चिक	15.16 ब.से
शुक्र	कर्क में	धनु	17.32 बजे से
शनि	कुंभ में	मकर	19.37 बजे से
राहु	मेष में	कुंभ	21.24 बजे से
केतु	तुला में	मीन	22.57 बजे से
राहुकाल		मेष	00.27 बजे से
7.30 से 9.00		वृष	02.07 बजे से
बजे तक		मिथुन	04.05 बजे से

सोमवार 2023 वर्ष का 184 वां दिन **दिशाशूल** पूर्व **ऋतु** वर्षा। **विक्रम संवत्** 2080 **शक संवत्** 1945 **मास** आषाढ़ **पक्ष** शुक्ल **तिथि** पूर्णिमा 17.09 बजे को समाप्त। **नक्षत्र** मूल 11.02 बजे को समाप्त। **योग** ब्रह्म 15.45 बजे को समाप्त। **करण** विष्टि 06.48 बजे, बव 17.09 बजे तदनन्तर बालव 03.25 बजे रात्र को समाप्त। **चन्द्रायु** 14.8 घण्टे **रवि क्रान्ति** उत्तर 23° 00' **सूर्य** उत्तरायन **कलि अहर्गण** 1871663 **जूलियन दिन** 2460128.5 **कलियुग संवत्** 5123 **कल्पारंभ संवत्** 1972949123 **सृष्टि ग्रहारंभ संवत्** 1955885123 **वीरनिर्वाण संवत्** 2549 **हिजरी सन्** 1444 **महीना** जिल्हेज **तारीख** 14 **विशेष** व्यास पूजा, आषाढ़ पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, संत थॉमस डे।

दिन का चौघड़िया			रात का चौघड़िया		
अमृत	05.53 से	07.22 बजे तक	चर	05.43 से	07.14 बजे तक
काल	07.22 से	08.50 बजे तक	रोग	07.14 से	08.45 बजे तक
शुभ	08.50 से	10.19 बजे तक	काल	08.45 से	10.17 बजे तक
रोग	10.19 से	11.48 बजे तक	लाभ	10.17 से	11.48 बजे तक
उद्वेग	11.48 से	01.17 बजे तक	उद्वेग	11.48 से	01.19 बजे तक
चर	01.17 से	02.45 बजे तक	शुभ	01.19 से	02.51 बजे तक
लाभ	02.45 से	04.14 बजे तक	अमृत	02.51 से	04.2 बजे तक
अमृत	04.14 से	05.43 बजे तक	चर	04.22 से	05.53 बजे तक

चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अतः आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें।

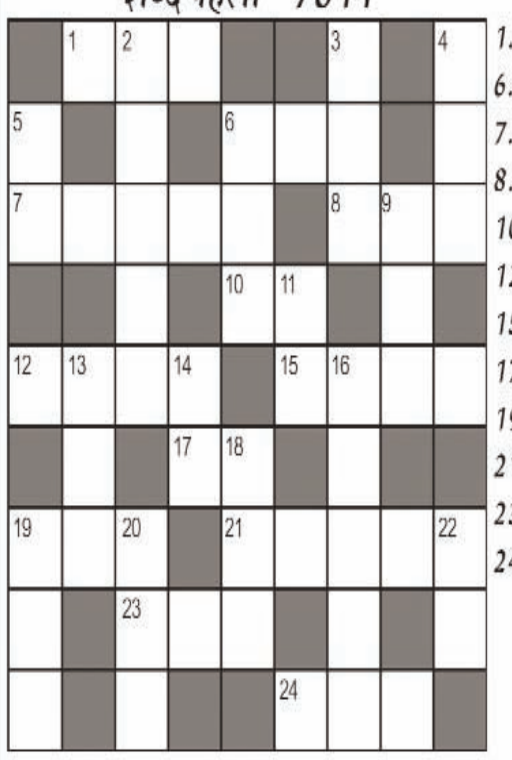

शब्द पहेली - 7811

बाएँ से दाएँ

1.सिंह,शेर-3
6.कृषि पैदावार-3
7.कमल सरोवर-5
8.बारीक-3
10.जरा,थोड़ा-2
12.वाराणसी-4
15.टूटना,तड़कना-4
17.शराब,मदिरा-2
19.बुद्धि,मति-3
21.सेवा,,चाकरी,देखभाल-5
23.कर्म,भाग्य-3
24.यज्ञ,होम-3

ऊपर से नीचे

2.आक्रमणकारी-5
3.समा,माहौल-3
4.आर्द्रता,नमी-3
5.चट्टान (अंग्रेजी-2)
6.अंतर,फर्क-3
9.षष्ठीपूर्ति,60 वर्ष पूरे होना-3
11.नशा,खुमार-2
13.नरम,मुलायम-3
14.एक जैसा,समान-2
16.सार-संभाल-2,3
18.अनाथ,बेसहारा-3
19.खालिस,शुद्ध-3
20.फालिज,पक्षाघात-3
22.क्रोध,खीज,गुस्सा-2

शब्द पहेली -7810 का हल

आज का राशिफल

मेष राशि : मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने का प्रयास होंगे। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा।

वृष राशि : समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा।

मिथुन राशि : एकाकी वृत्ति त्यागें। हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात दूर हो जाएगी। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे। साथ ही आगे के लिए रास्ता भी बन जाएगा।

कर्क राशि : कहीं रुका हुआ पैसा वसूलने में मदद मिल जाएगी। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा।

सिंह राशि : मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश सफल होगी। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा।

कन्या राशि : आत्मविश्वास बढ़ेगा। कारोबारी काम में बाधा उभरने से मानसिक अशांति बनी रहेगी। यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा।

तुला राशि : स्वास्थ्य लाभ में समय और धन व्यय होगा। लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी।

वृश्चिक राशि : पर-प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। आलस्य का त्याग करें। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा।

धनु राशि : कार्यक्षेत्र में संतोषजनक सफलता मिलेगी। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। पत्नी व संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी।

मकर राशि : पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। खान-पान में सावधानी रखें। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी।

कुंभ राशि : शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। खान-पान में सावधानी रखें। व्यापार में प्रगति होगी। अपने अधीनस्थ लोगों से कम सहयोग मिलेगा। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है।

मीन राशि : जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी। आलस्य का त्याग करें। पुरुषार्थ का सहारा लें। कार्यसिद्धि होने में देर नहीं लगेगी।

KASHYAP'S DENTAL CLINIC
Dr. Vaibhav Kashyap
Oral & Dental Surgeon, C.c. Endodontist &
Implantologist Certified Orthodontist, MIDA
" Smiles & More"
छात्र-छात्राओं के लिए
50% की छूट
Facilities
❖ आरसीटी
❖ पायरिया का ईलाज
❖ टेढ़े-मेढ़े दाँतों का ईलाज
❖ स्माईल डिजाइन
❖ इनविजिवल क्लिप
❖ दंत रोपण
❖ फिक्स दाँत लगाना
❖ अत्याधुनिक मशीन और तकनीक के द्वारा ईलाज

CHAMBER
SKYLINE - 4006, 4th Floor, Kadru, Opp. Dr. Lal's Hospital, Ranchi
Contact No. : 9199533383, 7903835453
Time : 9 am to 2 pm & 4 pm to 8 pm
Sunday : 9 am to 2 pm
E-mail : vaibhav.kashyap2011@gmail.com

NEWS इन ब्रीफ

वकीलों ने राज्यपाल को पद से हटाने के लिए राष्ट्रपति को लिखा पत्र

चेन्नई। मद्रास उच्च न्यायालय के अधिवक्ताओं के एक समूह ने तमिलनाडु के राज्यपाल आर.एन. रवि को हटाने के लिए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को पत्र लिखा है। वकीलों ने पत्र में लिखा कि राज्यपाल को वापस नहीं बुलाने से राज्य में कानून-व्यवस्था की स्थिति बिगड़ जायेगी। पत्र में कहा गया है कि राज्यपाल ने भारत के संविधान में उल्लिखित किसी भी शक्ति के बिना तमिलनाडु के मंत्री सेंथिल बालाजी को बर्खास्त कर दिया।

बेटियों की अनूठी पहल, लाडली उपवन में किया पौधरोपण

बांसवाड़ा। कहते हैं कि एक बेटी दो घरों की पीढ़ियों को संवारती है, उसी तरह एक पेड़ हजारों लोगों को ऑक्सीजन देकर जीवित रखता है। कमोबेश इसी ध्येय को लेकर बांसवाड़ा की बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ की ब्रांड एंबेसडर डॉ. रक्षा सराफ ने एक मुहिम शुरू की है जिसकी थीम रखी गई है एक बेटी एक पेड़। इसी को लेकर रविवार को शहर के कागदी पीकप वियर पर लाडली उपवन स्थापित किया गया है जिसमें शहर के पांच सौ अभिभावकों ने अपनी लाडली बेटियों के साथ पौध रोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इस अवसर पर जिला कलेक्टर प्रकाश चंद्र शर्मा, पार्षद चंदा डामोर, अरविंद सीता डामोर, अंकुर संस्थान सचिव शैलेंद्र सराफ सहित कई लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम में सभी अभिभावकों ने चौदह वर्ष तक की अपनी लाडली बेटी के साथ लाडली उपवन में एक-एक पौधा लगाया।

'मोदी सरकार ने पिछड़ा समाज को दी संवैधानिक मान्यता'

एजेंसी। लखनऊ

वरिष्ठ भाजपा नेता और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को यहां कहा कि आजादी के बाद कभी भी किसी ने पिछड़ा समाज को संवैधानिक मान्यता नहीं दी थी। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने पिछड़ा वर्ग आयोग गठित कर पिछड़ा समाज को संवैधानिक मान्यता दी है। राजधानी लखनऊ के इंदिरागांधी प्रतिष्ठान में अपना दल के संस्थापक डॉ. सोनेलाल पटेल की जयंती पर आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए अमित शाह ने कहा कि आजादी के बाद भजपा के नेतृत्व में एनडीए का मंत्रिमंडल है, जिसमें सबसे ज्यादा 27 केंद्रीय मंत्री

पिछड़े समाज से हैं। सबसे ज्यादा दलित और पिछड़ा समाज के सांसद चुनकर मोदी के नेतृत्व में आये हैं। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने पिछड़ी समाज के लोगों को आरक्षण देने का काम किया है। ओबीसी बच्चों के खाते में डीबीटी के माध्यम से पैसा भेजने का काम नरेंद्र मोदी सरकार ने किया है। सुहेलदेव राजभर के नाम पर विश्वविद्यालय और सोने लाल पटेल के नाम पर मेडिकल कॉलेज बना है। केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि पिछले चारों चुनाव भाजपा और अपना दल ने मिलकर लड़े हैं। मिलकर जीते हैं। सपा, बसपा के विघटनकारी नीतियों का जवाब दिया है। 24 में भी अपना दल और निषाद पार्टी के साथ मिलकर भाजपा चुनाव लड़ेगी।

रिवर क्रूज गुजरात के लिए बनेगा आकर्षण का केंद्र : शाह

अहमदाबाद। केन्द्रीय गृह और सहकारिता मंत्री अमित शाह ने अहमदाबाद के साबरमती रिवरफ्रंट पर रविवार को रिवर क्रूज का वर्चुअली लोकार्पण किया। इस मौके पर उन्होंने अपने वर्चुअली संबोधन में कहा कि अहमदाबाद शहर को रिवर क्रूज के जरिए नया नजराना मिला है। एक समय ऐसा था कि साबरमती नदी एक गंदे पानी का पोखर (तालाब) के रूप में पहचाना जाती थी, परंतु तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रिवरफ्रंट की परिकल्पना कर इसे साकार कर दिखाया। आज रिवरफ्रंट महज अहमदाबाद शहर का नहीं, बल्कि राज्य में आकर्षण का केन्द्र बन गया है। इतना ही नहीं रिवरफ्रंट सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र भी बना है।

अजित के खिलाफ कार्रवाई होगी : शरद पवार

एजेंसी। मुंबई

राकांपा के अध्यक्ष शरद पवार ने कहा कि उनकी पार्टी टूटी नहीं है, लेकिन अजीत पवार के खिलाफ पार्टी स्तर पर कार्रवाई की जाएगी। इस बीच महाराष्ट्र के राज्य के नवनिर्वाचित उपमुख्यमंत्री अजित पवार के पुणे दफ्तर के बाहर सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी गई है। अजित पवार ने अपने ट्विटर हैंडल पर प्रोफाइल बदलकर उपमुख्यमंत्री लिखा है। शरद पवार ने रविवार को पत्रकारों से बातचीत में कहा कि दो दिन पहले पीएम ने एनसीपी को लेकर अपने बयान में दो बातें कही थीं कि एनसीपी एक खत्म हो चुकी पार्टी है। उन्होंने सिंचाई की शिकायत और भ्रष्टाचार के आरोपों का जिक्र किया था। शरद पवार ने कहा कि मुझे खुशी है कि मेरे कुछ साथियों ने शपथ ली है। इससे (एनडीए सरकार में शामिल होने) यह स्पष्ट है कि सभी आरोप मुक्त हो गए हैं। शरद पवार ने कहा कि मुझे बहुत से

लोगों से फोन आ रहे हैं, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और अन्य लोगों ने मुझे फोन किया है। आज जो कुछ भी हुआ, मुझे उसकी चिंता नहीं है। कल मैं सातारा के कराड में जाकर वाईबी चव्हाण (महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री) का आशीर्वाद लूंगा और एक सार्वजनिक बैठक करूंगा। शरद पवार ने कहा कि यह कोई नई बात नहीं है। 1980 में मैं जिस पार्टी का नेतृत्व कर रहा था, उसके 58 विधायक साथ थे, बाद में सभी चले गए और केवल 6 विधायक बचे, लेकिन मैंने संख्या को मजबूत किया और जिन्होंने मुझे छोड़ा वे अपने निर्वाचन क्षेत्रों में हार गए। मैंने 6 जुलाई को सभी नेताओं की एक बैठक बुलाई थी, जहां कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा होनी थी। पार्टी के भीतर कुछ बदलाव किए जाने थे, लेकिन उससे पहले ही कुछ नेताओं ने अलग रुख अपनाया है। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कहा कि हमारा उद्देश्य सत्ता नहीं है, जैसे 2019 में सत्ता की लालच में कुछ लोगों ने जनमत को ठुकराया और बाला साहेब ठाकरे के विचार को तोड़ मरोड़ दिया और कुर्सी पर बैठ गए। ऐसी सत्ता की लालच हमें नहीं है। हमारा एजेंडा है कि महाराष्ट्र की जनता को न्याय मिले। जब किसी कर्मठ नेता-कार्यकर्ता को दबाया जाता है तब ऐसी घटना होती है। अजीत पवार एक काम करने वाले नेता है, विकास के ऊपर विश्वास रखने वाले नेता हैं, इसलिए सबने उनका साथ दिया है।

उत्तर प्रदेश एटीएस ने 2 संदिग्ध आतंकियों को किया गिरफ्तार

एजेंसी। लखनऊ

यूपी एटीएस ने रविवार को चलाए गए एक सर्च ऑपरेशन में आतंकी मुजाहिद्दीन और अलकायदा के दो संदिग्ध आतंकियों को गिरफ्तार किया है। यह दोनों सोशल मीडिया के माध्यम से देश विरोधी गतिविधियों में शामिल है। प्रारंभिक जानकारी के मुताबिक, आतंकी गतिवधियों में संलिप्त सद्दाम शेख मूलरूप से उत्तर प्रदेश के गोंडा जिले के देहात कोतवाली क्षेत्र स्थित पठान पुरवा का रहने वाला है। दूसरा संदिग्ध रिजवान जम्मू-कश्मीर के बीपीओ सलवां पूंछ का निवासी है। वो ओसामा बिन लादेन, जाकिर मूसा, रियाज नायकू जैसे कई खतरनाक आर्तकियों को अपना आइडल मानता है। उसके

फोन में कई आतंकियों की फोटो एवं वीडियो भी मिले हैं। वो पीड़ित मुसलमानों को इकट्ठा करके वह अपनी एक सेना बनाना चाहता था। आतंकी गतिविधियों से जुड़े दस्तावेजों को पाकिस्तान और आईएसआई आतंकी संगठनों को शेयर करने के प्रमाण मिले हैं। साथ ही उसने सोशल मीडिया पर कई आपत्तिजनक और देश विरोधी सामग्री भी विवादित पोस्ट भी की हैं। वह पाकिस्तानी और कश्मीरी मिलिटेंट के संपर्क में था।

तेलंगाना में कांग्रेस की नई सुबह का ब्लूप्रिंट तैयार : मल्लिकार्जुन खड़गे

एजेंसी। हैदराबाद

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने रविवार को कहा कि तेलंगाना में पार्टी की 'नई सुबह' के लिए ब्लूप्रिंट तैयार है।खम्मम में पार्टी सांसद राहुल गांधी की सार्वजनिक बैठक से कुछ घंटे पहले खड़गे ने ट्विटर पर कहा कि तेलंगाना के 3.8 करोड़ लोग बदलाव चाहते हैं।कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि राहुल गांधी की विशाल 'तेलंगाना जन गर्जना' रैली राज्य के लोगों की साझा आकांक्षाओं को व्यक्त करेगी। खड़गे ने ट्वीट किया, तेलंगाना में नई सुबह के लिए हमारा ब्लूप्रिंट तैयार है। हम सामाजिक न्याय और समानता के

आधार पर तेलंगाना के विकास और प्रगति के लिए दृढ़ता से प्रतिबद्ध हैं। राहुल गांधी आज शाम खम्मम में एक जनसभा को संबोधित करने वाले हैं।खड़गे ने 1,360 किलोमीटर लंबी पदयात्रा पूरी होने पर कांग्रेस विधायक दल (सीएलपी) के नेता मल्लू भट्टी विक्रमार्क को बधाई दी। 'पीपुल्स मार्च' के नाम से चल रही उनकी पदयात्रा खम्मम की जनसभा में समाप्त होगी। एआईसीसी प्रमुख ने कहा कि जनसभा में कई वरिष्ठ नेता कांग्रेस पार्टी में शामिल होंगे और लोगों के हाथ मजबूत करेंगे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी को तेलंगाना प्रदेश कांग्रेस कमेटी (टीपीसीसी) के सामूहिक नेतृत्व पर गर्व है।खम्मम के पूर्व सांसद पोंगुलेटी श्रीनिवास रेड्डी, जिन्हें हाल ही में भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) ने निलंबित कर दिया था, अपने समर्थकों के साथ कांग्रेस में शामिल होने वाले हैं। तेलंगाना में इस साल के अंत में विधानसभा चुनाव होने हैं।

जातीय जनगणना जरूरी : अखिलेश

एजेंसी। लखनऊ

नौकरियों में पीडीए (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) की हिस्सेदारी को सार्वजनिक किया जाय। गैर बराबरी तभी खत्म होगी, जब जातीय जनगणना हो और आबादी के हिसाब से सभी को हक और सम्मान मिले। यह बातें समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कही। वह डा. सोने लाल पटेल की जयंती पर सपा मुख्यालय में आयोजित कार्यक्रम में बोल रहे थे। समान नागरिक संहिता (यूसीसी) पर अखिलेश ने कहा कि वह इसके विरोध में हैं। उन्होंने कहा कि जितने रोजगार अभी तक दिए हैं, सरकार बताए कि पीडीए के लोग कितने हैं, क्योंकि जब हम सरकार में थे तब खूब लिस्ट जारी होती थी। कई राज्यों में राजनीतिक उठापटक पर बोले कि पहले मध्य प्रदेश भाजपा की प्रयोगशाला थी। अब महाराष्ट्र उससे बड़ी प्रयोगशाला हो गई है। सवाल किया कि मुनाफा किसके जेब में जा रहा है। उधार लेकर अर्थव्यवस्था संभाली जा रही है।अखिलेश ने ग्लोबल इन्वेस्टमेंट मीट पर कटाक्ष करते हुए कहा कि इन्वेस्टमेंट मीट तो हुई लेकिन एमओयू जमीन पर होते तो यूपी की तस्वीर अलग होती। जीडीपी की ग्रोथ रेट नीचे होने से साफ है कि गरीब का घर खुशहाल नहीं है। कहा कि डीएम ने चालू कारखानों को भी एमओयू में शामिल कर दिया। अखिलेश ने कहा कि अपना दल के संस्थापक डॉ सोनेलाल पटेल का जन्म स्थान कन्नौज था और मेरी कर्मस्थली भी कन्नौज है।

पाक : बलूचिस्तान चेकपोस्ट पर हमले में 4 सुरक्षाकर्मी मारे गए

एजेंसी। इस्लामाबाद

बलूचिस्तान के शेरानी उपजिला के धाना सार इलाके में पुलिस और लेवी जांच चौकियों पर रविवार को हुए हमले में तीन पुलिस अधिकारी और फ्रंटियर कांस्टेबुलरी (एफसी) के एक जवान की मौत हो गई। मीडिया रिपोर्ट में कहा गया है कि एक आतंकवादी को मार गिराया गया है। डॉन की रिपोर्ट के अनुसार, शेरानी के डिप्टी कमिश्नर (डीसी) बिलाल शब्बीर ने मौतों की पुष्टि की है। उन?होंने कहा कि सुरक्षा बलों और आतंकवादियों के बीच गोलीबारी लगभग दो घंटे तक जारी रही। इसमें एफसी का एक अन्य कर्मी घायल हो गया, जिसकी हालत खतरे से बाहर है। गोलीबारी के दौरान एक आतंकवादी मारा गया, जबकि दो अन्य घायल हो गए। डीसी शब्बीर ने कहा, ह्यघायल आतंकवादियों के साथी उन्हें ले जाने में सफल रहे। मीडिया आउटलेट ने बताया कि मृत आतंकवादी का शव सीटीडी (आतंकवाद-रोधी विभाग) को सौंप दिया गया है। पिछले साल नवंबर में प्रतिबंधित टीटीपी द्वारा सरकार के साथ संघर्ष विराम समाप्त करने के बाद पाकिस्तान में विशेष रूप से खैबर पख्तूनख्वा और बलूचिस्तान में आतंकवादी गतिविधियों में वृद्धि देखी गई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि एक दिन पहले क्वेटा के स्मार्ट पुलिस स्टेशन पर एक हैंड ग्रेनेड हमले में एक पुलिस कांस्टेबल घायल हो गया था। बलूचिस्तान के तुरबत में 24 जून को एक पुलिस वैन पर आत्मघाती हमले में एक पुलिस अधिकारी की मौत हो गई और दो अन्य घायल हो गए। पाकिस्तान-ईरान सीमा पर एक महीने पहले बलूचिस्तान के केच जिले के सिंगवान इलाके में सुरक्षा बलों की जांच चौकी पर आतंकवादियों के हमले में दो सैनिक मारे गए थे।

एनआईए ने की 'गजवा-ए-हिंद' के संबंध में 3 राज्यों में छापेमारी

एजेंसी। नई दिल्ली

राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने रविवार को पाकिस्तान स्थित संदिग्धों द्वारा चलाए जा रहे कट्टरपंथी मॉड्यूल "गजवा-ए-हिंद" के संबंध में तीन राज्यों में कई स्थानों पर छापेमारी की।एनआईए ने बिहार के दरभंगा में एक और पटना में दो, सूरत (गुजरात) में एक और बरेली (उत्तर प्रदेश) में एक जगह सहित कुल पांच स्थानों पर छापेमारी की। छापेमारी के दौरान डिजिटल डिवाइस (मोबाइल फोन, मेमोरी कार्ड), सिम कार्ड और दस्तावेजों सहित आपत्तिजनक सामग्री जब्त की गई। यह मामला बिहार पुलिस द्वारा पटना के फुलवारीशरीफ क्षेत्र केमरगूब अहमद दानिश उर्फ ताहिर की गिरफ्तारी के बाद प्रकाश में आया था। पिछले साल 14 जुलाई को मामला दर्ज किया गया था। एनआईए ने 22 जुलाई, 2022 को मामला दर्ज कर जांच शुरू की थी। मरगूब के विरुद्ध 6 जनवरी, 2023 को आईपीसी और यूएपीए की विभिन्न धाराओं के तहत आरोप पत्र दायर किया गया था। आरोपित गजवा-ए-हिंद मॉड्यूल का सदस्य था। गजवा-ए-हिंद का मकसद प्रभावशाली युवाओं को कट्टरपंथी बनाना था। इसे पाकिस्तान स्थित गुर्गों द्वारा संचालित किया गया था। जांच से पता चला कि मरगूब एक व्हाट्सएप ग्रुप "गजवा-ए-हिंद" का एडमिन था, जिसे जैन नाम के एक पाकिस्तानी नागरिक ने बनाया था।

FILMY हलचल

'रॉकी-रानी की प्रेम कहानी' में दिखेंगी आलिया भट्ट

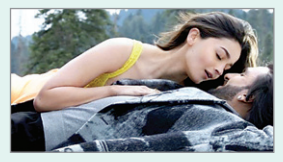

एक लंबे अंतराल के बाद बॉलीवुड स्टार आलिया भट्ट जल्द ही आगामी फिल्म 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' में अभिनेता रणवीर सिंह के साथ स्क्रीन साझा करती नजर आएंगी। उन्होंने अपनी बच्ची राहा के आने के चार महीने बाद 'तुम क्या मिले' गाने की शूटिंग की थी। हाल ही में एक वीडियो में आलिया ने अपने नए गाने के बारे में बताया। अभिनेत्री ने कहा, मैंने अपने बच्चे के जन्म के 4 माह के होने के बाद ये सब किया, मुझे बहुत खुशी होती है, मैं गर्व से कह सकती हूं, कि मैंने अपने आप को इसके लिए तैयार किया। अप्रैल 2022 में मुंबई के पाली हिल इलाके में रणबीर के वास्तु अपार्टमेंट में शादी के बंधन में बंधने के बाद रणबीर और आलिया नवंबर 2022 में बच्ची राहा के माता-पिता बन गए थे। 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' में करण जौहर अपनी आखिरी फिल्म 'ऐ दिल है मुश्किल' के सात साल बाद निर्देशन में वापसी कर रहे हैं।

अनन्या पांडेय ने बताया फिट रहने का राज

बॉलीवुड अभिनेत्री अनन्या पांडेय ने अपने फिट रहने का राज बताया है। अनन्या पांडेय से जब पूछा गया कि

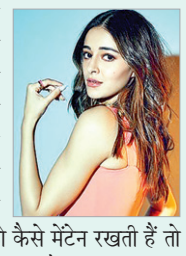

वह खुद को कैसे मेंटेन रखती हैं तो उन्होंने कहा, मैं कम खाती हूं क्योंकि मुझे वर्कआउट करना पसंद नहीं है। हालाँकि, कम खाना भी अच्छा नहीं है, इसलिए हर किसी को अपने मन भर खाना चाहिए और वह वर्कआउट करना चाहिए जो उन्हें सबसे ज्यादा पसंद है। अनन्या पांडेय ने बताया वैसे मुझे खूब खाना पसंद है, लेकिन डाइट के लिए कम खाना पड़ता है। बॉलीवुड एक्ट्रेस अनन्या पांडे ने अपने एक्टिंग करियर की शुरूआत साल 2019 में फिल्म स्टूडेंट ऑफ द ईयर से की थी। तब से लेकर अब तक अनन्या ने बहुत कम फिल्मों में ही काम किया है लेकिन सोशल मीडिया पर उनकी जबरदस्त फैन फॉलोइंग है।

'पलकन के छांव में' गाने को मिले एक मिलियन से ज्यादा व्यूज

भोजपुरी सिनेमा के जुबली स्टार दिनेश लाल यादव निरहुआ और यूट्यूब क्वीन आम्रपाली दुबे की भोजपुरी फिल्म 'माईः प्राइड ऑफ भोजपुरी के गाना पलकन के छांव में को 1 मिलियन से ज्यादा व्यूज मिल गए है। 'पलकन के छांव में' गाना निरहुआ और आम्रपाली दुबे पर फिल्माया गया है। इस गाने को प्रियंका सिंह और रोहित ने मिलकर गाया है। गाने को वर्ल्डवाइड रिकार्ड्स भोजपुरी के ऑफिसियल यूट्यूब चैनल से रिलीज किया गया है। 'पलकन के छांव में' गाने में आम्रपली कहती है कि तोहरा के राखब पलकन के छांव में... जोड़ लेले बानी तोहर नाव अपना नाव में... धूप चाहे छांव होई दिन चाहे रात होई...छुटी न हो साथ सइयां हथवा में हाथ होई...। 'माईः प्राइड ऑफ भोजपुरी फिल्म की निमार्ता ज्योति देशपांडे और निशांत उज्ज्वल हैं। इस फिल्म का निर्देशन एवं म्यूजिक रजनीश मिश्रा ने दिया है। यह फिल्म ओटीटी प्लेटफॉर्म जियो सिनेमा से 16 मई को रिलीज हुई है। फिल्म में एक बेटे का अपनी मां के प्रति समर्पण को बड़े ही सिंपल तरीके से दिखाया गया हैं। फिल्म में दिखाया गया कि एक बेटा अपनी मां के खातिर ऐशो आराम की जिंदगी छोड़कर एक भिखक्षुक का जीवन जीने के लिए तैयार हो जाता है।

वर्षगांठ छह को 88 साल के होंगे दलाई लामा, रोजाना ट्रेडमिल पर लगाते हैं दौड़

सादगी-आनंदमय शैली के लिए जाने जाते हैं

एजेंसी। धर्मशाला

वह 88 साल के हो गए हैं। ट्रेडमिल पर पसीना बहाते हैं और बीबीसी सुनकर समाचारों के प्रति अपनी भूख मिटाते हैं। वह दलाई लामा हैं, जो 6 जुलाई को अपना 88वां जन्मदिन मनाएंगे। उनके सहयोगियों का कहना है कि वह शाकाहारी हैं, गर्म दलिया खाते हैं और ट्रेडमिल पर दौड़ते हैं या नियमित रूप से टहलते हैं। परम पावन, जो उनके अनुयायियों द्वारा दिया गया सम्मान है, अपने दिन की शुरूआत सुबह तीन बजे प्रार्थना और ध्यान के साथ करते हैं। उसके बाद, वह फिट रहने के लिए अपने आधिकारिक महल में सुबह थोड़ी देर टहलते हैं या ट्रेडमिल पर चलना पसंद करते हैं। और वह गर्म दलिया, त्सम्पा

(जौ पाउडर) और चाय के साथ रोटी खाते हैं। कोई टेक्स्टिंग नहीं, कोई टेलीविजन नहीं और कोई संगीत नहीं। बौद्ध भिक्षु, जिन्हें 1989 में नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, नाश्ते के दौरान नियमित रूप से अपने रेडियो को अंग्रेजी में बीबीसी वर्ल्ड न्यूज पर ट्यून करते हैं। सहयोगियों का कहना है कि प्रातः 6 बजे से 9 बजे तक परमपावन अपना प्रातःकालीन ध्यान और प्रार्थना जारी रखते हैं।

सुबह 9 बजे के बाद वह आमतौर पर विभिन्न बौद्ध ग्रंथों और महान बौद्ध गुरुओं द्वारा लिखी गई टिप्पणियों का अध्ययन करने में समय बिताते हैं। दोपहर का भोजन 11.30 बजे से परोसा जाता है। परम पावन दोपहर 12.30 बजे से अपने कार्यालय आते हैं। दोपहर बाद करीब 3.30 बजे तक कार्यालय में कई दर्शकों के साथ एक साक्षात्कार निर्धारित रहता है। अपने निवास पर लौटने पर, परमपावन शाम लगभग 5 बजे चाय पीते हैं। इसके बाद उनकी शाम की प्रार्थना और ध्यान होता है। वह शाम को करीब 7 बजे खाली हो जाते हैं।

सीधे शब्दों में कहें तो, दलाई लामा का मानना है कि हमारा जीवन आशा पर आधारित है - चीजों को अच्छी तरह से बदलने की इच्छा। हमारा जीवन आशा पर निर्भर है। यदि आपके पास आशा है, तो आप अपने सामने आने वाली समस्याओं को दूर करने में सक्षम होंगे। लेकिन यदि आप आशाहीन हैं, तो आपकी कठिनाइयां बढ़ जाएंगी। आशा करुणा और प्रेमपूर्ण दयालुता से जुड़ी है। दलाई लामा को अक्सर यह कहते हुए उद्धृत किया जाता है, 'मैंने अपने जीवन में सभी प्रकार की कठिनाइयों का सामना किया है, लेकिन मैंने कभी उम्मीद नहीं छोड़ी।' उनका कहना है, इसके अलावा, सच्चा और ईमानदार होना आशा और आत्मविश्वास का आधार है। सच्चा और ईमानदार होना झूठी आशा का प्रतिकार है। सच्चाई और ईमानदारी पर आधारित आशा मजबूत और शक्तिशाली होती है।

झारखंड पार्टी का दो दिवसीय केंद्रीय महा अधिवेशन हुआ संपन्न

पार्टी की मजबूती पर दिया जोर

नवीन मेल संवाददाता। रांची

झारखंड पार्टी के दो दिवसीय केंद्रीय महाधिवेशन का समापन रविवार को डिबडीह स्थित कार्निवल बैंक्वेट हॉल में हुआ। महाधिवेशन के समापन के बाद आयोजित प्रेस वार्ता में पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष एनोस एक्का ने प्रदेश कार्यकारिणी कमिटी की घोषणा की। महाधिवेशन में प्रदेश से लेकर जिला अध्यक्ष, प्रखंड अध्यक्ष,पंचायत अध्यक्ष सहित काफी संख्या में कार्यकर्ताओं की भागीदारी रही। दो दिवसीय केंद्रीय महाधिवेशन में कार्यकर्ताओं में काफी उत्साह दिखा। पूर्व मंत्री व झापा के अध्यक्ष एनोस एक्का ने कार्यकर्ताओं को एकजुटता के साथ पार्टी की नीति व सिद्धांत को झारखंड के हर क्षेत्र में जन-जन तक पहुंचाने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि भाजपा गठबंधन और झामुमो से जनता का भरोसा टूट चुका है। झारखंड पार्टी से जुड़े कार्यकर्ता पुराने तेवर और नई सोच के साथ क्षेत्र में जाएं और जनता की समस्याओं से रूबरू होकर उसके समाधान के लिए सकारात्मक पहल करें। प्रधान महासचिव सह पूर्व राज्यमंत्री अशोक भगत ने कहा कि अन्य राजनीतिक दलों, सामाजिक संगठनों से जुड़े कई नामी हस्तियों ने झारखंड पार्टी की नीति व सिद्धांत पर भरोसा करके पार्टी का दामन थामा है। राज्य के पूर्व महाधिवक्ता अजीत कुमार के संगठन में रहने के कारण कार्यकताओं और आम जनता के बीच झारखंड पार्टी का भरोसा बढ़ता ही जा रहा है। केन्द्रीय महाधिवेशन के तीसरे सत्र में रविवार को प्रदेश कार्यकारिणी समिति का चुनाव प्रक्रिया शुरू किया गया। महाधिवेशन में चुनाव संबंधी प्रक्रिया के सफल संचालन के लिए राज्य के पूर्व महाधिवक्ता अजीत कुमार एवं वरिष्ठ नेता रिजवान अहमद को निर्वाचन पदाधिकारी के रूप में सभा ने सर्वसम्मति से सहमति दिया। पूर्व महाधिवक्ता अजीत कुमार ने पार्टी के संविधान के तहत सांगठनिक संरचना पर ध्यानाकर्षण कराया। इसी के साथ वरिष्ठ नेता रिजवान अहमद केन्द्रीय अध्यक्ष पद के लिए एनोस एक्का के नाम प्रस्तावक रहे, जिसे सभा के द्वारा तालियों की गड़गड़ाहट से समर्थन दिया गया। इसके बाद निर्वाचन पदाधिकारी रिजवान अहमद द्वारा प्रधान महासचिव पद के लिए अशोक भगत के नाम के प्रस्तावक बने, जिसे भारी बहुमत से समर्थन दिया गया।

हरमू में बाइक से धक्का लगने पर विवाद, दो पक्षों में हुई मारपीट

रांची। अरगोड़ा थाना क्षेत्र स्थित हरमू बाजार में शनिवार रात स्कूटी से बाइक में धक्का लगने के विवाद के बाद दो पक्षों के बीच मारपीट हो गयी। बाइक से धक्का लगने के बाद विवाद इतना बढ़ गया कि दो पक्षों के लोग आमने-सामने हो गए और मारपीट हो गयी। घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और मामला शांत कराया। जानकारी के अनुसार तेज रफ्तार स्कूटी ने आशीष स्टूडियो के मालिक की खड़ी बाइक में टक्कर मार दी। इससे वहां विवाद हो गया। वरिष्ठ नागरिक और हरमू बाजार समिति के अध्यक्ष और प्रिंस वस्त्रालय के मालिक बलराम ओझा ने हस्तक्षेप किया। घटना के कुछ मिनट बाद भट्टा मोहल्ले के लगभग 20 युवकों के एक समूह ने उन पर हमला किया। उन्हें सिर पर चोटें लगी। इस संबंध में अरगोड़ा थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई गई।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने संगठन सशक्तिकरण अभियान की समीक्षा की

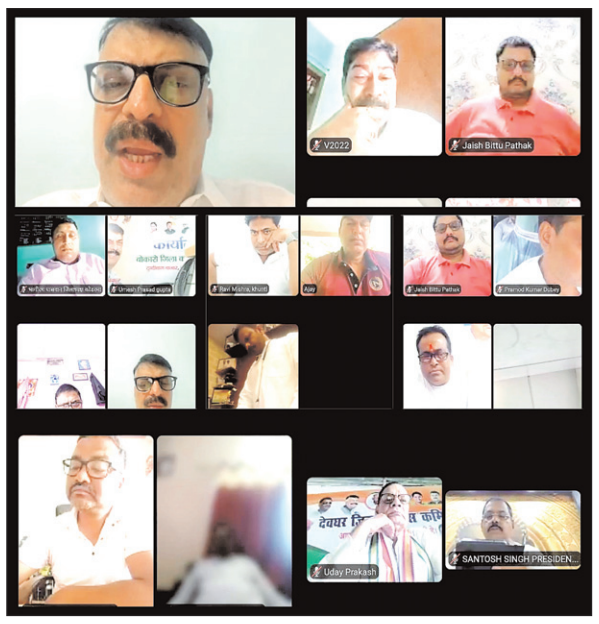

नवीन मेल संवाददाता। रांची। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने रविवार को संगठन सशक्तिकरण अभियान की समीक्षा की। साथ ही वर्चुअल बैठक में प्रखंड, पंचायत एवं बूथ स्तर तक की गठित कमेटी की समीक्षा की गई। बैठक को संबोधित करते हुए प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने सभी महासचिव प्रभारियों और जिला अध्यक्षों को निर्देश दिया कि अविलंब प्रखंड अध्यक्षों और विधानसभा प्रभारियों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए पंचायत एवं बूथ स्तर तक की कमेटी का सत्यापन करें। क्योंकि, पंचायत और बूथ कमेटी के जरिए हम आने वाले लोकसभा के चुनावों में मजबूती के साथ चुनाव लड़ने का काम कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि बेरोजगारी, महंगाई, लोकतंत्र को खत्म करने की साजिश, देश में बढ़ती नफरत का वातावरण को हम तभी खत्म कर सकते हैं जब हम बूथ स्तर के एक-एक व्यक्ति तक पहुंचना सुनिश्चित करेंगे। बैठक में कार्यकारी अध्यक्ष बंधु तिर्की, शहजादा अनवर सहित सभी जिला अध्यक्ष और जिला प्रभारी उपस्थित थे।

श्रद्धालु पहाड़ी मंदिर में शिवलिंग पर इस बार अरघा सिस्टम से करेंगे जलाभिषेक

नवीन मेल संवाददाता। रांची

पहाड़ी मंदिर में इस वर्ष भी श्रद्धालु शिवलिंग पर अरघा सिस्टम से जल अर्पित करेंगे। भक्तों की भीड़ को नियंत्रित करने और उनकी सुरक्षा के लिए बैरिकेडिंग लगाने की तैयारी है। जिला प्रशासन और मंदिर प्रबंधन वॉलिंटियर्स की तैनाती भी करेगा। इसके अलावा सीसीटीवी से भी पूरे मंदिर परिसर में पैनी नजर रखी जाएगी। रांची के पहाड़ी मंदिर प्रबंधन श्रावणी मेले की तैयारियां लगभग पूरी हो गई हैं। चार जुलाई से सावन माह शुरू हो जा रहा है। इस दौरान पहाड़ी मंदिर में भक्तों की भीड़ जुटेगी। हर दिन हजारों की संख्या में श्रद्धालु भोलेनाथ का जलाभिषेक करेंगे। पहली बार मंदिर में डिजिटलाइज तरीके से दान-दक्षिणा लिया जाएगा। श्रद्धालु पुरानी व्यवस्था के साथ क्यूआर कोड को स्कैन कर दक्षिणा दे सकेंगे।

राष्ट्रीय जनता दल का 27वां स्थापना दिवस 27 को

रांची। झारखंड प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल का 27 वां स्थापना दिवस 05 जुलाई को झारखंड प्रदेश राजद कार्यालय रांची सहित झारखरखंड के सभी जिला मुख्यालयों में धूम धाम से मनाने का निर्देश। झारखंड प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश अध्यक्ष संजय कुमार सिंह यादव के निदेर्शानुसार राष्ट्रीय जनता दल का 27 वा स्थापना दिवस समारोह प्रदेश राजद कार्यालय रांची में समय 11 बजे से तथा सभी जिला मुख्यालय में धूमधाम से मनाने का दिया निर्देश। झारखंड प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल के महासचिव सह प्रवक्ता डॉ मनोज कुमार ने बताया कि प्रदेश अध्यक्ष ने सभी प्रदेश के पदाधिकारियों, कार्यकारिणी के सदस्यों,सभी जिला अध्यक्ष, महानगर अध्यक्ष, प्रखंड अध्यक्ष सहित प्रकोष्ठ के प्रदेश पदाधिकारीगण, प्रकोष्ठ अध्यक्ष सहित सभी सम्मानित नेता कार्यकर्ता अपने अपने जिलों में राष्ट्रीय जनता दल का 27 वा स्थापना दिवस धूमधाम से मनाएंगे तथा केंद्र सरकार के गरीब विरोधी, जन विरोधी नीतियों के खिलाफ परिचर्चा करेंगे।

एनटीपीसी ने दर्ज की उल्लेखनीय वृद्धि

नवीन मेल संवाददाता। रांची

भारत के अग्रणी एकीकृत बिजली उत्पादक एनटीपीसी लिमिटेड ने वित्तीय वर्ष 2024 की पहली तिमाही के दौरान इसी अवधि की तुलना में अपनी कैप्टिव खदानों से कोयला उत्पादन में 99 प्रतिशत की पर्याप्त वृद्धि दर्ज की है। पिछले वर्ष कंपनी ने क्यू 1 एफवाई 24 के दौरान 8.48 मिलियन मीट्रिक टन (एमएमटी) का प्रभावशाली कोयला उत्पादन किया, जबकि क्यू 1 एफवाई 23 में यह 4.27 एमएमटी था। इसके अलावा, एनटीपीसी ने वित्त वर्ष 24 की पहली तिमाही में 8.82 एमएमटी का कोयला प्रेषण भी हासिल किया है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 112 प्रतिशत की महत्वपूर्ण वृद्धि को दशार्ता है। यह उत्कृष्ट प्रदर्शन एनटीपीसी की अपनी कैप्टिव खदानों से कोयला उत्पादन बढ़ाने और देश की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए कुशल आपूर्ति सुनिश्चित करने की निरंतर प्रतिबद्धता को दशार्ता है। एनटीपीसी राष्ट्र को विश्वसनीय और टिकाऊ बिजली प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। कोयला उत्पादन और प्रेषण में यह उल्लेखनीय वृद्धि परिचालन उत्कृष्टता के प्रति एनटीपीसी के समर्पण और भारत की ऊर्जा मांगों को पूरा करने में उसके योगदान का प्रमाण है। कंपनी अपने प्रदर्शन को और बेहतर बनाने और देश के ऊर्जा लक्ष्यों का समर्थन करने के लिए नवीन प्रौद्योगिकियों और टिकाऊ प्रथाओं का पता लगाना जारी रखेगी। एनटीपीसी लिमिटेड भारत की सबसे बड़ी एकीकृत्त बिजली उपयोगिता है, जो देश की बिजली आवश्यकता का 1/4 योगदान करती है। थर्मल, हाइड्रो, सौर और पवन ऊर्जा संयंत्रों के विविध पोर्टफोलियो के साथ, एनटीपीसी देश को विश्वसनीय, सस्ती और टिकाऊ बिजली प्रदान करने के लिए समर्पित है। कंपनी सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाने, नवाचार को बढ़ावा देने और हरित भविष्य के लिए स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

होटल से बच्ची को बाल श्रम से कराया गया मुक्त

रांची। बाल मजदूरी की सूचना के मद्देनजर रांची जिला प्रशासन द्वारा नामकुम स्टेशन स्थित सुमन भोजनालय से 7 साल की एक बच्ची को बाल श्रम से मुक्त कराया गया है। विभागीय अधिकारियों द्वारा जांच करने पर पाया गया कि दुकानदार द्वारा पीड़ित बच्ची से होटल में काम करवाया जाता था। बच्ची के रेस्क्यू के बाद उसे प्रेमाश्रय बालिका गृह में अवासित किया गया है। उपायुक्त द्वारा दुकानदार के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए हैं। इसके साथ ही बालिका को विद्यालय से जोडने एवं योजनाओं से लिंक करने हेतु आवश्यक प्रक्रिया पूर्ण करने हेतु बाल कल्याण समिति में प्रस्तुत करने के निर्देश विभागीय अधिकारियों को दिए गए हैं।

जामताड़ा के निजी बैंक में लोन दिलाने के नाम पर करोड़ों की हेराफेरी

सेल्स मैनेजर सहित दो को किया गया गिरफ्तार

नवीन मेल संवाददाता। रांची

निजी बैंक से लोन दिलाने के नाम पर खाताधारकों का खाता खोल अवैध तरीके से करोड़ों रुपए का ट्रांजैक्शन करने के मामले का खुलासा जामताड़ा में हुआ है। पुलिस ने मामले में बैंक के सेल्स मैनेजर सहित दो लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। करीब छह करोड़ रुपए का गलत ढंग से ट्रांजैक्शन करने का मामला बताया जा रहा है। लोन दिलाने के नाम पर सात लोगों का खोला गया था करंट अकाउंटः मामला जामताड़ा आईसीआईसीआई बैंक शाखा का है। जहां लोन दिलाने के नाम पर करीब सात लोगों का करंट अकाउंट खुलवाया गया था। खाता खुलवाने के नाम पर उनके सारे डाक्यूमेंट्स ले लिए गए थे। तत्पश्चात करंट अकाउंट खोल कर खाते से करोड़ों रुपए का अवैध ट्रांजैक्शन किया गया।बैंक प्रबंधक ने खाताधारकों से की पूछताछः जब इसकी भनक बैंक के प्रबंधक को लगी तो उन्होंने खाताधारकों से इसकी जानकारी प्राप्त की। पूछताछ में संतोष पंडित नाम के खाताधारक का पता चला। जब संतोष पंडित से मामले में पूछताछ की गई तो तो उसने मामले में अनभिज्ञता जाहिर की। खाता धारक को पता ही नहीं था कि उसके खाते से करोड़ों का ट्रांजैक्शन हो रहा है। इसके बाद मामले की शिकायत पुलिस से की। जब पुलिस ने मामले की तफ्तीश शुरू की तो पूरे मामले का खुलासा हो गया।बैंक के सेल्स मैनेजर समेत दो लोग गिरफ्तारः पुलिस ने इस मामले में कार्रवाई करते हुए पीड़ित खाताधारक संतोष पंडित के लिखित बयान के आधार पर मामला दर्ज कर बैंक के सेल्स मैनेजर गौरव कुमार सिंह और उज्ज्वल महता नाम के दो लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

घर में सो रही महिला पर फायरिंग, बाल बाल बची

रांची। बरियातू थाना क्षेत्र के एदलहातू स्थित शिवशक्ति नगर में घर में सो रही महिला पर अपराधियों के गोली चलाने का मामला सामने आया है। जानकारी के अनुसार शनिवार रात करीब 1.50 बजे घर में सो रही पिंकी सिंह नाम की महिला पर फायरिंग की गई है। हालांकि इस हमले में महिला बाल-बाल बच गई। घटना को अंजाम देने के बाद अपराधी मौके से फरार हो गए। घटना की सूचना मिलते ही थाना प्रभारी ज्ञानरंजन मौके पर पहुंचे और मामले की जांच में जुट गए। थाना प्रभारी ने बताया कि एस्बेस्टस के ऊपर से गोली चलाई गई थी। महिला को गोली नहीं लगी है। आसपास के सीसीटीवी फुटेज को खंगाला जा रहा है।

एसएसबी के जवानों ने पौधारोपण कर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

नवीन मेल संवाददाता। खूंटी

एसएसबी 26 वीं वाहिनी के कमांडेंट एसडी शेरखाने के दिशा निर्देश और उनके नेतृत्व में के जवानों ने पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिश। 26वीं वाहिनी एसएसबी एफ कंपनी हूंट के सहायक कमांडेंट अजीत कुमार उपाध्याय और जवानों ने हूंट और खूंटी-तमाड़ रोड के किनारे और आसपास के इलाके में लगभग 450 छायादार और फलदार वृक्षों के पौधे लगाए। सहायक कमांडेंट अजीत कुमार उपाध्याय ने बताया कि जुलाई माह में एसएसबी हूंट के कार्य क्षेत्र में लगभग 2500 पौधे लगाने का लक्ष्य है। इस दौरान ग्रामीणों से पेड़ों को न काटने और बड़े पैमाने पर पौधे लगाने की अपील की, ताकि पर्यावरण संरक्षण के साथ ही शुद्ध हवा और वातावरण लोगों को मिलता रहे।

निरीक्षण कृषि वैज्ञानिकों के दल ने खरीफ फसलों का आकलन किया

शोध कार्यक्रमों को बढ़ावा देने का दिया निर्देश

नवीन मेल संवाददाता। रांची

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू) के निदेशक अनुसंधान डॉ पीके सिंह एवं डीन एग्रीकल्चर डॉ डीके शाही के नेतृत्व में कृषि वैज्ञानिकों के दल ने वेस्टर्न सेक्शन फार्म के खेतों में खरीफ शोध से संबंधित कार्यों का आकलन किया। पौधा प्रजनक वैज्ञानिकों के दल ने पिछले चार-पांच दिनों की बारिश को देखते हुए अगले एक-दो दिनों में टांड़ एवं मध्यम भूमि की तैयारी पूरी करने और खरीफ फसलों की बोआई शुरू करने की योजना बनायी।

मौके पर निदेशक अनुसंधान डॉ पीके सिंह ने वैज्ञानिकों को करीब 55 एकड़ में फैले इस शोध फार्म में खरीफ शोध से जुड़ी फसलों में मड्डुआ, मकई, अरहर, उरद, मूंग, सरगुजा, मूंगफली एवं सोयाबीन आदि का बुवाई कार्य को एक सप्ताह में पूरी करने को कहा। शोध कार्य में बीएयू द्वारा विकसित एवं हाल में विकसित किस्मों के गुणात्मक बढ़ोतरी को प्राथमिकता देने को कहा। उन्होंने पौधा प्रजनक वैज्ञानिकों को राज्य के तीन कृषि पारिस्थितिकी में अवस्थित क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों, दुमका, चियांकी (पलामू) एवं दारीसाई (पूर्वी सिंहभूम) का दौरा करने और विकसित किस्मों तथा शोध कार्यक्रमों को बढ़ावा देने का निर्देश दिया। डॉ सिंह ने वैज्ञानिकों को विभिन्न आईसीएआर परियोजना के अधीन संचालित अनुसंधान कार्यक्रमों के तहत किसानों के खेतों में खरीफ फसलों का अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण (एफएलडी) ससमय शुरू करने का निर्देश दिया। साथ ही बीजोत्पादन एवं अन्य कार्यक्रमों में राज्य के कृषि विज्ञान केन्द्रों की सहभागिता एवं सहयोग पर बल दिया। डीन एग्रीकल्चर डॉ डीके शाही ने बोवाई से पूर्व खेतों में खाद एवं उर्वरक प्रबंधन तथा दलहन एवं तिलहन फसलों में राइजोबियम कल्चर (जैव उर्वरक) के उपयोग पर प्रकाश डाला। आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग की अध्यक्षा डॉ मणिगोप्पा चक्रवर्ती ने बताया कि वेस्टर्न सेक्शन फार्म में 8 आईसीएआर-अखिल भारतीय समन्वित परियोजनाओं एवं 12 राज्य योजनाओं से संबंधित खरीफ शोध कार्यक्रम होंगे। फार्म के 55 एकड़ भूमि में मिलेट्स फसलों जैसे मड्डुआ, गुन्दली, कंगनी एवं कोदो, मकई, अरहर, उरद, मूंग, सरगुजा, सोयाबीन, मूंगफली तथा धान आदि फसलों से संबंधित शोध कार्यक्रम होंगे। इन शोध कार्यक्रमों का राज्य हित एवं राष्ट्रीय स्तर पर विशेष महत्त्व निहित होगा। शस्य वैज्ञानिक डॉ एकलाख अहमद ने फार्म के करीब 17 एकड़ भूमि में धान की करीब 480 उन्नत किस्मों पर शोध कार्यक्रम की बात कही। टांड़ भूमि में धान की सीधी बोवाई जल्द शुरू किये जाने की बात कही।

मन नहीं लग रहा तो नीतीश ले लें सन्यास : बाबूलाल

दुमका। बीजेपी नेता बाबूलाल मरांडा ने बिहार के सीएम नीतीश कुमार को राजनीति से सन्यास लेने की दी सलाह दी है। पिछले दिनों पटना में विपक्ष की बैठक और नीतीश कुमार द्वारा विपक्षी एकता की कोशिश को लेकर किये जा रहे प्रयासों पर तंज कसा है। उन्होंने कहा कि मैं हैरान हूं कि वे भ्रष्टाचारियों को एकत्रित करने में लगे हैं, अगर मन नहीं लग रहा है तो राजनीति से सन्यास से ले लें।इसे भी पढ़ें- खँ१ँल्ली ढङ्ग३२ः बाबूलाल ने विपक्षी एकता को बताया लोकतंत्र के लिए खतरा, कहा- ये घिसे-पिटे लोग हैंझारखंड के प्रथम मुख्यमंत्री और भाजपा नेता बाबूलाल मरांडी ने नीतीश कुमार को राजनीति से संन्यास लेने की सलाह दी है। रविवार को दुमका परिसदन में पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि मैं नीतीश कुमार का काफी सम्मान करता हूं, उन पर न तो परिवारवाद और न ही भ्रष्टाचार का आरोप लगा है। इसके बावजूद मुझे हैरानी इस बात की है कि वे भ्रष्टाचारियों को एकत्रित करने में लगे हैं। आखिर उनकी क्या मजबूरी है, क्या कमजोरी है, समझ में नहीं आता।

खेल में हार से भविष्य में जीतने की मिलती है प्रेरणा : कोचे मुंडा

नवीन मेल संवाददाता। खूंटी

राजकला के खिलाड़ी बल्लू की ताबड़तोड़ बल्लेबाजी की बदौलत राजकला इलेवन ने तोरपा सुपर किंग को 63 रन से पराजित कर तोरपा प्रीमियर लीग का खिताब अपने नाम कर लिया। तोरपा के सागवान मैदान में रविवार को खेले गए फाइनल मुकाबले में टॉस जीत कर राजकला इलेवन की टीम ने निर्धारित 20 ओवर में 218 रन बनाकर तोरपा सुपर किंग को विशाल लक्ष्य दे दिया। जवाबी पारी खेलने उतरी तोरपा सुपर किंग की टीम 18 ओवर में सभी विकेट खोकर मात्र 155 रन ही बना सकी। पहले खेलते हुए राजकला इलेवन की टीम के प्रवीण कुमार उर्फ बल्लू ने 49 गेंद में ताबड़तोड़ बल्लेबाजी करते हुए 12 चौके और आठ छक्के की मदद से 113 रन बनाए। के बदौलत 218 रन बना लिया था। सुपर किंग की ओर से अनीश होरो एकमात्र सफल खिलड़ी रहे जिन्होंने 72 रन बनाए। गेंदबाजी में बल्लू ने दो विकेट लिए थे। फाइनल मुकाबले के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में विधायक कोचे मुंडा, जेएससीए सचिव देवाशीष चक्रवर्ती, एसडीपीओ ओम प्रकाश तिवारी, जिप अध्यक्ष मसीह गुड़िया, प्रमुख रोहित सुरीन, उप प्रमुख संतोष कर, पुलिस इंस्पेक्टर दिग्विजय सिंह, थाना प्रभारी मनीष कुमार, जेएससीए मैनेजिंग केमटी मेंबर मिहिर प्रीतेश तोपनो, अवधेश कश्यप, केडीसीए कार्यकारी अध्यक्ष कृष्ण मोहन, उपाध्यक्ष प्रवीण गोप, सह सचिव देवा हस्सा सहित कई लोग मौजूद थे। मौके पर विधायक ने कहा कि खेल में हार-जीत कोई मायने नहीं रखती है, बल्कि हारने वाले को भविष्य में जीतने की प्रेरणा मिलती है। हार-जीत की परवाह किए बगैर खेलना चाहिए। खेलकूद के जरिए खिलाड़ियों में सामूहिक खेलकूद की भावना का विकास होता है। आपलोग ईमानदारी से खेलें और अपने शहर और देश का नाम रोशन करें। विधायके ने कहा कि जहां उनकी जरूरत हो, हमेशा साथ खड़ा हैं। कार्यक्रम में विजेता व उपविजेता टीम को अतिथियो द्वारा ट्रॉफी और नकद पुरस्कार देकर उनकी हौसला आफजाई की। टीपीएल के इस सीजन में तोरपा सुपर किंग के अनीश होरो जिसने सर्वाधिक 425 रन बनाये, जिसमें 41 छक्के शामिल हैं, कों मैन ऑफ द सीरीज का पुरस्कार मिला। वेस्ट बॉलर का खिताब अनिल डांग को मिला, जिसने 11 विकेट लिए।

NEWS इन ब्रीफ

हसरंगा को आईसीसी आचार संहिता मामले में लगी फटकार

बुलावायो (जिम्बाब्वे)। श्रीलंका के खिलाड़ी वानिंदु हसरंगा को क्वींस स्पोर्ट्स क्लब में नीदरलैंड के खिलाफ आईसीसी पुरुष क्रिकेट विश्व कप क्वालीफायर मैच के दौरान आईसीसी आचार संहिता के लेवल 1 का उल्लंघन करने के लिए फटकार लगाई गई है। हसरंगा को शुक्रवार को खिलाड़ियों और खिलाड़ी सहायता कर्मियों के लिए आईसीसी आचार संहिता के अनुच्छेद 2.2 का उल्लंघन करते हुए पाया गया, जो एक अंतर्राष्ट्रीय मैच के दौरान क्रिकेट उपकरण या कपड़े, ग्राउंड उपकरण या फिक्स्चर और फिटिंग के दुरुपयोग से संबंधित है। इसके अलावा, हसरंगा के अनुशासनात्मक रिकॉर्ड में एक अवगुण अंक जोड़ा गया है, उनका 24 महीनों में यह दूसरा अपराध है, जिससे उनके अवगुण अंकों की संख्या दो हो गई है। यह घटना हसरंगा के आउट होने के बाद घटी जब पवेलियन लौटते समय उन्होंने आक्रामक अंदाज में अपने बल्ले से सीमा रेखा पर प्रहार किया। हसरंगा के खिलाफ आरोप ऑन-फील्ड अंपायर मार्टिन सैगर्स और ग्रेग ब्रैथवेट, तीसरे अंपायर जयारमन मदनगोपाल और चौथे अंपायर आसिफ याकूब ने लगाए थे। लेवल 1 के उल्लंघनों में न्यूनतम जुर्माना आधिकारिक फटकार, अधिकतम जुर्माना खिलाड़ी की मैच फीस का 50 प्रतिशत और एक या दो अवगुण अंक होते हैं।

मोहम्मद शहजाद की अफगानिस्तान की टी20 टीम में वापसी

ढाका। विकेटकीपर-बल्लेबाज मोहम्मद शहजाद बांग्लादेश के खिलाफ 14 और 16 जुलाई को सिलहट में होने वाली दो मैचों की श्रृंखला के लिए अफगानिस्तान की टी20 टीम में वापस आ गए हैं। शहजाद, जिन्होंने अफगानिस्तान के लिए 70 टी20 खेले हैं और एक शतक और 12 अर्द्धशतक सहित 2015 रन बनाए हैं, ने अबु धाबी में 2021 पुरुष टी20 विश्व कप के सुपर 12 मैच में न्यूजीलैंड के खिलाफ प्रारूप में अपनी आखिरी उपस्थिति दर्ज की थी। बाएं हाथ के सलामी बल्लेबाज हजरतुल्लाह जजई भी इस साल फरवरी में अबु धाबी में संयुक्त अरब अमीरात के खिलाफ प्रारूप में अपनी आखिरी उपस्थिति के बाद, अफगानिस्तान के लिए टी20 योजना में वापस आ गए हैं।

पूजा ने फेओफानोवा को हराकर जीता खिताब

एजेंसी। नोएडा। पूजा तोमर ने नोएडा इंडोर स्टेडियम में एमएफएन 12 में एक कठिन मुकाबले में अपनी रूसी प्रतिद्वंद्वी अनस्तासिया फेओफानोवा के खिलाफ मैट्रिक्स फाइट नाइट के पहले महिला मुख्य इवेंट में सर्वोच्च स्थान हासिल किया और अपना स्ट्रॉवेट खिताब बरकरार रखा। रोमांचक मुख्य मुकाबला चार राउंड तक चला। पहले राउंड में, पूजा तोमर ने अपने प्रतिद्वंद्वी के चेहरे पर बाएं हाथ से हुक मारा और उसे जमीन पर गिरा दिया। अपनी लंबी टांगों का इस्तेमाल करते हुए अनस्तासिया पूजा को दूर रखने में कामयाब रही। अपनी ऊंचाई के लाभ के साथ, अनस्तासिया

ने पूजा को जकड लिया, लेकिन चैंपियन ने खुद को बाहर निकाला और शनिवार को रूसी को परेशान करने के लिए शक्तिशाली किक मारी। जैसे-जैसे मुकाबला आगे बढ़ा, पूजा ने जबरदस्त रक्षात्मक कौशल दिखाया और अनस्तासिया की लंबी पहुंच के बावजूद, अपने प्रतिद्वंद्वी को दूरी पर रखने में कामयाब रही। पूजा ने अपने प्रतिद्वंद्वी को कमजोर करने के लिए शक्तिशाली किक का उपयोग करते हुए, अनस्तासिया के बाएं घुटने को निशाना बनाना जारी रखा। संयोजन हमलों के साथ, पूजा ने रूसी खिलाड़ी पर जोरदार प्रहार किए और महत्वपूर्ण अंक अर्जित किए। गहन चार राउंड के बाद, पूजा को तकनीकी नॉकआउट के माध्यम से विजेता घोषित किया गया, क्योंकि अनस्तासिया ने पूजा के भारी प्रहारों से बचने के लिए अपनी बांह तोड़ दी। मुकाबला जीतने के बाद पूजा ने अपने परिवार को लगातार समर्थन के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा, कुछ भी कहने से पहले, मैं अपने दिवंगत पिता को धन्यवाद देना चाहती हूं। मुझे यकीन है कि वह मुझे देखकर गर्व महसूस करेंगे। मेरे एमएमए करियर में इस मुकाम तक पहुंचने का कारण मेरे परिवार का निरंतर समर्थन रहा है।

चीन ने जापान को हराकर महिला बास्केटबॉल एशिया कप जीता

एजेंसी। सिडनी चीन ने 12 साल के खिताब के सूखे को तोड़ते हुए रविवार को यहां क्लासिक फाइनल में 73-71 की जीत के साथ एफआईबीए महिला बास्केटबॉल एशिया कप पर जापान की पकड़ को खत्म कर दिया।

बेहद रोमांचक निर्णायक मुकाबले में दुनिया की दूसरे नंबर की टीम चीन ने 2011 के बाद अपना पहला एशिया कप जीतकर जोरदार प्रदर्शन किया। हान जू ने 26 अंक और 10 रिबाउंड के साथ एक प्रमुख टूर्नामेंट का समापन किया, जबकि डब्ल्यूएनबीए

खिलाड़ी ली मेंग ने 17 अंक और 6 सहायता के साथ क्लच शॉट मारा। शिन्हुआ की एक रिपोर्ट के अनुसार, जापान के लिए माकी तकादा ने 17 अंकों के साथ शीर्ष स्कोर बनाया, जिसकी रिकॉर्ड-विस्तारित छठे सीधे खिताब के लिए दावेदारी कम रह गई।

निकहत व शिव करेंगे एशियाई खेलों में भारतीय मुक्केबाजी टीम का नेतृत्व

एजेंसी। नई दिल्ली दो बार की विश्व चैंपियन निकहत जरीन, रिकॉर्ड छह बार के एशियाई चैंपियनशिप पदक विजेता शिव थापा और टोक्यो ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता लवलीना बोरगोहेन 23 सितंबर से आठ अक्टूबर 2023 तक चीन के हांग्झोउ में होने वाले 19वें एशियाई खेलों में भारतीय मुक्केबाजी टीम का नेतृत्व करेंगे। विश्व चैंपियनशिप में कांस्य पदक और छह एशियाई चैंपियनशिप पदक जीतने वाले थापा 63.5 किलोग्राम वर्ग में देश का प्रतिनिधित्व करते हुए अपनी झोली में पहला एशियाई खेल पदक जोड़ना चाहेंगे।

टोक्यो ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता लवलीना बोगोहेंन 75 किग्रा वर्ग में प्रतिस्पर्धा करेंगी। हाल ही में दूसरी बार विश्व चैंपियन बनने वाली निकहत अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपना दबदबा जारी रखना चाहेंगी। तेलंगाना में जन्मी मुक्केबाज ने

2022 राष्ट्रमंडल खेलों में भी स्वर्ण पदक जीता और वह 50 किग्रा वर्ग में मुक्केबाजी करेंगी।

भारतीय मुक्केबाजी संघ (बीएफआई) के अध्यक्ष अजय सिंह ने कहा, इस दुर्जेय टीम ने इस प्रतिष्ठित आयोजन की तैयारी के लिये अथक परिश्रम किया है और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे हमारे देश को गौरवान्वित करेंगे। भारत मुक्केबाजी परिदृश्य में परचम लहरा रहा है और उसने बड़े स्तर पर अपनी जगह बना ली है। हाल की विश्व चैंपियनशिप में हमारे मुक्केबाजों द्वारा असाधारण प्रदर्शन देखने के बाद हमें विश्वास है कि हम हांग्झोउ में भी ऐसा ही कुछ देखेंगे। दीपक भोरिया 51 किग्रा फ्लाईवेट वर्ग में प्रतिस्पर्धा करेंगे। उन्होंने हाल ही में ताशकंद में पुरुष विश्व चैंपियनशिप में 2021 विश्व चैंपियन साकेन बिबोसिनोव को हराकर ऐतिहासिक कांस्य पदक जीता था।

विश्व चैंपियनशिप के एक और कांस्य पदक विजेता निशांत देव 71 किग्रा वर्ग में देश का भार अपने कंधों पर उठाएंगे। भारतीय टीम में क्रमशः हेवीवेट और सुपरहेवीवेट श्रेणियों में 2021 एशियाई चैंपियन संजीत कुमार (92 किग्रा) और 2022 एशियाई चैंपियनशिप मेडलिस्ट नरेंद्र बेरवाल (+92 किग्रा) भी शामिल होंगे। साल 2021 के विश्व युवा चैंपियन सचिन (57 किग्रा) और तीन बार के राष्ट्रीय चैंपियन लक्ष्य चाहर (80 किग्रा) प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में भारतीय जर्सी पहनने वाले अन्य मुक्केबाज होंगे। पिछले साल एशियाई चैंपियन बनने के अलावा विश्व चैंपियनशिप में कांस्य जीतने वाली परवीन हुड्डा 57 किग्रा वर्ग में देश की कमान संभालेंगी।

बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेलों की कांस्य पदक विजेता जैस्मीन लंबोरिया 60 किग्रा वर्ग में भाग लेंगी, जबकि 2021 विश्व युवा चैंपियन अरुंधति चौधरी 66 किग्रा वर्ग में रिंग में उतरेंगी। टीम में कुशल युवा मुक्केबाज प्रीति भी होंगी, जिनके नाम 2022 एशियाई चैंपियनशिप का कांस्य पदक है।

मुक्केबाज अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहेंगे क्योंकि यह प्रतियोगिता 2024 पेरिस ओलंपिक के लिये क्वालीफायर के रूप में काम करेगी। एशियाई खेलों के लिये पुरुष मुक्केबाज : दीपक (51 किग्रा), सचिन (57 किग्रा), शिव थापा (63.5 किग्रा), निशांत देव (71 किग्रा), लक्ष्य चाहर (80 किग्रा), संजीत (92 किग्रा) और नरेंद्र (+92 किग्रा)। एशियाई खेलों के लिये महिला मुक्केबाज : निकहत जरीन (50 किग्रा), प्रीति (54 किग्रा), परवीन (57 किग्रा), जैस्मीन (60 किग्रा), अरुंधति चौधरी (66 किग्रा), लवलीना बोरगोहेन (75 किग्रा)।

अश्विन करें एशियाई खेलों में भारत का नेतृत्व : कार्तिक

एजेंसी। नई दिल्ली अनुभवी विकेटकीपर-बल्लेबाज दिनेश कार्तिक को लगता है कि अगर ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन वनडे सेटअप का हिस्सा नहीं है और बीसीसीआई 'बी' टीम भेजने का फैसला करता है तो हांगझाऊ, चीन में होने वाले एशियाई खेल 2023 के लिए अश्विन को भारत का कप्तान बनाया जाना चाहिए। कार्तिक की टिप्पणी ऐसे समय में आई है जब कई रिपोर्टों में सुझाव दिया गया था कि बीसीसीआई 23 सितंबर से 8 अक्टूबर तक होने वाले एशियाई खेलों के लिए पुरुष और महिला दोनों टीमों को भेजेगा। हालांकि, यह मेगा एशियाई आयोजन वनडे विश्व कप के साथ टकराने के लिए तैयार है क्योंकि भारत की पुरुष टीम भी 8 अक्टूबर को चेन्नई में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अपने अभियान की शुरूआत करेगी। इसलिए, बोर्ड के दूसरी पंक्ति की टीम चीन भेजने की संभावना है। यह भी बताया गया है कि अनुभवी बल्लेबाज शिखर धवन, जो वर्तमान में मुख्य टीम सेटअप का हिस्सा नहीं हैं, के इस चतुष्कोणीय टूर्नामेंट में टीम का नेतृत्व करने की संभावना

है। लेकिन, 38 साल के कार्तिक ने चयनकर्ताओं से अश्विन को कप्तान बनाने का आग्रह किया है। अश्विन यकीनन अपनी गेंदबाजी की गुणवत्ता और अपने द्वारा लिए गए विकेटों की संख्या के मामले में अब तक खेले गए सबसे महान खिलाड़ियों में से एक हैं। मुझे वास्तव में लगता है कि अगर भारत एक बी टीम भेज रहा है, और मुख्य टीम विश्व कप की तैयारी कर रही है अगर वह वनडे सेटअप का हिस्सा नहीं हैं तो उन्हें कप्तान बनाना चाहिए।'कार्तिक ने एक कार्यक्रम में कहा, "मुझे सचमुच लगता है कि वह इसका हकदार है और उसने टीम का कप्तान बनने का अधिकार हासिल कर लिया है।

एंडरसन प्रभावहीन रहे, तीसरे टेस्ट के लिए उन्हें नहीं चुनेंगे : माइकल वॉन

एजेंसी। लंदन इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन का मानना है कि मौजूदा एशेज सीरीज में तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन किसी भी तरह की लय में नहीं दिख रहे हैं और उनकी गेंदबाजी में जरूरी जोश की कमी है। उन्होंने कहा कि वह तीसरे टेस्ट के लिए अनुभवी तेज गेंदबाज को बाहर रखेंगे। तीसरा टेस्ट लीड्स के हेडिंग्ले में 6 जुलाई से शुरू हो रहा है। अनुभवी इंग्लिश पेसर ने एजबेस्टन में शुरूआती टेस्ट में केवल एक विकेट लिया। लॉर्ड्स में चल रहे टेस्ट में, उन्होंने प्रत्येक पारी में एक -एक विकेट लिया। 40 वर्षीय, जो अपनी असाधारण क्षेत्ररक्षण के लिए जाने जाते हैं, ने आश्चर्यजनक रूप से दो कैच छोड़े। वान ने कहा, इसके बाद तीन टेस्ट होने हैं और वह निश्चित रूप से हर किसी के साथ नहीं खेल सकता। मैं उसे अगले सप्ताह बाहर रखूंगा।

उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा, वह एक अविश्वसनीय प्रदर्शनकर्ता है लेकिन आप उसे मैदान में कैच छोड़ते हुए देखते हैं। मैंने जिमी एंडरसन से ऐसा नहीं देखा, वह मैदान में इतना तेज है।" वॉन ने क्रिकबज को बताया, उनकी गेंदबाजी में उस जिप की कमी है और अगर इंग्लैंड शॉर्ट बॉल सिद्धांत की ओर रुख करने जा रहा है, तो निश्चित रूप से उन्हें थोड़ी अतिरिक्त गति के लिए मार्क वुड के पास जाना होगा। 48 वर्षीय खिलाड़ी ने आगे कहा कि यह महान खिलाड़ी अभी भी इंग्लैंड के प्रयासों में योगदान दे सकता है, लेकिन लगातार दो टेस्ट मैचों में गेंदबाजी करने के बाद उन्हें फिलहाल राहत की जरूरत है।

वॉन ने कहा, यह नहीं कह रहा हूं कि जिमी का काम पूरा हो गया है। अगले सप्ताह मिस करें, संभावित रूप से चौथे टेस्ट में अपने घरेलू मैदान ओल्ड ट्रैफर्ड में खेलें। बस उसे एक सप्ताह की छुट्टी दें। वह 41 साल का है; दो टेस्ट में गेंदबाजी करने के बाद शायद उसे थोड़ी राहत की जरूरत है।" अपना 181वां टेस्ट मैच खेलकर एंडरसन ने खुद को टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में तीसरे सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज के रूप में स्थापित कर लिया है। 26.21 की औसत से 688 विकेट के प्रभावशाली रिकॉर्ड के साथ, उन्होंने एक गेंदबाज के रूप में अपने असाधारण कौशल को साबित किया है।

त्रिवेणी कॉन्टिनेंटल किंग्स शीर्ष पर पहुंची

दुबई। टूर्नामेंट के पसंदीदा गैंगेज ग्रैंडमास्टर्स पर शानदार जीत सहित चार मैचों की जीत के साथ, त्रिवेणी कॉन्टिनेंटल किंग्स नीचे से शीर्ष पर पहुंच गई है, और ग्लोबल शतरंज लीग के उद्घाटन संस्करण के फाइनल के लिए क्वालीफाई करने वाली पहली टीम बन गई है। इससे पहले शनिवार को एक अन्य मैच में एसजी अल्पाइन वॉरियर्स को चिंगारी गल्फ टाइटंस से हार का सामना करना पड़ा था, जिससे इस बात पर बड़ा सवालिया निशान लग गया था कि फाइनल में कौन सी टीम दूसरा स्थान हासिल करेगी। त्रिवेणी कॉन्टिनेंटल किंग्स ने शनिवार को लीग मैच में गैंगेज ग्रैंडमास्टर्स को 11:6 से हराकर अपना आगे बढ़ना जारी रखा।

ऑस्ट्रेलिया ने इंग्लैंड को 4 विकेट से हराया

एजेंसी। बर्मिंघम सलामी बल्लेबाज बेथ मूनी की 47 गेंदों में नाबाद 61 रन की पारी की मदद से ऑस्ट्रेलिया ने एजबेस्टन में महिला एशेज के पहले टी20 मैच में इंग्लैंड को एक गेंद शेष रहते चार विकेट से हरा दिया। ऑस्ट्रेलिया की रोमांचक जीत का मतलब यह भी है कि अब उनके इंग्लैंड की तुलना में छह अंक हो गए हैं, जो अभी तक चल रही बहु-प्रारूप एशेज श्रृंखला में अपनी छाप नहीं छोड़ पाई है और ट्रॉफी बरकरार रखने के लिए ऑस्ट्रेलिया को शेष दो टी20 और तीन एकदिवसीय मैचों में सिर्फ एक और जीत की जरूरत है। बेथ दूसरे छोर पर छोटे-मोटे पतन के बावजूद शांति से लक्ष्य का पीछा कर रही थी, ऑस्ट्रेलिया ने पीछा करने के अंत में 11 गेंदों के अंतराल में दस रन पर तीन विकेट खो दिए। एनाबेल सदरलैंड ने 19वें और 20वें ओवर में दो चौके लगाकर

मूनी को ऑस्ट्रेलिया के करीब पहुंचाने में मदद की, जॉर्जिया वेयरहैम ने 154 के लक्ष्य का पीछा करने के लिए सोफी एक्लेस्टोन के खिलाफ पहली गेंद पर सिंगल लेकर काम पूरा किया।

मैच की शुरूआत में ऑस्ट्रेलिया गेंद से प्रभावी था, जेस जोनासेन (3-25) और मेगन शट (2-33) ने इंग्लैंड की आक्रामक बल्लेबाजी लाइन-अप को रोक दिया। मेजबान टीम का प्रतिस्पर्धी स्कोर सुनिश्चित करने के लिए सोफिया डंकले के 56 (49) और एमी जोन्स के 21 गेंदों में नाबाद 40 रनों के साथ-साथ हीथर नाइट के 29 (22) रनों ने इंग्लैंड को लड़ने लायक स्कोर तक पहुंचाया।

सोफिया और हीथर के बीच चौथे विकेट के लिए 55 रनों की साझेदारी के बाद, डैनी व्याट, ऐलिस कैप्सी और नेट साइवर-ब्रंट की मदद से एमी ने अपनी पारी के अंतिम दो ओवरों में इंग्लैंड के 31 रनों में से 29 रन बनाए, जिससे मेजबान टीम का स्कोर 150 के पार पहुंच गया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी ऑस्ट्रेलिया ने कप्तान एलिसा हीली (5) का विकेट जल्दी खो दिया, हालांकि मूनी और ताहलिया मैक्ग्रा (29 गेंदों पर 40) ने उन्हें आगे बढ़ाया। हालांकि ताहलिया एक्लेस्टोन (2-24) की बाएं हाथ की स्पिन का शिकार हो गयी, लेकिन एश्ले गार्डनर (23 गेंदों में 31 रन) ने सुनिश्चित किया कि गति में कोई कमी न आए।

टूर्नामेंट

विश्व कप से बाहर होने के बाद बोले जेसन होल्डर

'हमें एक क्षेत्र के रूप में साथ आना होगा'

एजेंसी। हरारे वेस्टइंडीज के हरफनमौला खिलाड़ी जेसन होल्डर ने साथी क्रिकेटरों से 'क्षेत्रीय' मानसिकता को छोड़ने और खेल की भलाई के लिए 'एक क्षेत्र के रूप में' साथ आने की अपील की। टीम के भारत में एकदिवसीय विश्व कप के लिए क्वालीफाई करने में विफल रहने के एक दिन बाद उन्होंने यह बयान दिया है। दो बार के पूर्व खिताब विजेता 1975 में प्रतियोगिता की शुरूआत के बाद पहली बार 50 ओवर के विश्व कप में भाग नहीं लेंगे। कैरेबियाई टीम शनिवार को यहां विश्व कप क्वालीफायर के सुपर सिक्स मैच में स्कॉटलैंड से 7 विकेट से हार के बाद बाहर हो गई। वेस्टइंडीज ने 181 रन बनाए और स्कॉटलैंड ने छह ओवर शेष रहते लक्ष्य हासिल कर लिया। मैच के बाद प्रैस कॉन्फ्रेंस में होल्डर ने कहा, 'यह (क्रिकेट) कोई व्यक्तिगत चीज या क्षेत्रीय चीज नहीं है। हमें एक क्षेत्र के रूप में एक साथ आना होगा... और वास्तव में सोचें कि हम एक समूह के रूप में कैसे आगे बढ़ना चाहते हैं और इसे साकार करना चाहते हैं।'

31 वर्षीय लंबे क्रिकेटर ने कहा कि उनकी टीम स्कॉटलैंड के खिलाफ मुकाबले के महत्व को जानती थी और उनके पास वास्तव में अच्छा

मौका था, लेकिन अंत में वह लक्ष्य पार नहीं कर सके। उन्होंने कहा, 'हम जानते थे कि क्या दांव पर लगा है और हमारे पास अभी भी क्वालीफाई करने का मौका था। हमारे पास स्कॉटलैंड से खेलने और उन्हें हराने का वास्तव में अच्छा मौका था (लेकिन) हमने ऐसा नहीं किया।' होल्डर ने कहा, 'यह शायद टीम के साथ मेरे सबसे कम अंकों में से एक है। लेकिन आप जानते हैं कि अभी भी बहुत सारी सकारात्मकताएं हैं। मैं निकोलस पूरन के लिए वास्तव में खुश था, जिस तरह से उन्होंने इस पूरी प्रतियोगिता में खेला। और यह देखकर अच्छा लगा कि कुछ युवा खिलाड़ियों को बड़े मंच पर मौका मिला।' वेस्टइंडीज के हरफनमौला खिलाड़ी ने कहा, 'यह कोई त्वरित समाधान नहीं है, यह कुछ ऐसा है जिस पर हमें समय बिताने की जरूरत है। जैसा कि मैंने कहा, विकास (जमीनी स्तर पर) सबसे महत्वपूर्ण चीज है, जहां हम बस चीजों को सही जगह पर रख सकते हैं और अपनी प्रतिभा विकसित कर सकते हैं। उम्मीद है कि अगले में कुछ वर्षों में हम उस फसल के फल देख सकते हैं।'

वेस्टइंडीज क्रिकेट विश्व कप की दौड़ से बाहर

दो बार का चैंपियन वेस्टइंडीज इस साल भारत में होने वाले विश?व कप की दौड़ से बाहर हो गया है। क्वालीफायर टूर्नामेंट के सुपर सिक्स चरण में शनिवार को हरारे स्पोर्ट्स क्लब मैदान में स्कॉटलैंड ने उसे सात विकेट से हराकर 2023 पुरुष एकदिवसीय विश्व कप के लिए क्वालीफाई करने की उसकी उम्मीदों पर पानी फेर दिया। वेस्टइंडीज 1975 और 1979 में विश्व कप के पहले दो संस्करणों का चैंपियन था और 1983 में फाइनल में भारत से हारकर उपविजेता रहा था। वनडे विश्व कप का 13 वां संस्करण 5 अक्टूबर से 19 नवंबर तक भारत में आयोजित किया जाएगा। यह पहली बार होगा जब वनडे विश्व कप में वेस्टइंडीज की टीम नहीं होगी। वेस्टइंडीज क्रिकेट की दयनीय स्थिति का क्रम लंबे समय से जारी है। वह होबार्ट में ग्रुप चरण में तीन में से केवल एक गेम जीतने के बाद ऑस्ट्रेलिया में 2022 पुरुष टी20 विश्व कप के सुपर 12 चरण में भी जगह नहीं बना सका था। वनडे विश्व कप क्वालिफायर में वेस्टइंडीज सुपर सिक्स चरण में शीर्ष दो में रहने और वनडे विश्व कप के लिए क्वालीफाई करने की बहुत कम संभावना के साथ आया था। ग्रुप चरण में जिम्बाब्वे और नीदरलैंड से हारने के बाद सुपर सिक्स में प्रवेश करते समय उसके खाते में कोई अंक नहीं था और क्वालीफिकेशन के लिए उसे अपने सभी तीन मैच जीतने थे। स्कॉटलैंड के खिलाफ करो या मरो के मैच में खराब बल्लेबाजी प्रदर्शन के कारण वेस्टइंडीज सिर्फ 181 रन पर आउट हो गया। स्कॉटलैंड ने 182 का लक्ष्य 39 गेंद शेष रहते बिना किसी परेशानी के हासिल कर लिया। मैथ्यू क्रॉस और ब्रैंडन मैकमुलेन ने स्कॉटलैंड के लिए 125 रन की मैच विजयी साझेदारी करते हुए अर्द्धशतक जमाए और विश्व कप के लिए क्वालीफाई करने की अपनी टीम की संभावनाओं को बनाए रखा।